बुलबुल

मैथिली कथा संग्रह



सुजीत कुमार झा

बुलबुल

कथा संग्रह

सुजीत कुमार झा

प्रकाशक
आफन्त नेपाल
जनकपुरधाम

बुलबुल
कथा संग्रह

कथाकार : सुजीत कुमार झा

संस्करण : पहिल

विक्रम सम्वत : २०७३

प्रति : १०००

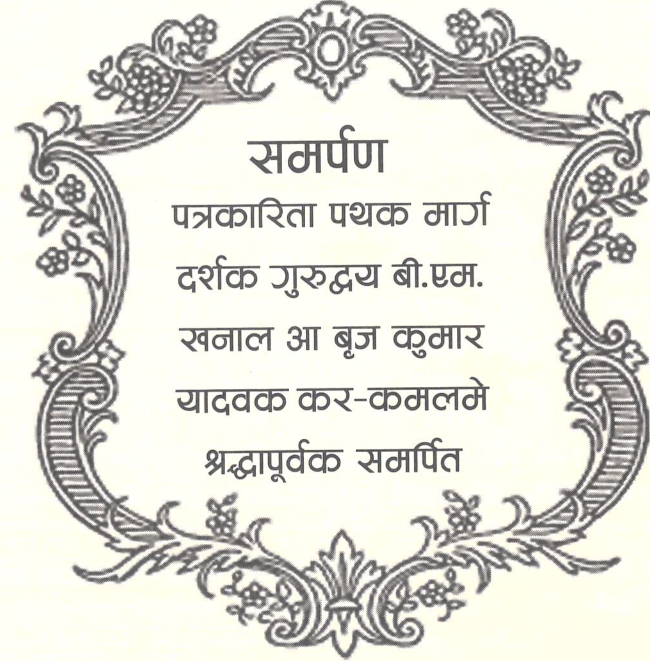
मोल : २०० ।- टका

प्रकाशक : आफन्त नेपाल, जनकपुरधाम

ISBN : 978-9937-0129-9-7

मुद्रक : हिसि अफसेट प्रिन्टर्स जमल, काठमाण्डू

BULBUL
A Collection of Maithili Stories
By : **SUJEET KUMAR JHA**



समर्पण

पत्रकारिता पथक मार्ग
दर्शक गुरुद्वय बी.एम.
खनाल आ बृज कुमार
यादवक कर-कमलमे
श्रद्धापूर्वक समर्पित

प्रकाशकीय

अरस्तु कहने छथि सभ मनुष्यक प्रगति दू बातपर निर्भर करैत अछि। पहिल अछि सही लक्ष्यके पसिन कएनाई। ओ प्रयोजन, जाहिके लेल प्रयाससभक दिशा निश्चित हुए आ दोसर अछि, प्रयाससभके खोजी कएनाई जे ओ प्रयोजनक दिस लऽ जाए।

जखन कोनो काज आगा बढ़बैत छी त ई सूत्रके आगा बढ़ाबहे पड़त। आफन्त नेपाल मैथिली पुस्तक प्रकाशनदिस आगा बढ़ल तऽ बहुत निराशाक बातसभ सुनएमे आएल छल। मुदा ओ निराशाक बातके हम प्रवाह नहि कएलहुँ। जकर प्रतिफल आफन्तद्वारा प्रकाशित सभ पुस्तक पाठकक दृष्टिसँ मात्र नहि व्यवसायिक दृष्टिसँ सेहो सफल रहल।

आफन्तक पुस्तक प्रकाशन यात्रा निरन्तर बढ़एमे मद्दत एकरे प्रतिफल अछि। फेरसँ नव पुस्तक अहूँमे कथा संग्रह लऽ कऽ आबि रहल छी। मैथिली साहित्यमे कथा सभसँ लोकप्रिय विद्या अछि, ककरो कहए नहि पड़त। फेर एकटा जानकारी कराबी जे पत्रकार एवं साहित्यकार सुजीत कुमार झासँग आफन्त नेपालक जे जोड़ी बनल से निरन्तर बनल अछि। ओ हमरसभक नियमित लेखक छथि। हुनक अन्य कृति जँका एकरो अपनेसभ पसिन आ सहयोग करबैक से विश्वास अछि।

अपनेसभक सहयोग आफन्त नेपालपर सेहो बनल रहत से विश्वास अछि। आफन्त मैथिली भाषा, साहित्य, संस्कृति, शिक्षा आ स्वास्थ्य क्षेत्रमे निरन्तर काज करैत रहत से जानकारी कराबए चाहैत छी। अन्तमे पुस्तकमे कोनो त्रुटी देखएमे आबए तऽ सूचीत करब से अपेक्षा अछि।

जयप्रकाश मण्डल
कार्यक्रम संयोजक
आफन्त नेपाल

अपन अनुभूति

✍डा.सुरेन्द्र लाभ

- सर्वप्रथम धन्यवादक पात्र छथि-सुजीत कुमार झाजी, जे एतेक तीव्रगतीसँ कथा लिखि रहल छथि आ' संग्रह पर संग्रह प्रकाशित कऽ रहल छथि।
- नवका संग्रह 'बुलबुलक' तेरहो कथा पढ़लँहु। मोनकँ छू लेलक।
- तँ कथा प्रसंगमे कोनहु शास्त्रीय गप्प नहि, मात्र कथासब पढ़ि लेलाकबाद जे अनुभूति भेल-सएह कहब।
- कथा आधुनिक साहित्यक अति महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय विद्या छैक-से बात कहबाह प्रयोजन नहि। सबगोटेंकँ बुझले अछि।
- कथामे जे तनाव होइत छैक, क्षण-क्षणक अभिव्यक्तिक जे दक्षता होइत छैक-से वात बुलबुल नामक एहि कथा संग्रहमे भेटि जायत।
- पहिल कथा-कठपुतलीकँ पढ़ियौक। कथानक टटका छैक। एकटा पागल प्रेमीक कथा छै। मुदा ई पागल प्रेमीक प्रेमिका छैक-नाटक। कथाक प्रारम्भ जतेक नीक छैक-मध्य ओहूँसँ नीक छैक। कथाक मध्य भागमे नाटक हलक बाहर दर्शकसभक बिचक संवादसब महानगरीय मनोविज्ञानक रेखाचित्र प्रस्तुत करैत आछि। कथाक अन्त विलक्षण छैक। भुख आ' आनन्द बिचक छनौट अदभुत दृश्य उपस्थित करैत अछि।
- दोसर कथा-बुलबुल छैक। अही कथाक नामपर संग्रहक नाम राखल गेल छैक-बुलबुल। अति हृदयस्पर्शी कथा सुजीतजी लिखने छथि। बुलबुल कथाक नायिका छैक, सड़क सफाई करएवाली, दलित, झगड़ालु। कथा नायक-पण्डित छैक, लेखक छैक। ई नायक नायिका प्रेमी प्रेमिका नहि अपितु नायकद्वारा 'बहिन' सम्बोधन कएला उपरान्त 'भाय-बहिन' छैक। आ विछोड़ कालमे उपहारक आदान-प्रदान आँखिकँ डबडबा दैत छैक।

- पति-पत्नि विचक छोटछिन जीद्द कथाक विषय-वस्तु भऽ सकैत अछि, तकर प्रमाण तेसर कथा 'खिड़की' मे भेटैत अछि। सामान्यतया पति-पत्निक अहँकारक कारणसँ आई बहुतोकँ जीवनमे ग्रहण लागि रहल अछि। खासकऽ ओहन दम्पतिक हेतु प्रस्तुत कथा प्रेरक भऽ सकैत अछि।
- चारिम कथा 'प्रिय सखी' अछि। प्रस्तुत कथा दाम्पत्यक परिभाषा खोजि रहल अछि। दाम्पत्य जीवनसँ सम्बन्धीत बहुतरास प्रश्नसब ठाढ़ करैत अछि-'प्रिय सखी'।
- 'मैडम चौधरी'-एहि संग्रहक पाँचम कथा थिक। मैथिली कथाक परम्परागत पृष्ठभूमि-गाम,घर, चौरी, चाँचरसँ उठि महानगरक नोकरी पेशा महिलाक अर्न्तकथा एहि कथाक कथावस्तु बनल अछि। कथा कतहुँ प्रश्न ठाढ़ करैछ -'समाजमे परिवर्तन कहाँ आएल अछि ? महिला कतए स्वतन्त्र अछि ?'
- प्रेम कथाक सिद्धहस्त कथाकार सुजीत जीक कलमसँ छठम कथा 'बदलैत मौसम' सम्प्रेषित भेल अछि। एम्हर प्रेम-सम्बन्धी दृष्टिकोणमे सेहो विविधता आएल अछि। सुजीत जी एहि धारक प्रतिनिधि कथाकारके रुपमे अपने-आपकँ ठाढ़ करबामे सफल भेलाह अछि। प्रस्तुत कथा प्रमाणित करैत अछि।
- 'क्यामिकल रिएक्सन'-सुजित जीक सातम कथा थीक। अहू कथामे नीक प्रेम कथा रेखांकित भेल अछि। एकठाम कथाक नायिका एकटा साश्वत प्रश्न ठाढ़ करैछ-'पुरुषकँ जाधरि सुविधा रहैत छैक परस्त्रीसँग सम्पर्क करैत छैक, सुविधा समाप्त सम्पर्क समाप्त।'
- समाज एखनहु कठोर छैक-खासकऽ महिला प्रति। ताहूमे महिला परित्यक्ता हो तखन तऽ ओकर दुर्गति छैक। इएह विषय वस्तु लऽ कऽ सुजीत जी-प्रस्तुत भेलाहा-'झिलमिला रहल नोर' नामक कथामे। घरेलु हिंसापर आधारित एहि कथामे पुरुष प्रधान समाजपर पैघ चोट मारल गेल छैक-'की एसगरि महिला सर्वसुलभ होइत छैक ?'
- एहि संग्रहक नवम कथा छैक-'छुट्टीक परिभाषा'। नोकरी पेशा पुरुषक व्यथा छैक एहि कथामे-छुट्टीक अर्थ पतिकँ हेतु अलग आ पत्नि हेतु अलग होइत छैक। एहि छोट-छिन विषयकँ एकटा कुशल शिल्पकार जकाँ

सुजीत जी 'छुट्टीक परिभाषा' कें गढ़लन्हि अछि। सामाजिक एवं पारिवारिक तनावक विखण्डन, नव परिवेशमे सुजीत नव तनावक ताण्डव, आक्रोस, अधिकार खोजिक चेतना आदि विविध आयामकें नीक जकाँ आत्मसात कएने छथि। तकर प्रमाण संग्रहक दशम कथामे भेटि जाएत। बापक नाम बेटीक प्रतिशोधपूर्ण चिठ्ठीक दोसर नमूना नहि भेटत। अहाँ कतबहुँ अहिंसाबादी छी, मुदा एहि कथामे प्रतिशोधक सँग रहि जाएब। कथाकारक कुशलताक बहुत पैघ मापदण्ड छैक ई।

- 'नव अध्याय' एहि संग्रहक एगारहम कथा थीक। स्वार्थी बेटासभक हेतु बहुत पैघ सन्देश छैक एहि कथामे। बेटासब द्वारा तिरष्कृत आ उपेक्षित भेलापर बृद्ध माय अपना 'घरकें' स्वार्थी बेटा सबके नहि दऽ बृद्धाश्रममे दान दैछ। एकटा मर्मस्पर्शी कथाक रुपमे 'नव अध्याय' कें जानल जाएत।
- बारहम कथा थीक -'मीठ-मीठ बात'। छै तऽ इहो प्रेमे कथा, मुदा नव शैली, नव दृष्टिकोण छैक एहिमे। मिथिलाक जीवनशैली बदलि रहल छैक- तकर आभास भेटत एहि कथामे। वासनासँ उपर प्रेम होइत छैक-से बात एहि कथामे प्रमाणिकरण भेल अछि।
- तेरहम कथा 'संसार मुठ्ठीमे' अदभुत अछि। रुचिगर अछि। कथा किछु पैघ होइतहुँ अहाँकें अगुतएवाक अवसर नहि भेटत। अन्तधरि अहाँ कथाक सँग सटल रहब। बुद्धिजीवी मोवाइल आ पुलिसक चक्कर-इएह किछु विन्दुसब छैक एहि कथाक। नीक जकाँ वुनल गेल कथा थीक-संसार मुठ्ठीमे।
- संग्रहक खास विशेषता-सरल भाषा, कथाक आकार उपयुक्त, महिला अधिकारक वकालत, सामाजिक विडम्वनापर चोट, सन्देश मुलक, रुचिगर, पठनिय एवं संग्रहणीय।
- अन्तमे सुजीत कुमार झा जी आव नव कथाकार नहि, अपितु माजल कथाकार, शिल्पकार, कलाकार, साहित्यकारक रुपमे एहि संग्रहकसँग उदीत भेलाह, से जनतब दैत बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामना।

निहारिका निलय, धनुषापथ
जनकपुरधाम

मस्तिष्कसँ हृदयधरि

✍तीर्थ कोइराला

सुजीत कुमार झा हमर डेढ़ दशक पहिनेसँ मित्र छथि। कतेको खुसी आ दुःख दूनु गोटे एक दोसरसँ आदानप्रदान कएने छी। पेशासँ दूनु पत्रकार भेलासँ रोजगारी आ पेशाक सम्बन्धमे सेहो बात करैत आएल छी। भेटि छोटछीन भेलाकबादो फोनेके माध्यमसँ एक दोसरके सम्बन्धमे जानकारी लैत आएल छी। ई मित्रताक बाट बना देबएबला आ हमरा दूनु गोटेकबीचमे चिन्हजान कराबएबला मित्र रमेशरञ्जन झाके एहि समयमे हम स्मरण नहि करब तऽ ई मित्रता सेहो अधुरा हएत। जे होउक, हम कहए एतबे चाहने छी जे एहिके सर्जक सुजीत झा हमर पुरान अन्तरंग मित्र छथि।

एतेक भेलाकबादो हम हुनकासँ पैघ धोखा पौलहुँ। अहुमे मित्रताक पन्द्रह वर्ष बितएलाकबाद मात्र बुझलहुँ। ओहो एकहिबेर भूमिका लिखि देबए आग्रहके सँग रचनाक ठेली पौलाकबाद। एहिमे हमर कोनो उपराग नहि अछि। बरु ई रहस्य सरह बनि कऽ रहल बातसँ हमरा, हमर सूचना संयन्त्र सुधार करए पड़त से शिक्षा देलक अछि , ज्ञान देने अछि। किए तऽ, सुजीतक सिर्जनाक थैली इमेलसँ पौलाकबाद एम्हर ओम्हर बुझलहूँ तहन मात्र पत्ता चलल जे ई तऽ हमरा लेल मात्र रहस्य छल। मिथिलाञ्चलक उद्‌यमान साहित्यकारक रुपमे सुजीतक नाम दर्ता भेल बहुतो समय भऽ चुकल अछि। कहुना प्राप्त भेलाकबाद सुजीतक ई सिर्जनासँ हम बहुत प्रसन्न छी। किएक तऽ हमहु कोनो समयमे कविता आ व्यंग्य लिखैत छलहुँ आ साहित्यक किताब नित्य दिन

पढ़ैत छलहुँ । एखन ओ क्रम टुटि गेल अछि, मुदा स्नेह आ मोह अन्तस्करणमे एखनो बाँकीए अछि आ कहुना कऽ समय निकालि कऽ अपन लेखनक समय-समयमे निरन्तरता देबएमे प्रयासरत रहैत छी, अपने सन्तुष्टीक लेल ।

एहिबेर सुजीतक ई रचना हमरा हुनका सम्बन्धमे किछु नव परिचय देलक आ ओहि परिचयसँ हमरा प्रसन्नता आ सन्तुष्टी सेहो भेटल अछि । किए तऽ हमर विश्वास ई अछि जे पत्रकारसभ लिखने अक्षरसँ बेसी साहित्यकारक अक्षरके आयु लम्बा होइत अछि, पत्रकारके शब्द मस्तिष्कमे जगह पबैत अछि आ कवि कथाकार अर्थात साहित्यकारक शब्दसभ व्यक्तिक हृदयमे स्थान बनवैत अछि । ई कृति मैथिलीक पाठकके मस्तिष्कमे मात्र नहि सुजीत अपने हुनकसभक हृदयमे प्रवेश पौने हम मानैत छी ।

मैथिलीक पाठक नहि मुदा , श्रोता जरुर छी । मुदा एहिमे समावेश भेल रचना हमरा पढ़ही पड़बाक बाध्यतामे आनि देलक, पढ़लहुँ चारि कक्षाक धियापुतासभ अंग्रेजी पढ़ए जँका । बुझएमे समस्या नहि भेल । कहबाक अर्थ ई अछि जे एहिके कथासभ सहज भाषामे लिखल अछि, हम मात्र नहि किओ बुझि सकताह ।

कथामे पुरान समाजक जीवन शैलीसँ आधुनिक साइबर जगत सेहो समटए सकनाई रचनाकारक खुबी मानि सकैत छी । एहिमे पुस्ता अन्तरमे देखल जाएबला द्वन्द्व, आधुनिक जीवनक समस्या आ पुरान पुस्ताक मनोभावके समटल गेल हम पएलहुँ । एहिमे पैघ क्रान्ति नहि अछि मुदा समाजक सकारात्मक परिवर्तनक लेल विषय आ प्रश्नसभ राखलगेल अछि, कतेक प्रश्नक जबाव पात्रसभक माध्यमसँ देलगेल अछि तऽ कतेको प्रश्नक जबाव ताकए पाठक समाजमे जाए पड़त । एहि कृतिक रचनासभमे मानवीय आवेग, संवेग, मनोभाव आ सामाजिक बन्धन तथा आधुनिक परिवेशके जेना परसल गेल अछि ओ ईएह

समाजक ऐना अछि, से हम मानैत छी । एना एहि अर्थमे जे हम अहाँ ऐना देखैत छी आ बिहुँस दैत छी, अपनामे कोनो गल्ती अछि कि से कहि कऽ निहारैत छी । यदी गल्ती भेटैया तऽ ओहिके सुधारैत आगा बढ़ैत छी । सुजीतक कथासभ बदलैत मौसम, मिठमिठ बात, नवअध्याय, मैडम चौधरी सहित सभ रचना अपनसभक समाजके प्रसन्नता पूर्वक आगा बढ़ए प्रेरित करत । ईएह मात्र नहि आओर रचनासभ सेहो ओतबे रमणगर अछि । एकबेर किताब लऽ कऽ बैसब तऽ दोसर बेरके लेल बाँकी राखएके बाध्यता नहि रहत से हमर विश्वास अछि । ई सभ बढ़िया पक्ष अछि , कमीकमजोरी समालोचक समयमे निकालत आ निकालएके आवश्यकता सेहो अछि जाहिसँ रचनाकारके आओर सशक्त लेखक बनाओत ।

एहि सँगहि हम आश कएने छी जे सुजीत एहिसँ प्राप्त होबएबला प्रोत्साहनसँ आओर परिष्कृत आ गहन साहित्य रचना करताह । सुजीतक कलम पत्रकारितामे मात्र नहि, साहित्य सिर्जनामे सेहो निरन्तर चलैत रहत ।

वरिष्ठ पत्रकार, काठमाण्डू

हमरो बात

✍सुजीत कुमार झा

हमर लेखन यात्रा बहुत लम्बा दूरी पार नहि कएलक अछि। किछु बर्षसँ लिखि रहल छी, किछु किताब निकलि गेल, बस एतबे। एकरा हम बहुत बड़का उपलब्धि नहि मानैत छी। मैथिली संसारमे जाहि रुपसँ पुस्तक प्रकाशन होएबाक चाही से नहि भऽ रहल अछि। एहिमे आओर गति देबाक आवश्यकता अछि।

एक दू बर्षमे ६ टा पुस्तक हमर निकललाक बाद किछु गोटे गतिके थोरे मधिम करबाक सलाह देलन्हि। ओहे सलाहक प्रतिफल अछि जे एक बर्ष बाद पुस्तक लऽ कऽ एलहुँ अछि। ओना, कोनो नहि कोनो रुपसँ लेखन काजसँ सक्रिय छिहे। पत्रकारिताक पृष्ठभूमिक भेलाक कारण प्रत्येक दिन दू चारिटा समाचार नहि लिखलहुँ तऽ कब्जियत जँका बुझाइत रहैत अछि। अर्थात लेखन जीवन अछि। जीवन अन्त भेलाक बादे ई यात्रा सायद रुकत।

एहिबेर फेर कथे संग्रह लऽ कऽ आएल छी। कथाक दृष्टिसँ हमर ई छठम् पुस्तक अछि। एहिसँ पहिने चिड़ै, जिद्दी, कोइली घूरि आउ, गन्ध आ खजुरीबाली कथा संग्रह प्रकाशित अछि। रिपोर्टर डायरी नामसँ रिपोताजक संग्रह सेहो निकलल अछि।

किछु लिखलहुँ, किछु मित्र एवं अभिभावकसभ आशिर्वाद आ प्रोत्साहन देलन्हि फेर पुस्तक निकलएके तैयारी शुरु भऽ जाइत अछि। अहुबेर करिब-करिब एहने स्थिति भेल अछि। किछु लोक कहैत छथि मैथिलीमे प्रकाशक नहि भेटैत अछि मुदा हमरा लेल एहन समस्या देखएमे नहि

आएल। एकटा कथा संग्रह निकालएके सोचमे छी, एक दू गोटे मित्र लग बजलहुँ नहि कि आफन्त नेपाल प्रकाशनक जिम्मेवारी लऽ लेलक। हमरा सातटा पुस्तकसँग करिब-करिब एहने स्थिति भेल अछि। हमर सभ पुस्तक प्रकाशनमे सहयोग करएबला ओ प्रकाशन संस्थासभके प्रति आभार व्यक्त करही पड़त।

मैथिलीमे पुस्तक निकालब चुनौती अवश्य छैक। ओना आफन्त नेपालक कार्यक्रम संयोजक जयप्रकाश मण्डल बेर-बेर कहैत छथि चुनौतीके स्वीकार करब, तखने चुनौती भेल। ओकरासँ सामना करए पड़ैत छैक। हुनकर ई शब्द प्रेरणाक काज करैत रहैत अछि।

एहि पुस्तक निकालएमे आन पुस्तकेजँका किछु मित्र एवं अग्रज आ भाईसभके महत्वपूर्ण योगदान रहल अछि। अधिकांश कथाके टाइप जयन्त ठाकुर, राम एकवाल महरा, सुधिरचन्द्र आचार्य आ नेहा झा कएलन्हि अछि। हुनका चारु गोटेके हृदयसँ धन्यवाद। अहुबेर आवरण सज्जा बनाबएबला कैलास दासके धन्यवाद देने बिना आगा नहि बढ़ल जा सकैत अछि। एकर अतिरिक्त एहि पुस्तकके भूमिका लिखएबला डा. सुरेन्द्र लाभ, नेपालक बरिष्ठ पत्रकार तीर्थ कोइराला आ दरभंगाक साहित्यकार चन्द्रमोहन झा पड़वाप्रति हृदयसँ आभार व्यक्त करैत छी। बरिष्ठ साहित्यकार डा. राजेन्द्र विमल, डा. भोगेन्द्र झा, समाजसेवी अमरचन्द्र अनिल, चर्चित गीतकार अशोक दत्त, रामानन्द युवा क्लबक पूर्व अध्यक्ष जीवनाथ चौधरी, राम युवा कमिटीक पूर्व अध्यक्षद्वय सोहन ठाकुर, प्रमोद चौधरी, नेपाल पत्रकार महासंघ धनुषाक पूर्व अध्यक्ष रामअशिष यादव, पत्रकार राजेश कुमार कर्ण हमर प्रेरणाक स्रोत सभ दिन रहलथि अछि। हुनका सभके प्रति श्रद्धा व्यक्त करैत छी।

एहि संगहि राम युवा कमिटीक अध्यक्ष शम्भु प्रसाद शाह 'प्रेमी', जनकपुर होटल व्यवसायी संघक अध्यक्ष दशरथ साह, नेपाली कांग्रेस धनुषाक सचिव कोमलकान्त झा, युवा नेता परमेश्वर साह, शिक्षक

नेता विजय चौधरी, कवि काशीकान्त झा, मित्र राधारमण साह 'रवि', पत्रकार भाई संजिब कुमार झा, आफन्त नेपालक उपाध्यक्ष प्रदीप मरबैता यादव, विष्णु यादव सहित दर्जनो व्यक्तिके पुस्तक निकालएमे महत्वपूर्ण योगदान रहलन्हि अछि।

पुस्तकक कभरपर अपन फोटो दऽ कऽ बहुत बड़का सहयोग कऽ देबाक लेल कलाकार प्रेरणा मिश्रके सेहो बहुत-बहुत धन्यवाद। ओ फोटोके लेल सहयोग कएनिहार प्रेरणाक पिता एवं रामानन्द युवा क्लवक पूर्व अध्यक्ष नविन कुमार मिश्रके सेहो अभार व्यक्त करैत छी।

अन्तमे अपनेसभक आशिर्वाद अहिना भेटैत रहए।

sujitjha100.80@gmail.com

विषय सूची

कठपुतली

पाँचे बजे ओ नाटक घर पहुँच गेल छल । ओना शो ७ बजेसँ छल, मुदा ओकरा चयन कहाँ छलैक ? आजुक दिनकेँ ओ बहुत व्यग्रतासँ बितल एक हप्तासँ प्रतीक्षा कऽ रहल छल । कोना ओ ई एक सय टका बचौने छल, ओ ओहे जनैत अछि । पाँच बाजि गेल छल, जँ यदि भीड़ बेसीओ हएत तऽ टिकट आरामसँ भेटि सकैत अछि ।

ब्रह्मा भाइकेँ ओ कहि देने छल, आई नाटक देखए जएबाक अछि, जल्दि जा रहल छी । ओतए पहुँच कऽ बिल्कुल एना लगैत अछि, जेना सपनाक संसारमे आबि गेल होइक । चारुदिस नाटककेँ पोष्टर आ सभ्रान्त व्यक्तिसभक भीड़ । काठमाण्डूक अन्य नाटक घर चलि जाउ वा इम्हर नाच घरमे जाउ । चारुदिस ओहेसभ देखाइ दैत छथि, जेकरासँ ओकरा प्रेरणा भेटैत हुए । प्रत्येक क्षण नाटकमे डुबल, रंगमंचक बात करैत लोक । एहने वातावरण, ओ चाहैत छल । अपन शहरमे ओकरा ई सभ नहि भेटि पाबि रहल छल । इहए माहोल जेकरा लेल, अपन घरसँ एतेक दूर एतेक पैघ शहरमे आएल छल ।

हँ, ओतउ कहिओ-कहिओ नाटक होइत छल । कोनो संस्थाक वार्षिक उत्सव वा कोनो मेला भेल जेना दुर्गा पूजा, छठि, होरी, गणेश पूजा

सभमे नाटक मंचित होइत छल । ओहिमे टिकट नहि लगैत छल । ओ हरेकराति अबेरधरि बैसि कऽ पूरे मंचन देखैत रहैत छल । ओतए एहन रंगशाला नहि छल । खाली स्थानपर मंच बना कऽ नाटक होइत छल । रातिमे जखन घरमे भोजन बनावएकैं समय होइत छल तऽ नाटक स्थलपर लोकक भीड़ बढ़ि जाइत छल, जाहिमे बच्चा बेसी होइत छल । कारण ओकरा इहे बुझएमे अबैत छल, भोजन बनावएमे जखन बच्चा माँकैं परेशान करैत हएत तऽ माँ कहैत हएत, 'जो बेटा मुन्ना, जनक चौकपर नाटक देखि कऽ आ, तखनधरि हम भोजन बना लैत छी । एतए रहबे तऽ मुन्नीसँ झगड़ा होइत रहतउ ।'

महिलासभ अपन पतिसँ कहैत हएत, 'अहाँ हमरा आरामसँ भोजन बनावए दिअ ताबैतधरि मिश्रा जीकैं लऽ कऽ नाटक देखि आउ । भोजन बनलाक बाद टिंकुकैं पठा कऽ बजा लेब ।'

ओहिठाम हल नहि भेलाक कारण जखन मोन होइत छल, लोक अबैत छल आ जखन मोन होइत छल चलि जाइत छल । मंचक आगामे बच्चासभ रहैत छल आ पाछु बड़कासभ । किओ लगातार पाँच मिनेट मुँह बन्द कऽ कऽ नहि बैसैत छल । बीच-बीचमे लोक सीटी सेहो बजवैत रहैत छल । खास कऽ कऽ मंचपर कोनो सुन्दर लड़की अबैत छल आ ताली नहि बजएबला स्थानपर सेहो अपना शहरक प्रसिद्ध मस्तीकैं उदाहरण दैत एतेक एकतासँ एतेककाल ताली बजबैत रहैत छल, एक दू लाइन संवाद सुनाइ देब आसान नहि होइत छल ।

दर्शकमे किशोर लड़कीकैं होवएकैं सम्भावना सेहो होइत छल । एहि सम्भावनाकैं नजरअन्दाज नहि करैत किछु स्थानीय स्कुलक किशोरसभ सम्भावनाकैं खोजीमे ओहिठाम चलि अबैत छल, नवका सुन्दर सर्ट आ टमाटर कट जेहन क्रिज लागल पेन्ट लोककैं आकर्षित करैत छल ।

किछु गिन्तीकैं दर्शक होइत छल, नाटककैं नाटक जकाँ देखैत छल । बाँकी मात्र टाइम पास करबाक लेल अबैत छल । ओकरा कहिओकाल

कऽ बहुत तामस होइत छल, ई नाटक संस्था जे एतेक दूरसँ अबैत अछि कि सोचत हमरा शहरक विषयमे ? कि ओ इहे शहर अछि, देशकैं बड़का-बड़का नाटककार रमेश रञ्जन, अवधेश पोखरेल जेहनकैं जन्म देने अछि । मैथिलीक शेक्सपीयर महेन्द्र मलंगियाक कर्मभूमि रहल अछि । जिनकर लिखल नाटकक मंचन आइयो देशक विभिन्न स्थानपर होइत अछि ।

किछुदेरमे लोकक भीड़ जम्मा होबए लागल छल । हरेकदिस पढ़ल लिखल आ सम्भ्रान्त लोकक झुण्ड देखाइ दऽ रहल छल । सुन्दर-सुन्दर कार वा अन्य गाड़ीमे बैसि कऽ महिला पुरुष आ स्मार्ट युवा जिनका आगा सम्भावना बहुत सागर लहरा रहल छल, मात्र नाटक देखबाक लेल अपन समय निकालि कऽ आएल छल । सभकैं दिस देखि कऽ लगैत छल, सभ मात्र नाटक आ सबाना आजमीक विषयमे बात कऽ रहल अछि ।

एकटा सपनाकैं सत्य होएबाक जेहन सभ किछु, ओकरा लेल रंगमंचक बहुत बड़का कलाकार, ओकर प्रिय अभिनेत्री आई आँखिक सोझा अभिनय करतीह । एतए सहीमे सम्मान होइत अछि, नाटक आ अभिनेताकैं । ओतए शहरमे मित्रसभ मात्र एहिबातपर ओकर मजाक उड़ौने छल, ओ आन्हर लड़काद्वारा प्रस्तुत नाटक देखए चलि गेल छल ।

'तऽ कि तोसभ मात्र लड़कीएकैं देखए जाइत छिही ? नाटक बढ़िया हुए वा खराब, अभिनय कोन स्तरक अछि, प्रकाश, मंच, संगीत केहन अछि, एहिमे तोरासभकैं कोनो फरक नहि पड़ैत छौक ?' पूरा बहसकैं बाद सहीमे चौकएबला बात ओकरा पत्ता चलल छल ।

उत्तरमे सभ एकहिसँग हँसि देने छल । ओकरा अपना संगतिपर दया आएल । स्नातकक परीक्षा समाप्त होइते ओ काठमाण्डू चलि आएल । ओतए ओहुँना ओकरा लेल किछु नहि बचल छल । बाबूजीसँ ओकर अल्पसंवाद, जे प्रारम्भेसँ औपचारिक रहल, आब नाटकप्रति बढ़ल

सखक कारण समाप्त जकाँ भऽ गेल छल। माँ बड़का भाईजीक तलब, हुनक विवाह जेहन समस्यामे फसल छलीह।

एतए आकांक्षाक जहाजपर बैसि कऽ आएल ओ ओहि समय पूरापूर निराश भऽ गेल, जखन ओ छोटका-बड़का, धनी-गरीबसभकेँ भागैत देखलक। एहि अन्हरदौड़मे, जतए ओकरा स्वयं नहि पत्ता छल कोन मूल्यपर कि पाबएकेँ लेल दौड़ रहल छी ? ओ एकटा गोल परिधिमे भगैत लोककेँ देखलक, जे भागि कऽ हरेक साँझ ओहि बिन्दुपर आबि जाइत अछि, जतएसँ भोरमे भागब शुरु कएने छल। जीवनक एकदिन निकलि जएबाक अनुभवो नहि होइत छल आ दोसर दिन भागब शुरु कऽ दैत छल। ओ बुझि गेल, एतए स्थान बनाएब ओतेक आसान नहि अछि, जतेक ओ बुझैत छल।

नाटककेँ आनन्द उठावएकेँ लेल जीबित रहब आवश्यक अछि, जीबित रहबाक लेल किछु खाएब, किछु खएबाक लेल कमाएब सेहो। ओ एकटा कुरीयर कम्पनीमे काज करब शुरु कऽ देलक। ओना बीना मोटरसाइकिलकेँ काज भेटएमे बहुत दिक्कत भेल आ करएमे सेहो बहुत दिक्कत। मुदा भीतरक एकटा अभिलाषा ओकरा हरेक समय सक्रिय रखैत छल।

चाहैत तऽ काठमाण्डूक कोनो करकुटुम्ब वा मित्रसँ उधार वा किछु मद्दत लऽ सकैत छल मुदा अपना भीतरक आगि आ स्वाभिमान ओकरा असगरे सपनाक देबालपर अपन पसीनाक प्लाष्टर करएमे लगौने छल।

किछु समयक बाद ओ एकटा नाट्य संस्था ज्वाइन कऽ लेलक, जतए साँझ कऽ दू तीन घण्टा रिहर्सलमे समय देवए पड़ैत छल। निर्देशक जे ओहि नाट्य संस्थाक मालिक रहथि, ओकरासँ एक हजार टाका फि सेहो लैत छल जे बादमे ओकरा व्यर्थ लागए लागल छल। तीनटा नाटकक अनुभव बतौलाक बादो निर्देशक ओकरा मंच सज्जाक काजमे लगौने छल आ एतेक दिन बितलाक बादो एखनधरि ओ वएह कऽ रहल छल।

मुदा पात्रकेँ संवाद बजबाक ढंङ्गसँ ओहि संस्थाकेँ पूरा स्तर बुझएमे चलि अबैत छल। सदस्यसभ कतेको क्षेत्रकेँ छल ओकर संवाद बजबाक कलासँ आँखि बन्द कऽ कऽ सेहो पत्ता लागि जाति छल, कोन मातृभाषा बाजएबला लोक अछि। धीरे-धीरे ओ ओतए जाएब छोड़ि देलक आ कोनो योग्य निर्देशक आ नाट्य संस्थाकेँ खोजी करए लागल।

आब दिनभरि ओ अपन काज करैत छल आ साँझमे अफिसमे जानकारी करा काठमाण्डूक नाट्य संस्थामे साटल निर्देशकक फोन नम्बर नोट करए लगैत छल। फेर प्लान करए, काजक बोझ कम आ पैसाक आम्दानी बढ़लाक बाद कोनो बढ़िया नाट्य संस्थामे जुड़ि कऽ अभिनय करब। तखनधरि नाटकसँ जुड़ल रहबाक तरिका ओकरा नाटक देखए आ ओहिसँ जुड़ल साहित्य पढ़एकेँ लेल बाध्य कएने छल।

धीर-धीरे बहुत लोक जम्मा भऽ चुकल छल। ओसभ अपन मित्रक सँग छोट-छोट समूह बना कऽ बातचित कऽ रहल छल। ओकरा अनुभव भेल, कतेक मोनसँ ओ नाटककेँ पोष्टर देखि रहल अछि आ कतेक भक्तिभावसँ नाटकक विषयमे बात कऽ रहल अछि। मुदा ओतए बाबूजी ई कहैत छलथि, 'झूठफूसकेँ कलाकारसभ इम्हर ओम्हर नचैत रहैत अछि। कोनो नीक घरक लोक थोरहे रहैत अछि .....।'

ओना ओकर कम तलबमे हरेक नाटक देखि पाबि सम्भव नहि छल, मुदा ओ नाटक अवश्य देखैत छल, जकर टिकटक मोल कम रहैत छल। २५/३० सँ बेसीकेँ नहि टिकट होइत छल तऽ पैसाक कमीक कारणसँ ओकरा कतेको पसीनक निर्देशककेँ नाटक छोड़ि देबए पड़ैत छल, जकर पूर्ति ओ ओकर समीक्षा पढ़ि कऽ करैत छल।

जीवन एखन बहुत कठिनसँ चलि रहल छल। ई एक सय रुपैया जुटावएकेँ लेल बितल एक हप्तासँ एकहुँ कप चाह नहि पिलक अछि। मुड फ्रेस करबाक लेल चाह बहुत आवश्यक अछि। जतेक जल्दि एकर आदत छुटि जाइ ओतेक बढ़िया हएत। ओना चाह, कनी मनी भुख सेहो

मारैत अछि। ओना कनी मनी भुख ओकरा लागि रहल छल, एतेक बढ़िया माहोलमे एतेक बड़का अभिनेत्रीक नाटक देखबाक उत्साह ओहि भुखपर हाबी भऽ गेल छल।

ओ प्रसन्न छल आ पहिलबेर एक सय टकाक टिकट किनएकेँ लऽ कऽ एकदम गम्भीर सेहो। जेबमे किछु खुद्रा पैसा सेहो छल, बसक टिकटमे काज आवएबला छल। टिकट यदि पचासकेँ भेल तऽ आओर मजा आएत। नाटको देखि लेब आ भरि पेट मःमः सेहो खा लेब। पचास रुपैया तऽ चारि पाँचदिन चलिए जाएत, एकरबाद तलब सेहो भेटत। ई तऽ सोचने छल, जे ई नाटक देखि लेब यदि पैसा बचल तऽ रातिमे खाएब। ब्रह्मा भाईकेँ कहि देने छल, 'एहिबेर तलब समयपर चाही।'

ब्रह्मा भाई ओहि कुरीयर कम्पनीक मालिक रहथि, जाहिमे ओ काज करैत छल। ओ देखएमे लगैत छला जे ओ, कुरीयर कम्पनी चलावएकेँ लेल एहि पृथ्वी पर जन्म लेने छथि। छोट कद, दूरधरि निकलल पेट, बड़काटाकेँ माथ जाहिपर बचल केशकेँ रंगएकेँ चक्करमे अपन चानि रंगि लैत रहथि। ढिलढालबला कपड़ामे ओ एकटा इन्ट्रेस्टेड पार्सल लगैत रहथि। मुदा ओ हृदयक बहुत बढ़िया लोक रहथि आ ओकर नाटक प्रेमक कारण अफिससँ कनिक जल्दि निकलि जएबाक आदेश दऽ दैत रहथि। ओ बिजनेसमैन भेलाक बादो एकटा कलाप्रेमी रहथि। अपन क्याम्पसक समयमे नाटकमे हिरो बनैत छला। ओ ब्रह्मा भाईसँ एक-दूबेर मजाकेमे सही, नाटक देखए चलबाक लेल आग्रह कएने छल। मुदा हुनक कहब रहन्हि, 'पूरे संसारे एकटा रंगमंच अछि आ हमसभ कठपुतली छी।'

ओ एहि संसारक नाटककेँ बहुत नजदिकसँ देखने रहथि एहिद्वारे एहि नाटकमे हुनक मोन नहि लगैत छल। ओकरा नाटकक विषयमे बात कएला पर ब्रह्मा भाई ई बात बराबर दोहरबैत छलथि आ बादमे इहो अवश्य जोड़ि दैत छलथि, युवा अवस्थामे ओ बहुत रसीक आ कलाप्रेमी रहथि।

आई ओकराद्वारा सबाना आजमीक चर्चा करिते, ओकरा तुरुन्त छुट्टी दऽ देने रहथि। एहि रहस्यकेँ खुलासो कएलन्हि, 'युवा अवस्थामे ओ सबाना आजमीकेँ बहुत बड़का फ्यान छलथि।'

ओ टिकट खिड़कीकेँ खुलबाक प्रतीक्षा कऽ रहल छल। एखनधरि तऽ खुलि जएबाक चाही छल। प्रायः ७ बजेक शो केँ लेल ६ बजे खिड़की खुलि जएबाक चाही। मुदा ६ सँ उपर भेलाक बादो खिड़की नहि खुजल छल। बन्द खिड़कीक भीतर एक गोटेकेँ किछु कागजपत्र सम्हारिकऽ लऽ जाइत, ओ देखलक।

'सुन्नुस दाई (सुनू भाईजी)...... ।'

'भन भाई (हँ कहुँ)।'

'यो टिकट खिड़की अहिलेसम्म बन्द किन रहेको छ ? टिकट कुन बेला देखि काटिन्छ ? (ई टिकट खिड़की कखनधरि बन्द रहत ? टिकट कखनसँ कटत ?'

'टिकट....? कुन टिकट ? (टिकट ....?कोन टिकट ?)'

'यो नाटकको टिकट.....(ई नाटककेँ टिकट)'

'टिकट छैन ?(टिकट नहि अछि ?) पासबाट एन्ट्री रहेको छ। (पाससँ एन्ट्री रहल अछि।)'

'पाससँ....? कसरी भेटाउँछ (पाससँ....? कोना भेटत।)' ओ आश्‍चर्यमे छल, ओकरा पत्ते नहि चलल छल।

'अब भेटाउँदैन जसलाई भेटनु थियो, त्यसलाई भेटाइहाल्यो। (आब नहि भेटत। जकरा भेटबाक छल, ओकरा भेटि गेल अछि।)' ओ तमसाइत बाजल।

'इम्हर तऽ कतहुँ नहि लिखल अछि, टिकट पाससँ देल जाए।' कहैत ओ आगा बढ़ि गेल।

एहि विषयमे सोचबे नहि कएने छल। ओ ध्यान देलक जतेक लोक भीतर जा रहल अछि सभक हातमे लाल कार्ड अछि, एहिद्वारे खिड़की

एखनधरि नहि खुजल अछि। तऽ ओ बाहर आबिकऽ चबुतरापर बैसि गेल। पूरे शरीर भीतरसँ एकटा अप्रत्याशित झटकासँ काँपि रहल छल। एकटा सुन्दर सपना पूरा होइत-होइत रहि गेल।

सबानाकेँ नजदिकसँ देखबाक एतेक सुन्दर अवसर हातसँ जा रहल छल। एतेक सुन्दर सपना जे एतेक आसानीसँ पूरा होबएबला छल, से टूटि रहल छल।

एकक्षणक लेल ओकरा लागल, चलु कोनो बात नहि। एतए तऽ ओहिना बड़का-बड़का कलाकार अबैत रहैत अछि, जाहिमे बलिउडक सेहो। आई नहि तऽ आओरो कोनो दिन सही। मुदा फेर एकटा साधारण महानगरीय कलाप्रेमी एकटा छोटका शहरक असाधारण कला प्रेमीपर हाबी भऽ गेल, जेकरा लेल अपन आदर्श अभिनेत्रीपर साक्षात अभिनय देखब एकटा छोटछिन घटना नहि छल।

एकटा अन्तिम प्रयास करैत छी, सोचैत आगा बढ़ल। ओ गेटपर ठाढ़ भऽ कऽ प्रवेश करएबला लोकसँ पुछए लागल, 'हेल्लो सर, अपने लग अतिरिक्त पास अछि ?'

'नो साँरी।'

'हेल्लो सर, डू यू हएब एनी एक्स्ट्रा पास ?'

'साँरी यंग मेन।'

'सर, अपने लग पास अछि.....?'

'साँरी।'

'सर, आई निड अ.... ।'

'साँरी।'

'सर, इफ यू...... ।'

'साँरी, आई डन्ट हएब ..... ।'

हरेक उत्तरक सँग ओ आओर निराश होइत चलि गेल। एकटा १८/१९ बर्षक लड़का ओकर गतिविधिकेँ ध्यानसँ देखि रहल छल। ओ

उदास आ निरास टहलैत एकटा समूह लग जा कऽ ठाढ़ भऽ गेल जाहिमे तीनटा सुन्दर लड़की आ दूटा स्मार्ट देखएबला आपसमे बात कऽ रहल छल। ओ उदास मोनसँ ठाढ़ भऽ कऽ बोर्डकेँ देखि रहल छल, जाहिपर नाटककेँ परिचय लिखल छल। लड़का-लड़की अपना बातमे डूबल छल। ओ ओकरसभक बातकेँ सुनएकेँ प्रयास सेहो कऽ रहल छल, सायद सबानाकेँ आगुकेँ कार्यक्रमक विषयमे किछु पत्ता चलए।

'ह्वाट दिस प्ले इज अल अबाउट ?' नम्हर केश आ कानमे बाली पहिरने लड़का बाजल।

'आइ डाँट नो एक्जैक्टली, थिंक बेस्ट अन सम स्टोरीज,' उज्जर कुर्ता बाली लड़की बजलीह।

'मुदा रवि, एतेक भीड़ किए अछि आई ?' लाल टिसर्टबाली लड़की पुछलीह जिनकर टिसर्टक फैलाव हुनक देहक फैलावट आगा कम क्षमताबला साबित भऽ रहल छल।

'मित्र, सबाना हएज कम फार दिस शो,' उज्जर कुर्ताबाली लड़की बजलीह।

'हँ सबाना ?' लड़कीक जिज्ञासा आओर बढ़ल।

'सबाना आजमी, द फेमस एक्टर अफ आर्ट सिनेमा एण्ड हिन्दी,' बाली आ लम्बा केशबला लड़का फटाकसँ सबाना आजमीक उपयुक्त वर्गीकरण कऽ अपन ज्ञान आ प्रजेन्स अफ माइन्डसँ लड़कीकेँ प्रभावित करबाक चेष्टा कएलन्हि।

'आइ डाँट लाइक आर्ट सिनेमा एण्ड सबाना आजमी,' लड़की हुनक चेष्टा पर पानि फेड़ैत अपन दुनू हात उपर कएलन्हि। अँगौठी मोड़ लेलन्हि आ अपन ढोरीकेँ दर्शन उपस्थित लोकक सुलभ कऽ देलन्हि।

'देन हु डू यू लाइक,' लड़का एहि प्रश्नकेँ उपयोग रब्बर जकाँ कऽ लड़कीक जवावकेँ सुन्दर बनावएकेँ प्रयास कएलन्हि।

'टाँम क्रुज, ' लड़का स्वयं निरुतर भऽ गेल।

ओ एहि बातसभकेँ सुनि कऽ आश्चर्यमे डुबल जा रहल छल। बाप रे ! हिनकर विषयमे ओ कि-कि सोचि रहल अछि। ई एतेक कलाप्रेमी अछि, समर्पित अछि आ नहि जानि कि-कि अछि ...। एतए तऽ कि सभ भऽ रहल अछि, इहोधरि पता नहि अछि।

'आइ अल्सो डाँट लाइक दिस आर्ट सिनेमा एण्ड दिज बोरिङ्ग हिन्दी प्लीज अल्सो ....,' ब्लु टपबाली लड़की ओहि लड़कीसँ दू कदम आगा बढ़ि कऽ ओकर समर्थन कएलक, जाहिसँ ओ बहुमतमे आबि गेल। एहि खुसीमे ओ दुनू अपन बाँकी मित्रसँ चारि कदम आगा जा कऽ सिगरेट पिबए लागल। लम्बा केसबला लड़का अपन केश आ बालीक कारणसँ लड़कीकेँ समूहमे जा कऽ मिलल आ सिगरेट पिबएकेँ कार्यक्रममे सहयोग करए लागल। बाँकी बचल मित्रसभ अपनामे बात कऽ रहल छल।

'यार राम, तो असगरे कोना ? मीरा कहाँ छथि ?' उज्जर कपड़ामे कनी भलादमी लागएबाली लड़की सभ्य भाषामे पुछलिह।

'सी इज अबाउट टू कम,' जीन्स सर्ट आ जीन्स प्यान्ट लगावएबला लड़का गम्भीरतासँ जवाव देलन्हि।

'श्योर ...... ? प्रश्नमे सायद कोनो व्यङ्ग नुकाएल छल।

'श्योर ? आ यदि नहि अएलन्हि तऽ ई दुनू पास फाड़ि देब एण्ड विल नेवर मिट हर,' लड़का कनीक तामसमे आबि गेल।

ओ कन्खी आँखिसँ ओहि लड़का दिस देखलक जकरा लेल नाटकसँ आवश्यक एकटा लड़कीकेँ लेल ओतए पहुँचब छल। भगवान ओ लड़की नहि आवए आ ओ ओहि लड़कासँग पास माँगि कऽ ई नाटक देखि सकए ओकरा मोनमे आयल।

'आर प्ले नहि देखब ?' उज्जर कुर्ताबाली लड़की पुछलन्हि।

'बुलसीट प्ले।'

ओ लड़की चुप भऽ गेलीह। कनीक देर चुप रहलाक बाद फेर ओ सम्झावए लागल, 'यू नो, यू अल गाइज हैभसेम प्रोब्लेम, मीरा हरिकेँ

सँग कनीक घुमए चलि गेल, आ अहाँ ....'

ओ आगा नहि सुनलक ओतएसँ हटि गेल प्राङ्गणमे ठाढ़ भऽ कऽ सेहो ई सभ बात सुनि सकैत अछि। ओकरा छोट-छोट समस्याकेँ लऽ कऽ एहि नाटककेँ महत्व नहि देब बढ़िया नहि लागि रहल छल। एकटा ओ जे भोजन जेहन प्रमुख चीजकेँ तिलांजली दऽ कऽ आएल अछि, तैओ ओकरा देखएकेँ अनुमती नहि अछि आ एकटा ई अछि, मात्र घुमएकेँ उद्देश्यसँ आएल अछि। ओ एकबेर पूरे भीड़ दिस तकलक। नहि ..... । किओ नहि, किओ नाटक देखए नहि आएल अछि, मात्र टाइम पास करए आएल अछि। ओकरा लागल, जेना ओ सबानाकेँ देखबाक लेल उताहुल भऽ गेल अछि। ओकरा सतांश सेहो किओ नहि अछि। सभ अपन साँझकेँ सुन्दर बनावएकेँ लेल चलि आएल अछि।

लड़का एखने ओकरा दिस देखि रहल अछि। ओ ओकरा दिस चलए लागल आ लड़का सेहो ओकरा दिस आबए लागल।

'कि बात अछि ?' लड़का नजदिक आबि कऽ धीरेसँ बाजल।

'कोनो बात नहि ?' ओ प्रश्न बुझि नहि सकल।

'पास नहि अछि कि ?'

'नहि...... ।'

'चाही की ?'

ओकर कान ठाढ़ भऽ गेल। लड़का ओकरा लेल देवदुत नजरि आबए लागल। लोक भीतर घुसब शुरु कऽ देने छल। नाटक शुरु होवएमे एखनो १५/२० मिनेट बाँकी छल, ओ बहुत उताहुल भऽ गेल छल।

'हँ .... चाही। प्लीज अहाँ दिआ सकैत छी ?'

'हँ, हम दिआ सकब, ' लड़का ओकर हात पकड़ि कऽ सड़ककेँ एक दिस लऽ जा कऽ सावधानीसँ इम्हर ओम्हर देखैत बाजल।

'डेढ़ सय रुपैया लागत।'

'डेढ़ सय.....? मुदा हमरा लग.....,' ओ फेरसँ निराश होबए लागल।

'कतेक अछि......कतेक ?' लड़का जल्दिमे लागि रहल छल ।

'एक सय रुपैया, ' ओकरा मुँहसँ निकलि गेल ।

'जल्दि दिअ ।'

ओ कनि हिचकिचाइत एक सय रुपैयाक नोट निकालनहे छल, लड़का फटाकसँ नोट छिन कऽ जेबमे राखि लेलक, फेर ओहि गतिमे पास ओकरा हाथमे दऽ आगा बढ़ि गेल ।

आब ओहो ओहि भीड़क एकटा हिस्सा भऽ गेल छल, जेकरा भीतर पैसबाक लेल पास छल । पास भेटबाक उत्साह आ प्रशन्नता ओकर मुँहपर देखा रहल छल ।

कखनो ओ पास जेबमे रखैत छल तऽ कखनो हाथमे ।

ओ लड़काक लेल सायद सय टका बड़का चीज छल मुदा ओकरा पत्ता नहि छल, जेबमे पैसा नहि भेलाकबादो ओकरा लेल एहि पासकेँ आगा कोनो मोल नहि छल । मुदा मोनमे एकटा दुःख अवश्य छल, चारि/पाँच दिन कोना बितत ।

यदि एकबेर जोड़ दैत तऽ ओ लड़का २० रुपैया आओर कममे मानि जाइत आ एक-आधबेरक चाहक जोगार भऽ जाइत ।

ई कि सोँचि रहल अछि, एतए ठाढ़ भऽ कऽ, ओहो पासकेँ सँग, इहो सभ सोचबाक चाही ? पास भेटि गेल, ई कि कम अछि ?

एहुँमे कोनो भगवानेकेँ चमत्कार अछि । ओ भोजन आ भूखकेँ दिससँ ध्यान हटाबएकेँ प्रयास करए लागल मुदा दिमाग छल जे बेर-बेर ओहि समस्याकेँ दिस जाए लागल छल ।

दिनमे एकबेर भोजनक क्रम टूटि जाइत सायद..........फेर ओ जीबैत कोना रहत ?

नाटक देखब बहुत आवश्यक अछि । ओकरे लेल तऽ एतए आएल अछि । मुदा भोजन तऽ सेहो ..... ।

ओ भीतरसँ कनिक बेचयन होबए लागल छल ।

'यार, दिस इवनिङ्ग इज सो रोमान्टिक,' ओकर बगलमे ठाढ़ समूहमेसँ एकगोटे भद्रसन देखएबला लोक अपन मित्रकेँ कहलक ।

'देन ह्वाई आर यू वेस्टिङ्ग योर व्यूटिफुल इवनिङ्ग हियर विदाउट बोतल ?' सिगरेटक छाउर झारैत ओ पुछलक ।

'नथिङ्ग, माइ बाँस इज कमिङ्ग हियर टूडे । इटस अ ग्रेट चान्स टू इम्प्रेस हिम, ' आ ओ हँसए लागल ।

ओ ओतहुँसँ हटि गेल । एतेक भीड़मे अछि जे किओ नाटको देखए आएल अछि आ ई नाटककेँ नहि देखलाकबादो कोनो फरक पड़एबला अछि वा मात्र ओहेँ.......।

ओ कनिक आओर आगा बढ़ि कऽ गेट लग ठाढ़ भऽ गेल आ ओकरा स्मरण आएल, ओ साबुन किनएकेँ विषयमे सोचने छल मुदा ओकरा लग पैसा नहि छल । बितल दश दिनसँ बीना साबुनकेँ काज चला रहल अछि । शरीरसँ गन्ध तऽ नहि आबि रहल अछि ? ओ स्थिरेसँ गर्दन घूमाकऽ कन्हाक निचा सुघंएकेँ प्रयास कएलक मुदा लग पाससँ सुगन्ध एतेक आबिरहल छल, ओकरो किछु बुझएमे नहि आएल, ओकर शरीरसँ ओहने सुगन्ध आबएकेँ अनुभव भेल ।

आगाकेँ दोकानपर किछु व्यक्ति मःम आ चाउमीन खा रहल छल । आई भुख लगलाक कारण भोजन भोरेमे कऽ लेने छल । एहिद्वारे भुख लागि गेल छल । कि करए, किछु खाईए लेल जाए । ओ कनि अस्कताति दोकानदिस बढ़ि गेल ।

'चाउमीन कसरी प्लेट छ, दाई ? (चाउमीन कोना प्लेट अछि, भाईजी ?)'

'पच्चीस रुपैयेँ.... ' ओकर मोन उदास भऽ गेल ।

'आ मःम ?'

'बीस रुपैयेँ ।'

ओ खुदरा निकाललक । बसकेँ कियायाकेँ बाद मात्र १० रुपैयाँ

बाचल छल। गरम-गरम चाउमीन ओकर पेटक आगिमे घी दऽ रहल छल। कखनो ओकर मोनमे सबाना आजमीक उतार-चढ़ावयुक्त सम्बाद शैली गुञ्जए लगैत छल तऽ कखनो चाउमीन आ मःम कें स्वाद मुँहपर अबैत-अबैत रहि जाईत छल। ओ बेचयन भऽ ईम्हर उम्हर टहलए लागल।

एहिबीच एकगोटे मोटरसाईकिल रोकि कऽ अपन मित्रसँग जल्दिसँ भीड़मे ठाढ़ भऽ किछु पुछए लागल। सभदिस पुछि लेलाकबाद ओ दूनु ओकरोदिस बढ़ल।

'हेल्लो बाँस, एक्सट्रा पास अछि कि ?'

'नहि, मात्र एकहिटा अछि, ' ओ जबाब देलक।

'अहाँ असगरे छी ने ? मित्र हमरा दऽ दिए पास। हमरा लग पास नहि अछि, ' ओ बिहुँसैत मजाकमे प्रस्ताव रखलक आ ई सोँचि कऽ जे ई मानि जाएत, कनिक आगा निकलि गेल। ओकर मित्र सेहो घूमि कऽ मजाकमे बाजल, 'दऽ दिऔ ने, डेढ़-दू सय लऽ लिए। हिनका असगरे जाए पड़त।

ओ ओहिना ठाढ़ छल। एकटा कठिन निर्णय शीघ्र लेबाक छल। दूनु गेटक भीतर गेल। दोकानमे एखने चाउमीन बनल छल। लोक अपन-अपन प्लेटमे चाउमीन राखि कऽ खा रहल छल। चाउमीनसँ सुगन्धक भाफ उठि रहल छल। ओ किछु सोचि रहल छल, ओकरा भीतरसँ एकटा तेज आवाज आएल, 'हेल्लो सर,दू सय रुपैया।'

दूनु किछु आगा निकलि गेल छल। आवाज सुनि कऽ घुमल आ ओकरादिस आबए लागल, ओहिमेसँ एकगोटे पर्स निकाललक। ओ आश्चर्यचकित छल, ओ तऽ बजबे नहि कएल, फेर ओकर मोनक बात कोना ओसभ बुझि गेल मुदा ओ पास ओकरा नहि देत। आखिर सबाना आजमीक नाटक अछि ने ? पत्ता नहि फेर कहिआ हएत ? नहि ओ स्वयं

नाटक देखत। कोनो मूल्यपर पास ओकरा नहि देत। पैसा कि एहि सभ चीजकें मूल्य चुका सकत ?

एकटा मित्र एक/एक सयकें दूटा नोट निकालि लेने छल। ओ एक हाथसँ रुपैँया पकरलक आ दोसर हाथसँ पास ओकरा दऽ देलक। दूनु गेटक भीतर चलि गेल छल।

ओ ओतहि ठाढ़ छल। ओकरा ब्रह्मा भाईकें बात स्मरण आएल। पूरे संसार एकटा रंगमञ्च अछि आ हमसभ ओकर 'कठपुतली'। जबरदस्ती बिहुँसल। हाथमे सय/सयकें दू टा नोट पकराएल छल। किछु देरधरि ओ ठाढ़ भऽ पोष्टरदिस देखैत रहल। एकसयकें नोट जेबमे राखि लेलक, दोसर दिन होबएबला नाटककें टाईमिङकें मोनमे दोहरबैत एक सयकें नोट हाथमे लऽ कऽ दोकानदिस बढ़ि गेल। चाउमीन आ मःम कें प्लेटसँ भाफ उठि रहल छल।

♦♦

बुलबुल

बहुत दिनसँ उपन्यास अधुरा पड़ल छल। कतेकोबेर ओकरा प्रारम्भ कएलहुँ आ समाप्तो कएलहुँ मुदा ओ हमर पसिनक नहि बनि पाबि रहल छल। एकटा आओर गल्ती हमरासँ ई भेल, उपन्यास पूरा करएसँ पूर्व ओकरा विषयमे कतहुँ लिखि देलहुँ। पाठकक उत्सुक्तापूर्ण पत्र हमरा नाके दम कऽ देने छल। हमर इच्छा छल, ओकरा जल्दि समाप्त करी। मुदा ओ हनुमानजीक नाड़रि जकाँ बढ़िए रहल छल। ओकरा समाप्त नहि होबएकेँ कारण ई छल, एकरा ओहे बुझि सकैत अछि, जे गृहस्थीकेँ दलदलमे फसल अछि।

जखन हम देखलहुँ घररुपी चिड़िया घरमे पुस्तक पूरा होएब सम्भव नहि अछि, दू हप्ताक कार्यक्रम बना विराटनगर बिदा भऽ गेलहुँ। विराटनगरक धर्मशालामे रुकि आ झटपट लेखन कार्यमे जुटि गेलहुँ।

धर्मशाला बहुत बड़का नहि छल, फेर महल्लाबला एरियामे भेलाक कारण लगपासमे कतेको गृहस्थक घर छल। हल्ला एतहुँ कम नहि छल, मुदा हमर मोन उबिआइत नहि छल।

एक तऽ मौसम बढ़िया छल, दोसर हमर स्वास्थ्य सेहो। धीयापुतासभ बाहर बहुत हल्ला करैत छल, मुदा हमरा की ? हमरासँ तऽ किछु मंगैत

नहि छल ?

मुदा एकटा समस्या बहुत भारी छल। एकटा सफाई करएबाली महिला, हरेक समय सभसँ झगड़ा करैत रहैत छल। ओकर महाभारत तऽ हमर उपन्यासोसँ बड़का छल, कोनो ने कोनो काण्ड चलिते रहैत छल। जतेकदेर ओ गल्लीमे नहि रहैत छल, हमर समय सुखसँ कटैत छल। मुदा कहल जाइत छैक, सुखक समय बहुत जल्दि बिति जाइत अछि।

हम दू चारि पृष्ठ लिखए पाबि रहल छलहुँ की फेरसँ वएह हल्ला। हम दुःखित भऽ जाइत छलहुँ। भगवानकेँ गोहराबए लागैत छलहुँ, 'हे भगवान मुक्ति दिअ।'

धर्मशाला अएला हमरा ५/६ दिन बिति गेल छल, एतबेदिन हमरा आओर रुकबाक छल। मुदा एहि स्थितिमे हमर काजक उदेश्य पूरा हएत एकर आशा कमे छल।

छठम दिनक बात अछि, बर्षा भोरेसँ भऽ रहल छल। बेरियामे गेट पर कुर्सी लगा कऽ हम केरा खा रहल छलहुँ, बर्षाक आनन्द लऽ रहल छलहुँ, तखने हमरा माथ पर लऽका लऽकल। मुदा ई लऽका अकाशमेसँ नहि धर्तीसँ छल। कानक पर्दा फाइर देबएबला आबाज आएल, 'पण्डितजी अहाँकेँ देखाई नहि दैत अछि ? हम एखने झारु लगा कऽ गेलहुँ अछि आ अहाँ गन्दा कऽ रहल छी।'

हमरा अपन मुर्खतापर ध्यान आएल। सहीमे हम केरा खाकऽ छिलका बाहर फेकि देने छलहुँ।

हम पहिनहिसँ ओ काज करएबालीसँ डेराइत छलहुँ। उठि कऽ गेटक आगामे रहल छिलका उठेलहुँ आ बजलहुँ, 'बहिन माफ करब। हमरा बुझल नहि छल हम बाहरकेँ छी, अहाँ बढ़िया कएलहुँ जे बुझा देलहुँ...पुनः एहन गल्ती नहि करब।'

हमरा बुझाइत छल, ओ अपन स्वभावक अनुसार हमरा बढ़िया जकाँ

क्लास लेत, मुदा नहि जानि हमर कनिटा शब्द ओकर हृदय पर, असर कएलक फेरसँ किछु नहि बाजल ।

किछुए देरक बाद ओ बाजल, 'पण्डितजी, अहाँ छोड़ि दिऔ, हाथ नहि खराब करु .... हम उठा लैत छी ।'

हम हटि गेलहुँ आ ओ झारुसँ साफ करए लागल। ओकर आँखि झुकल छल आ ओकर चेहरापर लाजक चिन्ह देखा रहल छल ।

दोसरदिन जखन आएल तऽ सभसँ पहिने हमरे बरण्डा झारए लागल, जेना ओ बितल ६ दिनसँ किछु नहि कएने छल । ओकर एहि विशेष कृपाक कारण सोचिए रहल छलहुँ, ओ गेट पर आबि कऽ कहए लागल, 'पण्डितजी आओर कोनो गन्दा हुए तऽ बाहर फेक दिअ, हम उठाकऽ लऽ जाइत छी ।'

'नहि बहिन, आओर नहि अछि ....,' ई कहि कऽ हम लिखएमे लागि गेलहुँ। राइटिङ्ग प्याडक पृष्ठ फारिकऽ जखन हम राखए लगलहुँ तऽ अनायासे हमर दृष्टी गेट पर गेल । हमरा लागल छल, ओ चलि गेल हएत मुदा ओ एखनो गेटक बगलमे ठाढ़ छल आ बीच-बीचमे माथ आगा कऽ कऽ हमरा प्याड पर लिखल टेढ़मेढ़ अक्षरकेँ देखि रहल छल ।

हम सोचलहुँ, शायद बख्शीशक लेल ठाढ़ अछि । ओ बर्षामे भीज रहल छल । हम जेंबमे हाथ घुसिआ कऽ, खुद्रा खोजए लगलहुँ । हमर हाथ बाहर निकलएसँ पहिने ओ ओहि प्रकारे हमर प्याड पर नजरि जमौने बाजल, 'पण्डितजी ई की लिखैत रहैत छी ?'

'एहिना किछु लिखैत रहैत छी....,'कहैत हम २० टका ओकरा दिस बढ़ा देलहुँ आ कहलहुँ, '....लऽ लिअ ।'

'रहए दिऔ पण्डितजी, हम नहि लेब ।'

हम पुछलहुँ, 'किए ?' हमरा आब ओकरा पर तामस आबए लागल । सोचलहुँ, २० टका ओकरा मजदुरी कम बुझा रहल अछि ।

तखने कनी बिहुँसि कऽ बाजल, 'काल्हि अहाँ हमरा बहिन कहलहुँ, एहि द्वारे.... ।' ओकर चेहरासँ एना लगैत छल, हम ओकरा बहुत धन दऽ देलीऐ

अछि । आ ओ हमर एहसानक निचा दबल जा रहल अछि । हम चुपचाप ओकरा दिस तकैत रहलहुँ ।

फुन्नी पड़ि रहल छल । भारी बर्षा दिस ओ फुन्नी बढ़ए लागल छल । टोलक सभ लोक अपन-अपन गेट बन्द कऽ लेने छल । मुदा ओ एखनोधरि बर्षामे ठाढ़ छल । हम विचार कएलहुँ, हमर एकटा साधारण शब्द बहिन एकरा एतेक बढ़िया लागल । हम तऽ कनी मनी कवि हृदय रखैत छी । मुदा हमरा स्थानपर यदि कोनो निर्दयी हृदय सेहो होइत तऽ जाहि ढङ्गसँ ओ उपयुक्त वाक्य बाजल छल, सुनि कऽ मोम भऽ जाइत ।

ओ प्रेमक कतेक भुकल अछि आ एकटा छोट शब्दकेँ कतेक सम्हारि कऽ रखैत अछि । हम सोचलहुँ, सहीमे ई घृणाक हावामे पलल हएत । बेचारी पूरेदिन लोकक घर बहारैत अछि आ गन्दा लदने रहैत अछि आ बदलामे पबैत अछि -घृणा, तिरस्कार आ गारि बात ।

सायद एहिद्वारे ई घृणा करैत अछि, लड़ैत रहैत अछि सभसँ । मुदा एतेक भेलाक बादो एकर हृदय कतेक सुन्दर आ मोलायम अछि । मनेमन हम कहलहुँ, तोँ सहीमे हमर बहिन होइतेँ !

ओकर कपड़ासँ पानि निचा बहए लागल छल, हमर हृदयक आँखि ओकरादिस ताकि रहल छल, ओ भीज गेल छल । ई देखि कऽ हम कलम आ पैड दोसरदिस रखैत आबाजमे कनीक मधुरता लबैत कहलहुँ, 'अहाँ तऽ भीज रहल छी, भीतर चलि आउ ।'

ओ नजरिभरि कऽ एकबेर हमरादिस तकलक आ फेर अपना दिस । नहि ओ भीतर आएल आ नहि किछु कहलक ।

हम चाहैत छलहुँ, बर्षा कम भेलाक बाद ओ चलि जाए । मुदा ई काज हमरा बसमे नहि छल । फेर हम ओकरा कहलहुँ, 'अच्छा तऽ हमर ई छाता, लऽ जाउ ।'

एहिबेर ओकर मुँह खुजल । कहए लागल, 'पण्डितजी, हमसभ तऽ एहिना भीजैत रहैत छी । हम एहिना चलि जाएब ।'

हम जिद्द कऽ कऽ कहलहुँ, 'कनिको देरक लेल भीतर आबि कऽ बैसि जाउ। पानि पड़ब रुकि जाइत तऽ चलि जाएब।'

सायद ओकरा भीतर आबएकें इच्छा भेल। मुदा भीतर ग्याँस, कप आ प्लेट दू चारिटा बर्तन ओहिना इम्हर ओम्हर राखल छल। ओ देखि कऽ बाजल, 'एतए तऽ अपने रोटी बनवैत छी ?'

हम उत्तर देलहुँ, 'तऽ कि भेलै, ई बर्तन अहींक भाईकें अछि।'

जहीना हमर वाक्य सुनलक, ओकर कनकन पुल्कित भऽ उठल। ओ एकबेर इम्हर ओम्हर देखलक, किओ देखि तऽ नहि रहल अछि, फेर ओ झारुकें बाहर देबालक सँग राखि कऽ भीतर आबए लागल। मुदा गेटे लग आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेल, मात्र बर्षासँ बचावएकें लेल। ओ काँपि रहल छल। हम चाहैत छलहुँ, ओ आओर भीतर आबए। ओछयानपर नहि तऽ कमसँ कम जमीनपर राखल कारपेट पर बैसए। हम ओकरा बाध्य नहि कऽ सकैत छी। ओ ओहिना ठाढ़ कपैत बाजल, 'पण्डितजी ...... '

हम बीचेमे टोकलहुँ, 'भाईकें लोक पण्डितजी नहि कहैत छैक, बहिन।'

ओ पहिनेसँ किछु लजाएल। फेर बाजल, 'भैया अपने कतए रहैत छीयैक ?'

'वीरगंज', हम उत्तर देलहुँ आ फेर ओकरासँ पुछलहुँ, 'अहाँक नाम कि अछि ?'

बाजल, 'बुलबुल।'

फेर कहए लागल, 'अपने कतेक दिन रुकबैक ?'

'५/६ दिन आओर रुकब, मुदा एहि धर्मशालासँ सायद काल्हिए चलि जाएब। एहिठाम बहुत हल्ला होइत छैक।'

ओ क्षणभरि चुप रहल। नहि जानि कि सोचैत रहल। फेर कहए लागल, 'ई हरेक समय अहाँ कि लिखैत रहैत छियै ?'

'किताब लिखैत छी।'

'किताबक अक्षर तऽ दोसर तरहक होइत अछि।'

'इहो ओहिना भऽ जाएत, मशीनमे पड़लाक बाद।'

'हँ', आश्चर्यसँ हमरादिस तकैत बाजल।

'अपनेक ओहिठाम कें-कें अछि ?'

'कनियाँ, माँ, बाबूजी आ एकटा बेटी अछि।'

बर्षा किछु कम भेल देखि कऽ ओ बाजल, 'भाईजी हम चलु तऽ ? एखन बहुत काज अछि।' ओ देबालमे अड़ेस लागल झारु उठा कऽ चलि गेल। एकरबाद हम जतेक दिन ओतए रहलहुँ, बहुत शान्ति आ आरामसँ।

ओहे बुलबुल जे पहिने तुफानमेल बनल रहैत छल, आब सभकें चुपचाप करबैत रहैत अछि। सभकें आँगन बढ़िया जकाँ बहारैत रहैत अछि। ककरो बच्चा इम्हर ओम्हर गन्दा फेकि दैत अछि, तैयो किछु नहि बजैत अछि। कोनो लड़काकें जोड़सँ चिचियाइत देखैत अछि तऽ सम्झबैत अछि, 'हल्ला नहि करु उम्हर पण्डितजी किछु लिखि रहल छथि।'

सभसँ पहिने ओ हमर आँगनकें सफाई करैत अछि आ जाइत समय, हमरा आगुमे आबि कऽ कनी-मनी बातचित कऽ लैत अछि। ओ एकाएक बहुत शान्त आ बुद्धियार भऽ गेल अछि।

ओना हम ओहि घरमे ५/६ दिन मात्र रहलहुँ। उपन्यासक काज समाप्त भऽ गेल। जाहि दिन हमरा जएबाक छल ओहिसँ एकदिन पूर्व नित्य दिन जकाँ हमरा लग आएल आ बाजल, 'काल्हि चलि जाएब भाईजी ?'

'हँ, काल्हि चलि जाएब।' फेर हम कहलहुँ, 'बुलबुल कनी इम्हर आउ.... ।'

ओ बीना हिचकिचाहटकें रुममे आबि गेल। हम स्नेह भड़ल हाथसँ ओकर माथपर छुबैत ओकरा हाथमे दू सय टका दऽ देलहुँ।

ओ लौटावए चाहैत छल, मुदा हमरा मुँहसँ ई सुनि कऽ जे अहाँकें नहि, हम अपना बहिनकें दऽ रहल छी ....., प्रशन्नतासँ लऽ लेलक।

दोसरदिन भोर ८ बजे सामान बान्हि कऽ हम रिक्सा पर चढ़ि गेलहुँ। धर्मशालाकें मैनेजरसँ बिदा लैत रिक्साबलाकें चलएकें इशारा कइए रहल

छलहुँ, तखने अचानक हमर नजरि दूरसँ आबि रहल बुलबुल पर पड़ल ।
ओ माथपर किछु उठा कऽ रखने छल । ओकर श्वास तेज गतिमे उपर निचा भऽ रहल छल । ओ करीब-करीब दौड़ैत हमरादिस बढ़ि रहल छल । रिक्साबलाकेँ पीठ दबा कऽ हम प्रार्थना करैत, रोकए कहलहुँ । रिक्साबला किछु देरक लेल रुकि गेल ।

हम रिक्सा परसँ उतरि कऽ ओकरा लग पहुँचलहुँ । माथपरसँ चँगेरा निचामे रखैत लजाइत बाजल, 'भाईजी किछु छल अपनेक लेल, तएँ एकरा लऽ कऽ एलहुँ अछि ।'

हम पुछलहुँ, 'कि अछि बुलबुल ?'

ओ लजाइत बाजल, 'भाईजी कनीक केरा अछि ..... आ फेर किछु क्षण रुकैत बाजल, भगवान कसम एकरा हम छुवो नहि कएलहुँ अछि । हमर पड़ोसी काटि कऽ चँगेरामे धऽ देलक अछि । ओना केरा हमरे गाछक अछि ।'

ओ हमर चेहरा दिस देखए लागल, हम ओकर प्रार्थना स्वीकार करु वा नहि । गदगद भऽ कऽ हम बजलहुँ, 'बुलबुल अहाँ देब तऽ किए नहि लेब । बल्कि अहाँ अपन भौजीक लेल नहि किछु अनितहुँ तऽ हमरा तामस होइत ।'

ओ माथसँ लऽ कऽ पयरधरि प्रेममे डुबि गेल । जे किछु बाजए चाहैत छल, ओ प्रशन्नतासँ नहि बाजि सकल । चँगेरा पुनः माथपर राखि कऽ ओ हमरासँग रिक्साधरि आबए लागल, मुदा हम ओकरा चँगेरा नहि उठावए देलहुँ, स्वयं उठा लेलहुँ । ओकरा आर्शीवाद दैत हम कहलहुँ, 'बहिन फेर भेटब ।'

फेर रिक्सा पर आबि कऽ बैसि रहलहुँ । रिक्सा चलि पड़ल ।

किएने किए आँखि डबडबा गेल । डबडबाएले आँखिसँ बुलबुल बहिनदिस देखलिऐक । बहिन आँचरक कोरसँ अपन आँखि पोछि रहल छल ।

♦♦

खिड़की

आइ ५ साल पुरान बात समाप्त भऽ जाएत । आब प्रभात अपन नव खाता फेरसँ खोलि सकताह । ओ बितल सभ हिसाब साफ कऽ देताह । नहि एक पाइ एम्हर, आ नहि एक पाइ उम्हर ।

बैशाख ११ गते अछि आई । आईसँ ५ बर्ष पहिने ओ एहि, यात्री प्रतीक्षालयमे किछु देर रुकि कऽ दाङ्गक लेल बस पकरने छलथि । ठीके कहल गेल अछि, इतिहास अपनाकेँ दोहराबैत अछि ।

बिनितासँ हुनक पहिल भेटि सेहो बैशाख ११ गतेकेँ दिन भेल छल । ओहि समयमे एतए क्याम्पसक एकहिटा क्लासमे रहथि । विषय छल राजनीतिशास्त्र । एमएकेँ अन्तिम बर्षधरि पहुँचैत-पहुँचैत ओ सभ पूरे जीवन, एकसँग व्यतित करबाक निर्णय कऽ लेने रहथि ।

प्रभातक घर दाङ्गमे रहन्हि । पिता ओतए सारीकेँ कारोबार करैत रहन्हि । एतए धरानमे पीसा-पीसीक घरमे रहि कऽ पढ़ि रहल छलथि । ओसभ हुनका बहुत पसिन करैत छल । एसएलसी दाङ्गेमे कऽ लेलन्हि, तऽ पीसी एतए बजा कऽ क्याम्पसमे नाम मात्र नहि लिखबौलन्हि अपना घरमे सेहो रहएकेँ स्थान देलन्हि । हुनक पीसीयौत भाई-बहिन सभसँ बढ़िया पटैत छल । ओतहिसँ ओ एमएक पढ़ाई आ बिनिताक प्रेम सेहो प्राप्त कएलन्हि ।

समस्या बिनिताक सँग छल । ओ क्याम्पसमे ब्युटी क्वीनक नामसँ प्रसिद्ध छलीह, मुदा सौन्दर्य आ अहंकार शायद सँग-सँग पलाइत अछि । कमसँ कम प्रभात एहन अभिमानी लड़की पहिने नहि देखने रहथि । ओतहि बिनिता हुनका दिस झुकलीह, कतेको योग्य आ धनीक सहपाठीकेँ होइथ, हुनका प्रति समर्पित भऽ गेलीह ।

हुनकामे अपन पुरुषत्वकेँ अहंकेँ तृप्ति अनुभव भऽ रहल छल । बिनिताक पत्रकार पिता अपन जिद्दी बेटीकेँ बढ़िया जकाँ चिन्हैत छलाह, ओ हुनक पसिनकेँ मानि लेलाह । ओहुँना प्रभातमे कोनो कमी नहि रहन्हि । स्वजातीय तऽ रहबे करथि, सुदर्शन, स्वस्थ्य, शिक्षित आ बढ़िया परिवारकेँ । स्वभावकेँ सेहो बहुत शान्त ।

पत्रकारजी सोचलन्हि, एहन ठण्ढ़ा मस्तिष्कबला लड़के हुनक कड़ा स्वभावक बेटीकेँ सम्हारि सकत । तय भेल, एमए कएलाक बाद ओ दाङ्ग जा कऽ पितासँ अनुमति लऽ लेताह आ फेर विवाह हएत ।

प्रभातकेँ प्रेमक ओ दिन बढ़िया जकाँ स्मरण छन्हि । बिनितासँ प्रेम करब तऽ किछु एहने छल, जेना कोनो बाघिनीसँ प्रेम करी । ओ मुडी छलीह, जिद्दी छलीह । कखन भड़कि परिती, ठेकान नहि रहैत छल । हुनक बात किओ काटि दए, एको मिसीओ बरदास्त नहि रहन्हि । प्रभातकेँ प्रायः लगन्हि, जेना ओ बाघपर सवार होइथ, उतरि नहि सकैत छलाह, बाघ खाए जाएत आ ओतहुँ बैसल रहत, बहुत दुस्कर छल । हुनक बहुत समय बिनिताक मुड सम्हारएमे लगैत छल । बराबर सोचैत छलाह, कनियाँक रुपमे ई केहन साबित हेतीह । मुदा मोनमे भरोसा रहन्हि, विवाहक बाद बदलती अवश्य । महिला विवाहक बाद बहुत बदलि जाइत अछि। ओहुना हुनका अपना प्रेमपर भरोसा छल ।

स्वयं बिनिता कहने रहथि, 'प्रभात हमरा पसिन करैत छी, तऽ हमर जिद्द आ सनककेँ सेहो सहए पड़त... हमर बात किओ काटि दए, अपन राय थोपि दए, हम सहि नहि सकैत छी ।'

प्रभात स्वयं ई बुझैत छलथि, परञ्च बिनिता हुनक मन प्राणमे बैसल

छलीह । ओ प्रेम दरशाबैत कहलाह, 'बिनी, अहाँ जेहन होइ, जे किछु होइ स्वीकार्य अछि । आब एहि मामिलामे किछु नहि कहुँ ।'

फेर ओ बिहुँस कऽ कहलाह, 'हमरा जेहन आज्ञाकारी नहि भेटत, अहाँकेँ ।'

आब बिनिता प्रसन्न भऽ गेल छलीह ।

बराबर हुनक बिचित्र स्वभाव, सनक हदधरि पहुँच जाइत छल । फलना सिनेमा प्रभात देखए चाहैत छलाह, मुदा बिनिता ओ नहि देखतीह । प्रभातकेँ कारी रंग पसिन छलन्हि मुदा बिनिताक रुचि अनुसार निला रंगक कपड़ा पहिरताह । फलना समय चाहक अछि, फलना समय जलपानक अछि, ई तखन छल जखन हुनक विवाहो नहि भेल छल । मुदा बिनिता अपन घरमे बैसले-बैसले हुनक रहन-सहनपर नियन्त्रण रखैत छलीह ।

प्रभातकेँ अपन व्यक्तित्व जेहन किछु नहि होइन । एकरबादो ओ प्रसन्न छलाह, बिनितासँ प्रेम करैत छलथि, हुनक ई ज्यादति सेहो प्रेमे जकाँ लगैत रहन्हि ।

बिनिता सपरिवार एकदिन मेला देखएकेँ कार्यक्रम बनौलन्हि । ओहि मेलामे चिड़ियाखाना सेहो आनल गेल छल । हुनका सभसँग प्रभात सेहो आमन्त्रित छलाह ।

मेलामे जलपान कएलाकबाद जानवर सभकेँ देखए चललाह । बिनिता बहुत प्रसन्न छलीह । उत्सुकतासँ बाघ, भालु, गैँडा आदिकेँ ओ देखलन्हि । विभिन्न जातिक साँपोकेँ ओ देखलन्हि । हरिण बानरक अतिरिक्त बहुतरास चिड़ै सभकेँ सेहो देखलन्हि । बानर रहल स्थानपर बच्चाासभकेँ भीड़ लागल छल । बानरकेँ विभिन्न गतिविधिक कारण सभ हाँसि कऽ बेहाल छल । परिवारक बच्चाक सँग बिनिता सेहो ओकर मुद्रासभ देखि कऽ जोड़-जोड़सँ हाँसि रहल छलीह । प्रभात सेहो प्रसन्न छलाह । हुनका लागल, बिनिता सेहो सामान्य लड़की छथि । वातावरणक एकरसतासँ उबि गेल हेतीह ।

बच्चाक सँग बिनिता सेहो बानरकेँ चकलेट आ चिनिया बदाम देबाक प्रयास कएलीह । मुदा ओहिठाम सुरक्षार्थ रहल रक्षकसभ रोकि देलक । ओ

कहलक, 'जानवरकेँ बाहरक चीज खुवाबएकेँ आदेश नहि अछि ।'

बच्चा तऽ मानि गेल मुदा बिनिताकेँ अपन अपमान अनुभव भेल । ओ अड़ि गेलीह । परिणाम भेल रक्षक परिवारक मदतसँ हुनका ओतएसँ हटा देलक । बिनिताक मुड एहन खराब भेल, सीधा बाहर आबि कऽ कारमे बैसि रहलीह । प्रभातकेँ बहुत खराब लगलन्हि । मुदा बिनिताक स्वभावकेँ बुझैत ओ कर्तव्यवस हुनक पाछु एलाह । हुनका बुझाबएकेँ प्रयास कएलाह, मुदा बिनिता रट लगौने छलीह, हुनक बहुत बड़का अपमान भेल अछि ।

मुदा प्रभात सम्झौलन्हि, बातपर गम्भिर होउ ? चिडियाघरमे कड़ा नियम होइत अछि, बाहरक दर्शक जानवरकेँ किछु नहि खुवाबे । जानवर सभकेँ पेट बिगरएकेँ डर होइत अछि । ओ बिमार पड़ि सकैत अछि ।

'हमर अपमान कहिओ नहि भेल छल', बिनिता मुँह फेरैत बजलीह ।

प्रभात बिहुँसलाह, 'बिनी रानी, अपमानकेँ कोनो बाते नहि अछि एहिमे, अहाँ बाहर लागल बोर्ड नहि देखने छलीयै, जाहिमे लिखल छल, जानवरकेँ किछु नहि खुवाबी... रक्षक तऽ मात्र अपन कर्तव्य पालन कएलन्हि । अहाँकेँ तऽ हुनकर प्रशंसा करबाक चाही ।'

'जी, माफ करब', ओ व्यंग्यात्मक स्वरमे बजलीह, 'एहन विशाल आ उदार हृदय अहीकेँ मुबारक हुए ।'

'सहीमे, डियर बिनी अहाँकेँ अपन बातक टेक रखबाक आदत अछि, घुरतीमे बिनिता प्रभातक सँग नहि बैसलीह । भाई-बहिनक सँग पाछुक सिटपर बैसि रहलीह । हुनका बुझाएल प्रभात कायर पुरुष छथि । ओहिबेर कतेकदिन बाद हुनक मुड ठीक भेल छल । ई बात प्रभात नहि बिसरल छलाह ।

एहन घटना बराबर होइत रहैत छल । ओहि समयमे ओ मोनके बुझबैत रहैत छलाह जे एखन अबुझ अछि । उमेर बढ़त, विवाहक बाद जिम्मेबारी बढ़त तऽ स्वयं बुझए लगतीह ।

एमएक परीक्षा दऽ प्रभात दाङ्ग गेलाह, आ अपन घरक लोककेँ बिनिताक विषयमे बतौलन्हि । हुनक पिता चाहैत छलाह, ओ करोबारमे हात बटाबथि ।

ओहि एरियामे साड़ीकेँ बढ़िया सम्भावना छल । ओ प्रभातकेँ जिम्मेबारी देबए चाहैत छलाह, प्रभात सेहो रुचि लऽ रहल रहथि । पिता राय देलन्हि, 'अपन थोक दोकान ओ अलग खोलि कऽ व्यापार शुरु करथि ।' एहिकेँ लेल ओ पूँजी देबाक बात सेहो कएलन्हि ।

रहल बिनिताक बात तऽ घरक लोक चाहैत छल, प्रभात कोनो बढ़ियाँ घरक मन पसिनक लड़कीसँ विवाह करथि । ओसभ अपना दिससँ कोनो खास लड़कीकेँ तय नहि कएने रहथि । बिनिताक घर परिवार बढ़ियाँ छल, लड़की प्रभातकेँ पसिन रहन्हि, माता पिता आपत्ती नहि कएलन्हि ।

दोसरबर्ष विवाह भऽ गेल । प्रभात व्यापार सेहो प्रारम्भ कऽ लेलन्हि । प्रथम मिलनक लेल प्रभातकेँ मोनमे रंग-रंगक उत्सुकतासँग घबराहट सेहो भऽ रहल छलन्हि । एहन अवसरपर तऽ पुरुष उत्साहित रहैत अछि आ महिला संकुचित आ घबराइत रहैत छथि, मुदा ई मामिला बिनिता सँग जे छल ।

दू दिन, दू राति विवाहसँ लऽकऽ दूरागमनधरि, लोकक बधाई भोज आदि निमहि गेल । एहिकेँ बाद नवदम्पतीकेँ फुर्सत भेल । प्रभातक दुनू बहिन आ पिसीयौत बहिन सभ हुनका शयनकक्षमे फुलसँ सजा कऽ रखने रहथि । बिनिता ओतहि सजि-धजि कऽ बैसल छलीह । दुनू गोटेकेँ लेल दुध राखल छल । किछु घबराहटकसँग प्रभात अपन रुममे एलाह ।

बहिनसभ बिनिताकेँ नव कनियाँक रुपमे स्वयं सजौने छलीह । स्वभावक विपरित बिनिता सभ विद्य कएलन्हि, आ जे कहल गेल, मानैत रहलीह । प्रभात ई सभ देखलन्हि तऽ हुनका लागल बिनिता अपन जिद्दी स्वभाव बिसरि गेलथि, हुनकासँग सामञ्जस्य बैसा लेतीह ।

बिनिता बिहुँसलीह । ओ मधुर स्वरमे बजलीह, 'अहाँ हमर छी, इहे बहुत अछि ।'

प्रभात हँसलाह, 'से तऽ अछिये तैयो किछु.....।'

बिनिता हुनक आँखिमे देखि बजलीह, 'तऽ प्रण करु, हरेक समय हमर बात मानब ।'

'ई केहन बात अछि', प्रभात असमञ्जसमे बजलाह, 'बात तऽ हम अहीकेँ मानैत छी एहिमे प्रण करबाक कोन आवश्यक्ता ?'

बिनिता हुनकर हात दबौलथि, 'मुदा हमरा प्रसन्नताक लेल सही ।'

प्रभातकेँ लगलन्हि जेना कोनो फन्दामे फँसि रहल होइथ । पति अपन प्रियतमा पत्नीसँ प्रेम करैत अछि, ओकर बातो मानैत अछि, ई सहज आ स्वभाविक अछि । मुदा ई तऽ जेहन वकिल जकाँ पहिने बाउण्ड भरबा लेबए चाहैत छथि ।

प्रभात प्रतीज्ञा कऽ लैथि तऽ की सभ गलती सही बात मानए पड़त ?

'की व्यर्थक जिद्द करैत छी', ओ सम्फौलन्हि, 'बिनी बात तऽ सभ मानबे करैत छी अहाँकेँ, मुदा हमरा समझ्मे गलती करैत छी तऽ बुझेबो करैत छी ।'

'हमर प्रसन्नताक लेल सही', बिनिताक मुँहपर प्रसन्नता छल मुदा आँखिमे जिद्दक रेखा आबए लागल छल । बात बढ़ए देबएसँ रोकबाक लेल कहि देलन्हि, 'ठीक अछि, हम प्रण करैत छी ।'

'की प्रण ?' बिनिता जीद्द कएलन्हि, 'अपन मुँहसँ साफ-साफ कहुँ ।'

प्रभात बिहुँसलाह, 'पत्रकार बापक बेटी जे ठहरलहुँ, हम प्रण करैत छी, अहाँक बात मानब, आब तऽ प्रसन्न भेलहुँ ।'

बिनिताकेँ तनाव समाप्त भऽ गेल । ओ प्रभातकेँ अपन हातसँ गला मिला लेलन्हि, 'आब तऽ हम प्रसन्न छी ।'

दुधक गिलास प्रभात बिनिताकेँ देलन्हि आ स्वयं लऽ कऽ चुस्की लेबए लगलथि । 'लगैत अछि, आजुक राति बातेमे कटि जाएत ? जीभरि कऽ आई बात करए चाहैत छी, अहाँसँ ।'

बिनिता बिहुँसलीह, 'अजुकेँ राति किए, जीवनभरि बात बनबैत रहुँ, हम बातसँ अगुताएबला थोरेहे छी ।'

प्रभात गलामे पहीरने माला उतारि कऽ तकिआ लग राखि देलाह । बिनिता बजलीह, 'उम्हरकेँ खिड़की तऽ खोलु, बहुत गरमी लागि रहल अछि ।'

'उम्हर गल्ली पड़ैत अछि', प्रभात कहलन्हि, 'किओ अबैत जाति झाँकि

कऽ देखि सकैत अछि ।'

'कोनो परबाह नहि, अहाँ खोलि दिऔ ।'

हुनक स्वरमे आएल कड़ापन अनुभव करैत प्रभात सम्फौलन्हि, 'देखू कनीक बात लेल...।'

'ओ किछु नहि', बिनिता आदेश जकाँ देलन्हि, 'अहाँ खिड़की खोलि दिऔ ।'

प्रभात गौरसँ देखलन्हि । हुनका पुरान बिनिताक झलक देखाएल, हुनका अखड़लन्हि । ओ बजलाह, 'की बेकारक बात लऽ कऽ....।'

'प्रभात, अहाँ तऽ हमर बात मानएकेँ लेल प्रतीज्ञा कएने छी', बिनिता फटकार लगौलन्हि ।

प्रभातकेँ अहंपर चोट लागल, आब ओ पति छथि , कनियाँकेँ हुनक मन रखबाक चाही, ओ किछु उदास स्वरमे बजलाह, 'बात मानएकेँ ई अर्थ नहि जे अनुचित बात मानि ली ।'

'हँ, अहाँकेँ मानए पड़त', बिनिता तएसमे आबि कऽ बजलीह ।

'हम नहि मानब ।'

'अहाँ नहि मानब ?' ओ कठोरतासँ बजलीह ।

'अहाँक बात कनियाँ जकाँ नहि अछि, हम प्रेमसहित किछु उचित आग्रहकेँ मानि लेब मुदा कोनो दबाबमे नहि आएब', प्रभात दृढ़तासँ कहलाह ।

'तऽ ई बात अछि', बिनिताकेँ आँखिसँ नोर झरए लागल, 'अहाँ अपन रंग देखाबए लगलहुँ ।'

'ई उचित आ सही रंग अछि', प्रभात तुरन्त उत्तर देलन्हि ।

'प्रभात स्मरण राखू एखन खिड़की नहि खुजल तऽ हमरासँग कोनो सम्बन्ध नहि रहत, फेर हम कहैत छी, खिड़की खोलि दिऔक ।'

'नहि ।'

'अहाँ नहि खोलबैक ?'

'नहि, नहि, नहि', प्रभात जोड़सँ चिचिएलाह, 'सयोंबेर कहब तऽ हम नहि खोलब ।'

बिनिता हुनकादिस पिठ घूमा लेलीह, ओ देबालदिस मुँह घूमा परि

रहलीह। प्रभात किछुदेर बेबकुफ जकाँ बैसल रहलाह, फेर बल मिझाकऽ सोफापर सुति रहलथि।

भोरमे जगलाह तऽ बिनिता बाथरुममे छलीह, ओ बाहर चलि एलाह। दोसरराति सेहो इहे हाल रहल। बिनिता पलंगपर, प्रभात सोफापर।

घरक लोकसभकेँ कोनो भनक नहि लागल, किछु गरबर भऽ रहल अछि। एक-दू दिनकबाद बिनिताकेँ भाई एलन्हि, आ ओ नैहरि चलि गेलीह। एहिबीच दूनुमे कोनो बातचीत नहि भेल। बिनिताकेँ तऽ नैहरि जएबाक निश्चिते रहन्हि तएँ किनको असमान्य नहि लागल।

महिना दिनक बाद प्रभातक पिता कहलन्हि, 'धरानसँ समधिकेँ पत्र आएल अछि, दोंगा करा लेबाक लेल। तोँ जो कनियाँकेँ आनि ले।'

प्रभात सोचलन्हि, आब बिनिताकेँ मुड ठीक भऽ गेल हएत। ओ सुन्दर-सुन्दर साड़ी आ मिठाईसभ लऽ कऽ सासुरक बाट धेलन्हि।

पहिलबेर सासुरमे एलापर जमाएकेँ खूब स्वागत भेल। आब ओ ओहि घरमे जमाए छलाह। घरमे एलापर प्रभात इम्हर उम्हर देखलन्हि, मुदा हुनका कतहुँ बिनिताक झलक नहि देखाएल। रातिमे जखन ओ रुममे पहुँचला तऽ ओ पहिनेसँ पलंग पर बैसल छलीह, तम्साएल चेहरा बना कऽ।

प्रभात बिहुँसति बजलाह, 'देवी जीकेँ तामस कायमे अछि, भौँ पर धनुषवाण तनले अछि।'

बिनिता संकेत देलन्हि, 'पहिने ओ खिड़की खोलि दिऔक, बाँकी बात बादमे।'

प्रभातकेँ माथा ठनकलन्हि। एतहुँ एकटा खिड़की, आ ओहो बन्द पड़ल अछि।

बिनिता बजलीह, 'अहाँकेँ घरबला खिड़कीकेँ स्मरणमे हम एतए आबि कऽ एकरो लगातार बन्द रखलहुँ, अहाँ खोलब तखने ई खुलत, आ हमरा अहाँक बीचक ई उल्झनबला गाँठ सेहो खुजत।'

प्रभातकेँ खराब लागल, ओ बजलाह, 'अहाँ बहुत गजबकेँ जिद्दी छी....।'

'जे हुए', बिनिता बात कटलीह, 'अहाँ खिड़की खोलू नहि तऽ जाउ एतएसँ।'

प्रभातकेँ सेहो तामस भेलन्हि। उठि कऽ ठाढ़ भेलाह, 'हम नहि खोलब।'

बिनिता मुँह फेर कऽ परि रहलीह। प्रभात देखलन्हि, एतए सोफासेटक स्थानपर अरामकुर्सी अछि, रातिभरि आराम कुर्सीपर पड़ल सिगरेट फुकैत रहलाह। भोरमे जलपान कऽ अपन ब्याग लैत निकललाह, सीधा बस स्टैण्ड पहुँच गेलाह। सभ समान ब्यागेमे प्याक छल।

ओ बैशाख ११ केँ दिन छल। आई सेहो प्रभात वैशाख ११ कऽ एतए ओही यात्री प्रतीक्षालयमे छथि, मुदा एहिबेर ओ बिनिताक लेल नहि आएल छथि।

तऽ ५ बर्ष पहिने ओ ओहे बैशाख ११ कऽ एतएसँ दाङ्ग घूरल रहथि। बिनिताक जिद्दक बाद घरमे सभकेँ कहि देलन्हि। ई बात बिनिताक नैहरिक लोककेँ सेहो पत्ता चलि गेल छल। ओसभ हुनक निरर्थक जिद्दकेँ दूर करबाक बहुत चेस्टा कएलन्हि, मुदा ओ तीलभरि नहि ससरलथि। नैहरिबला निरास भऽ कऽ बैसि गेल। बिनिता ओतहिकेँ एकटा क्याम्पसमे पढ़ाएब शुरु कऽ देलन्हि। इम्हर दाङ्गमे प्रभात हुनकासँ ध्यान हटाबएकेँ लेल अपन व्यापारमे मन लगौलन्हि।

प्रभातक पिता समधिकेँ पत्र लिखलन्हि, कनियाँकेँ इएह व्यवहार छन्हि तऽ प्रभातकेँ दोसर विवाहक विषयमे सोचि सकैत छी ?

उम्हरसँ उत्तर आएल जे ओ सभ बहुत सम्झौलन्हि बिनिताकेँ मुदा ओ नहि जाए चाहैत अछि। सम्बन्ध विच्छेदक लेल तैयार अछि, परस्पर सहमतिसँ सम्बन्ध विच्छेद करी। प्रभातक दोसर विवाह करबामे कोनो अवरोध नहि अछि।

मुदा दोसर विवाहक लेल स्वयं प्रभात तैयार नहि छलाह। घरक लोक मौन भऽ गेल। विवाहित प्रभातक जीवन विचित्र जकाँ एकांकीपनमे बितए लागल।

५ बर्ष बीत गेल। प्रभातक व्यापारक व्यस्ततामे समयक किछु पत्ता नहि चलल। ओ जानिबुझि कऽ स्वयंकेँ व्यस्त बना लेलन्हि। व्यवसाय बहुत बढ़ियाँ जकाँ चलए लागल छल, एहिबीच छोटका भाईकेँ सेहो विवाह भऽ गेल, कनियाँ घर चलि एलीह। घरक लोक मानि लेलक,

प्रभातक जीवन एहिना चलत ।

बराबर धरानसँ समधिकेँ पत्र अबैत रहलन्हि, ओ अपन जिद्दी बेटीकेँ अहंकारप्रति दुःख प्रकट करैत लिखथि, एहि विवाहकेँ कोनो अर्थ नहि रहल, ओ स्वयं कानुनी कारबाईक लेल राजी छथि । प्रभात दोसर विवाह कऽ लौथ । बिनिता घरमे घोषित कऽ लेने छथि, जीवनमे असगरे रहब ।

पत्रोत्तरमे प्रभात लीख दैत छलथि जे ओ विवाहित छथि, ओ दोसर विवाह कोनो हालतमे नहि करताह ।

माय तऽ बिनिताकेँ पहिने चलि गेल छलीह । ३ बर्षक बाद पिताकेँ सेहो निधन भऽ गेलन्हि । बिनिता आब बड़का भैया-भौजीक सँग रहैत छलीह, क्याम्पसमे नोकरी करैत छलीह ।

प्रभातकेँ प्रत्येक बर्ष बैशाख ११ गते बिनिताक स्मरण विशेषरुपसँ अबैत छल । ओहिदिन हुनक प्रथम परिचय क्याम्पसमे भेल छल । बर्ष दिनक बाद ओहिदिन ओ ५ बर्ष पहिने इहे धरान बस स्टैण्डक प्रतीक्षालयमे किछुदेर बैसि कऽ दाङ्ग घूरल रहथि ।

उपहारक साड़ी एहि प्रकारे प्याक कऽ फेर नहि आबएकेँ लेल, आई ५ बर्षक बाद बैशाख ११ गते प्रभात इहे यात्री प्रतीक्षालयमे छथि ।

संजोग किछु एहन रहल, एहिबेर एकटा व्यापारिक सम्मेलनमे धरान आबए पड़ल छलन्हि । बितल ५ बर्षमे ओ धरान नहि आएल छलाह । एकटा कपड़ाक चाइनीज कम्पनी एहिठाम सम्मेलन कऽ रहल छल । सम्मेलन वैशाख १० गते शुरु भेल छल । दाङ्गसँ ओ ९ गते भोरेमे धरानक लेल बिदा भेल छलाह ।

जाइत समय नहि जानि कि सोचि कऽ ओ ओहे प्याक भेल ओहे साड़ी आ सुटकेश लऽ लेलन्हि ओना बिनितासँ भेटबाक कोनो इच्छा नहि रहन्हि । बैशाख ११ गते दिनभरि धरानक होटलमे सहभागिसभ सँग परिचय, निजी बैसारमे बितल ।

साँझमे सहभागि सभ मनोरञ्जनक लेल अपन-अपन हिसाबसँ कार्यक्रम बनौलन्हि । काल्हि भोरे अपन-अपन घर जएबाक छल ।

प्रभात साँझमे जलपान कएलाक बाद घूमए फिरएकेँ कार्यक्रम बना कऽ कपड़ा बदलए लगलथि, की सुटकेशमे ओहिना पड़ल लाल रंगक साड़ी ध्यान खिचए लागल ।

एकाएक ओ प्याक साड़ी देखए लगलाह । एहिकेँ सँग दाङ्गकेँ, अपन सासुरकेँ आ बिनिताक बहुत बात जुड़ल छल । हुनका नहि जानि की प्रेरणा भेल साड़ीकेँ प्याकेट निकालि कऽ दोसर ब्यागमे रखलन्हि, रुमक ताला बन्द कऽ चाभी काउन्टर पर दऽ बाहर बिदा भऽ गेलाह ।

एकटा रिक्सासँ ओ बस स्टेशन गेलाह । दाङ्गक लेल बसक टाइमक जानकारी लेलन्हि । किछुदेर यात्री प्रतीक्षालयमे बैसलाह, जतए ५ बर्ष पूर्व पहुँचल छलथि । एतएसँ निरास भऽ घूरैत समय सेहो बैसल रहलाह । आब बिनिताकेँ घर जा कऽ ५ बर्षक हिसाब साफ कऽ देता आ नवसीरासँ ओतहि एकांकी जीवन व्यतित करताह आ फेर सभ दिनक लेल ओ आजाद ।

घर लग पहुँचलाक बाद बहुत असमञ्जसमे परि गेलाह । मोनमे कखनो होइत छल, इम्हर किए एलहुँ, फेर मोनमे होइत रहलन्हि, एतए हुनक सासुर अछि ।

मस्तिष्क कहैत छल, सम्बन्ध टुटि चुकल अछि । हृदयक कामना जोड़ दऽ रहल छल । बिनिताकेँ एकबेर आँखिसँ तऽ देखि ली ।

सासुरक लोककेँ ५ बर्षक बाद आएल जमाएकेँ चिन्हएमे देर नहि लागल । घरमे सरहोजनी आ सरबेटा, सरबेटी छल । सार बाहर गेल रहथि । सरहोजनी बहुत इज्जतक सँग प्रभातकेँ बैसौलन्हि, जलपान करौलन्हि, कुशल मंगल पुछलन्हि, सम्मेलनक बात बुझलन्हि आ दुःख सहित कहलन्हि, 'अपनेकेँ हम कि कही, जखन अपने सोनामे खोँट अछि, तऽ....।'

प्रभात बिहुँसलाह, 'भौजी बिनिताकेँ इहे नाटकमे मोन लगैत छन्हि, चलए दिऔ ।'

'समय आ उमेर सेहो कोनो चीज अछि, जीवनमे कोनो अपन सुख सेहो होइत अछि', सरहोजनी दुःखक सँग कहलीह, 'मुदा अपने बिनिता बौवाक जिद्दक कारण असगरे किए तकलीफ भोगि रहल छी ... की कहुँ, ओ तऽ स्वयं

असगरे छथि, अपनाकेँ क्याम्पसक सामने उल्भा कऽ रखैत छथि ।'

'जेना हम स्वयंकेँ व्यापारमे...।'

'ओ कोनो सखीकेँ ओतए सत्यनारायण भगवानक पूजामे गेल छथि, आबि रहल हेतीह', सरहोजनी कहलीह, 'अपने ताधरि हुनकर रुममे जा कऽ आराम करु ।'

'एतहि रहबामे की हर्ज ?' प्रभात असमञ्जसमे कहलाह, मुदा सरहोजनी नहि मानलीह । ओ हुनका बिनिताक रुममे लऽ गेलथि । हुनका कुर्सीपर बैसबैत कहलन्हि, 'देखिऔ ई खिड़कीकेँ ५ बर्ष भऽ गेल मुदा खोलए नहि दैत छथि, एहि खिड़कीसँ रौद आ हावा बढ़ियाँ अबैत अछि मुदा बौवाकेँ जिद्द छन्हि ।'

प्रभात एना लज्जित भेलाह जेना ओहि खिड़की बन्द रहबामे ओहेँ दोषी छथि ।

'आई अपने एतहि रहूँ', सरहोजनी आग्रह कएलन्हि, 'की अपना घर रहैत सेहो होटलमे....।'

'भौजी ओतए सहभागीसभक लेल तय अछि ।'

'जे हुए अपने बिनिता बौवासँ भेटि कऽ जाउ...कनी बैसू, हम अबैत छी ।' टेबुल पर सजा कऽ राखल अपन ओ फोटो देखलथि एखनो बिनिता हुनका पसिन करैत अछि, पत्ता नहि । सम्भवतः फोटो ओहिना रखा गेल हुए । मुदा लिखबाक टेबुल लग ओ खिड़की पूरे समस्याक जड़ि अछि .....।

प्रभातकेँ उत्सुकता बढ़लन्हि । ५ बर्षसँ बन्द पड़ल अछि । भौजी कहि रहल छलीह, तखन तऽ ई जाम भऽ गेल हएत । ओ उत्सुकता दबा नहि सकलथि आगु जा कऽ खिड़कीकेँ छिटकिल्ली पकड़लन्हि, खीच कऽ खोललन्हि आसानीसँ खुजि गेल जेना प्रत्येकदिन खुलैत हुए ।

ओ डरेलाह... खिड़की नहि खोलबाक चाही । बिनिता हरेकसमय बन्द रखैत छलीह । हुनका मोनमे आएल, फेरसँ एकरा बन्द कऽ दी । तखने ककरो एबाक आहटसँ चौंक गेलाह । बिनिता आगामे ठाढ़ छलीह । आश्चर्य नेत्र मुँह खुलल ओ सभ बिसरि कऽ हुनका देखए लगला ।

किछु खास अन्तर तऽ नहि भेल अछि, एहिबीचमे देह किछु भरि गेल अछि, कतेक सुन्दर लागि रहल छथि, चेहरापर आत्मविश्वास अछि, मुदा ओहे बिनिता ।

'अहाँ....', बिनिता आश्चर्यमे छलीह, प्रभात डेराएल स्वरमे बजलाह, 'भौजी एतहि बैसा कऽ गेल छलथि ।'

बिनिता किछु सामान्य भेलीह । ओ कहलीह, 'तखन किऔ नहि बतौने छल, केँ अछि ? भौजी हँसि कऽ कहने छलीह, भीतर किऔ अहाँक प्रतीक्षामे अछि, हम बुझलहुँ कोनो मित्र बैसल हएत ।'

'हम की मित्र नहि, दुश्मन छी', प्रभात वातावरणकेँ हल्का करए चाहलाह ।

'बैसू', बिनिता बजलीह, तखने हुनक नजरि खिड़कीपर पड़ल ।

'... अहाँ तऽ खिड़की खोलि देलियै ।'

प्रभात सफाईसँ कहलाह, 'ओहिना देखि रहल छलहुँ, ५ बर्षसँ जाम पड़ल ई खुलैत अछि की नहि ।'

बिनिता बिहुँसलीह, 'तऽ अहाँ खोलिए देलियै ?'

'एखन बन्द कऽ दियै तऽ', प्रभात पसिना-पसिना भऽ रहल रहथि ।

'कथमति नहि', बिनिता हुनका लग आबि कऽ बैसि रहलीह, 'खुजले रहए दिऔ, कतेक बढ़ियाँ हावा आबि रहल अछि ।'

प्रभात सभकिछु बिसरि कऽ बिनिताक शरीरक सुगन्धमे हेरा गेलाह । ओ हुनकर हात अपना हातमे लऽ कहलाह, 'आश्चर्य अछि, बहुत सहज ढंगसँ खुजि गेल ।'

बिनिता बिहुँसलीह, 'बड़का-बड़का बात बराबर एकटा कमजोर कमानीपर सन्तुलित रहैत अछि ।'

तखने भौजी जलपान लऽ कऽ प्रवेश कएलन्हि, आ दुनूकेँ एकसँग सोफापर बैसल देखि कऽ चहकलीह, 'तऽ खूब बात भऽ रहल अछि पूरे ५ बर्षक बाद... अरे ई खिड़की कोना खुजि गेल ?'

प्रभात माथ भुका लेलन्हि । बिनिता बजलीह, 'भौजी, खिड़की स्वयं हिनकासँ खोलबा लेलक । आब खिड़की खुजि गेल ।'

दोसरदिन प्रभात बिनिताक सँग दाङ्गबला बसक प्रतीक्षामे यात्री प्रतिक्षालयमे बैसल छलाह। समानो ओतहि राखल छल। बिनिताक भैया-भौजी हुनका बस स्टैण्डधरि पहुँचाबए आएल छलाह। ओहो सभ बहुत प्रसन्न रहथि। ५ बर्षकें बाद सही, बहिनक घर भेटल आब सभ सामान्य भऽ जाएत।

भैया टिकट कटाबए काउन्टर पर गेल छलथि। भौजी कनी फल किनए गेलथि तखने प्रभात अवसर पाबि कऽ पुछलन्हि, 'बिनिता हम एखनो आश्चर्यमे छी, ५ बर्षसँ बन्द पड़ल खिड़की एतेक सहजसँ कोना खुजि गेल ?'

हुनका आँखिमे आँखि तकैत बिनिता बिहुँसलीह, 'हम प्रत्येकदिन एक-दू घण्टा लेल खोलि दैत छलहुँ, अहाँक दिससँ।'

'ओह ! प्रभात बिहुँसला, तऽ ई बात छल ? आखिर खोललहुँ अहीँ ने।'

'वाह हम किए', बिनिता सेहो हँसि कऽ बजलीह, 'अहीँ तऽ खोललहुँ अछि अहाँ हारि गेलहुँ।'

'हम हारलहुँ कहाँ...', प्रभात हुनकर हात दबौलन्हि, 'हम जीत गेलहुँ।'

'सच पूछी, हम दुनू मिल कऽ खोललहुँ अछि। बुझैतछियै काल्हि वैशाख ११ गते एतए समय पुछए आएल छलहुँ, एहि स्थानपर किछुदेर बैसल छलहुँ। सोचलहुँ, अहाँक घरपर जा कऽ बितल ५ बर्षक हिसाब कऽ ली आ फेर दाङ्ग जा कऽ अपन एकांकी जीवनकें नवढंगसँ शुरुवात करी। मुदा अहाँक ओहिठाम गेलहुँ तऽ ओ पुरान हिसाब नव खातामे चालु भऽ गेल।'

'ई हिसाब आब साफ होबएबला नहि', बिनिता बिहुँसलीह, 'ई तऽ बढ़िते रहत, चक्रबृद्धि ब्याज जकाँ।'

भौजी फल लऽ चलि आएल छलीह। बसक कन्डेक्टर गाड़ीमे बैसबाक लेल हल्ला कऽ रहल छल।

♦♦

प्रिय सखी

कतेक रहस्यसँ भरल अछि ई डायरी, जेकरा एतेक बर्षसँ ओ हृदयसँ लगौने घूमि रहल छथि। जे ककरोसँ नहि कहल गेल ओ आकार लैत रहल एहिमे। सभ सम्बन्धमे जखन घुन लागि जाएत, दम तोड़ैत मित्रताक बीच जखन लागे हमर अस्तित्व नहि अछि, जतए लोकक महत्वाकांक्षा धीरे-धीरे स्वार्थमे बदलए लागए आ ओहीबीच हमर एकाकीपन उदासीक बाँहि पकड़ैत धकलैत हमरा रुमधरि खीच लबैत अछि। तखन बुझाए लगैत अछि, एहि संसारमे हमर ककरो आवश्यक्ता नहि, सभ तथाकथित सम्बन्धक नीव बहुत कमजोर अछि। एकबेरमे भरभरा कऽ ढहि जाएत, सोचि कऽ हम क्रमशः कटए लगैत छी। फुलझरी बनि कऽ छुटैत हँसीक एक-एक दृश्य छाउर बनैत गेल। अचानक एकदिन अनुभव भेल, किए भ्रममे जीएल जाए ?

लोक हमरा पसिन करैत अछि ? झूट अछि ई सभ, स्वयंकें धैर्य देबाक लेल एकटा शब्द, बर्षोबाद नहि ओहि सम्बन्धमे गहिराइ नजरि अबैत अछि आ नहि विस्तार।

बोले रे पपिहरा, पपिहारा....बाणी जयरामक पंक्तिकें गुनगुनाइत हमर बेचयन मोन बेर-बेर इहे सोचैत जाइत अछि, विधाता महिलाक

भाग्यमे पपिहे जकाँ अतृप्त प्यासल रहब लिख कऽ एहि संसारमे पठबैत अछि । पूरे संसार, जखनि गरजैत वादल वा अंगौठी मोड़ करैत हावासँग बर्षाक आनन्द उठा रहल अछि, एहन रमणीय परिवेशमे पपिहा अपन मोनक प्यास बुझाबएकेँ लेल 'पी' केँ, किए रट लगा रहल अछि ?

ठीक इहे स्थिति एकटा भरल पुरल परिवारमे महिलाक नहि होइत अछि ? जाहि परिवारकेँ सन्तुष्ट रखबाक लेल हम पूरे ताकत झोंकि देलहुँ, ओहे लोक बात-बातपर ताव खाइत रहैत छथि । 'पी' शब्दक अर्थ हम आईधरि नहि बुझि पेलहुँ ।

मुकेश कि कहने रहथि, स्मरण आबए लागल ओ पंक्ति, 'अहाँक हरेक आक्षेपकेँ स्वागत, हरेक सुझाव माथपर, अहाँक अनुसार बदलि कऽ हमरा बढ़ियाँ लागत । हम ककरो भावना तथा विश्वासकेँ ठेस नहि पहुँचा सकब, विश्वास करु, आ ठीक इहे चीज स्वयंकेँ सँग सेहो यानी अपन भावना आ विश्वासपर ककरो कनिको ठेस बरदास्तसँ बाहर, फेर अहाँ तऽ मात्र अहाँ छी, हमर स्वीट हार्ट...।'

एहितरहक बहुतरास एसएमएसक पंक्तिकेँ कतेकोबेर पढ़लहुँ, ओतेकबेर मुँहपर प्रसन्नता आबि जाइत छल ।

'मिनाक्षी, अहाँक म्यासेज पढ़एसँ जे आनन्दभूति वा स्फूर्ती अनुभव होइत अछि, ओ कोनो पवित्र नदिमे नेहाएबलाकेँ भाग्यमे सेहो नहि होइत हएत', पूरा म्यासेजबक्स जेना इन्द्रधनुष बनि गेल छल, जाहिमे दृश्य रंगक सँग-सँग अदृश्य किरण सेहो छल ।

एहितरहेँ अनेक सन्देशक आदान-प्रदान चलैत रहल । मुकेश आइआइटी एमटेकक बिद्यार्थी रहथि । जखन हमर बिटेकक फाइनल छल । हमर मित्रता अनायास इहे लेखनकेँ सँग भेल छल । जखन एकटा समारोहमे अपन कविता सुनौने छलहुँ आ घूरि कऽ डायरीमे लिखने रही ।

एकटा मीठगर स्मरणीय दिन, सुखद अनुभव भड़ल साँझ, अन्तरंगतासँ

लकदक दूटा मोन, मित्रताक गहन अनुभूतिक विलक्षण आ अदभूत अनुभव, एक दोसरकेँ गतिविधिक नापैत जोखैत दू जोड़ी आँखि आ स्नेही तागासँ गुथल दूमोन, कि इहे प्रेम अछि ? यदि अछि तऽ लगैत अछि, जीवनक सभ दौड़ादौड़क बादो भीड़ भड़ल संसारमे माथ नुकाबएकेँ लेल एकटा पसिनक कोनो कोना मिल गेल अछि जेना ।

उत्सुक मोन आ जिज्ञासु आँखि आगा बढ़ैत रहल, स्मरण अछि ओदिन जखन शरीरक अंग-अंगमे चञ्चलताक सम्राज्य छल । स्मरण अछि, ओ मौसम जकर स्वागतमे डायरीक प्रत्येक पन्ना शब्द आ भावक मुखड़ा सजाबएकेँ लेल बिहुँसि रहल छल, जाहिपर प्रत्येक गते रत्नजड़ित औँठी जेहन चमचमाइत छल, जे ऋतुकेँ आगमनक विश्लेषणमे मौसम विभागक सूचनाकेँ पाछु पारएमे सामर्थ्य छल ।

हावाक हरेक झोंकामे भड़ल होइत छल ताजगीक लहरि, जाहिसँ तनमनमे अजीबसन मचलन आ थीरकन ठुनकए लगैत छल । स्फूर्तीसँ रोइयाँ-रोइयाँ ठाढ़ भऽ खिलए लगैत छल । हावासँ झरि कऽ सड़कपर बिछाएल पातपर बाट चलैत लोककेँ पदचापसँ उठि रहल खटखटाहट सेहो पसिन पड़ैत छल । नीचा लुढ़कल हावासँ उछाल मारैत पातक बीचसँ बहैत हावाक सरसराहट, वादलक मधिम गतिसँ हात पयर पसारि कऽ अँगौठी मोड़क आ हावासँ झुमैत रहब, गाछक ताण्डब नृत्यकेँ आँखिसँ देखबाक लेल प्रतीक्षारत मोनकबात ककरासँ शेयर करी, से डायरी बनि जाइत छल - सभसँ प्रिय सखी ।

शब्दक रेलमपेल, ढेर शब्द, तीब्रगतिसँ एम्हर उम्हर उज्जर पन्नापर बिछाए जाएकेँ लेल अती व्याकुल रहैत छल । प्रकृतिक करिश्मा छुबएकेँ लेल सचेष्ट हमर कान चिड़ैकेँ आवाज सुनएमे लगैत रहैत छल । कखनो लहरिपर, लहरि लेपटाएल साड़ीकेँ प्लेट खोलैत नदिक सरगम सुनाए लगैत आ ओहि सुरसंगममे ताल बैसा कऽ गुनगुनाएवए लगैत छलहुँ । मोन करैत छल, हात पयर पसारि कऽ आँखि मुनने ओहि नदिकेँ

विस्तार आ गहीरमे बिसरा दी स्वयंकें। दुनू मोहारकें जोड़ैत पानिमे डुब्की लगाबएकें मोन करैत छल। कोनो नेचुरल सेतु होइक आ ओ ओहि लहरदार नदिपर घूमिकऽ ओकर ओर-छोर छुइब कऽ अबितथि। हावाक मनोरम सुन्दरसन सुगन्धकें अपन भीतर स्थायी स्थान दऽ पबितथि।

हँ, हमर प्रिय डायरी, ई बहुत मूल्यवान वस्तु अछि जाहिसँ अपन सभकिछु कहि कऽ बिहुँसि सकैत छी, तनावमुक्त भऽ सकैत छी, अपन बोझ उतारि कऽ हल्का भऽ सकैत छी, जेकरा पढ़ैत पुरानमे जिएल समयकें फेरसँ हरिआ सकैत छी, जाहिमे अछि मुकेशसँ प्रेम करएसँ लऽ कऽ विवाहक कथा, एकदिस सपनाक संसारसँ चकाचौंध पूरे ठाटबाटसँ विराजमान, दोसरदिस विवाहसँ पहिने मुकेशक प्रेम।

'आइ लभ यु टू मच...', बजैत-बजैत अचानक मुकेशक बाँहिएक जोड़ गलत दिसामे जाए लागल। शरीरक अंग-अंगमे मुकेशक संस्पर्श बढ़ैत गेल। होस्टलक रुममे रहल देबाल, हमर ई मिलनक मुक साक्षी बनल। उड़ैत क्यालेण्डरक खरखराहट, पढ़एबला टेबुल आ ओहिपर राखल टेबुल ल्याम्प, बगलमे रहल रेडियो, आँखि अनायास नम भऽ गेल।

हम भरल गलासँ कहलहुँ, 'मुकेश, विवाहसँ पहिने एना कोनो हालतमे नहि करबाक चाही।'

'डन्ट वी सिल्ली डियर, हम कोनो कतहुँ भागल थोड़हे जाइत छी, अहींकें एहि हृदयमे...', कहैत मुकेश हमर बाँहि थपथपा देलथि, 'एतेक पढ़ल लिखल होइतो एहन छोट-मोट चीजक पश्चाताप, अहाँक बीना नहि जीएल जाइत अछि, हमर ई शरीर हरेक समय मँगैत रहैत अछि। प्लीज, विश्वास करु, दोसर महिना हम विवाह कऽ रहल छी।'

विवाहक बात सुनिते पापा बजलाह, 'एखने सोचि लिअ बेटी, सहीमे हमरा मुकेश कतहुँ प्रगतिशील लड़का नजरि नहि अबैत छथि, घर

परिवारक स्तर सेहो साधारण अछि, सोच सेहो परम्परागत...तोरा बुझल छौक, ओकर माय बाबू दहेजक नामपर लाखोक सामान माँगि रहल अछि, हमर इन्जिनीयर बेटी आ एतेक लाखक सौदा...,' बजिते-बजिते पापाक गला रुकि गेलन्हि, ओ उदासीमे लेपटाएल पुतला बनि गेल छलथि।

'पापा हमसभ एकहुँटा पैसा नहि देब, फेर चाहे विवाह हुए वा नहि, मुकेश चाहता तऽ विवाह कोर्टमे वा मन्दिरसँ सामान्य तरिकासँ हएत, हँ।'

दू शब्द हमर बात सुनि कऽ पापा किछु नहि बजलाह। मुदा मुकेश ओहि बातकें गाँठ बान्हि लेलन्हि आ जखन-तखन दहेजक मुद्दापर, अहाँ घरक लोक किछु नहि देलक कहि उक्टापैची करैत रहैत छथि।

विवाहक किछु महिनाक बादे मुकेशक असलीरुप खुलि कऽ आगा आएल। जल्दिए ई सत्यताक अनुभव भऽ गेल। भलेही एहि घरमे माथ राखि ली मुदा ई माथ राखएकें शर्त मालिक यानी मुकेशे तय करताह। ओ मालिक बनल अपन हातमे अधिकारक लाठी रखैत छथि, जिनका जेना चाही अपन सुविधा आ सहुलियतसँ चलबैत रहैत छथि। जखन कखनो हम हुनक अधिकार क्षेत्रमे घुसएकें चेष्टा करैत छी, ओ झटकि दैत छथि। जीवनक आधा समय अफिसमे आ बचल खुचल समय घरपर रहि कऽ खौंजाए आ झगड़ा करएमे बितैत अछि। बराबर कोनो नहि, कोनो बातपर झगड़ा भऽ जाइत अछि, लगैत अछि जेना समय रुकि गेल हुए।

ओ कोनो बातपर घेरए लगैत छथि, 'ई की फेर ओहे कम्प्युटरबला बेमारी पालि लेलुहँ, कतेकदिन घरसँ बाहर रहब', ओ तनतनाइत जोरसँ बजलाह आ जकरा सुनिते हड़कम्प मचि जाइत छल।

'ई कोनो बेमारी नहि, हमरा अफिससँ पठाओल जा रहल अछि एकटा ट्रेनिङ्गपर', एक-एक शब्दपर आत्मविश्वाससँ भरल पोटरी खोलैत बजलहुँ हम।

'तऽ अहाँ अस्वीकार किए नहि कऽ देलीयै ?'

'एतेक बढ़ियाँ अवसर भेटल अछि, एकरा मिस करएकें कोनो तुके नहि छल', आई हम पूरेबात कहएकें जिद्द ठानि लेने छलहुँ।

'मात्र इहे सभ करैत रहूँ बहुत अबेरधरि बाहर, हमर जीवन बरबाद करैत रहूँ ?'

'हमर नोकरीक आवश्यक भाग अछि कम्प्युटर ज्ञान....'

पूरे बात सुनने बीना ओ बरबराए लगलाह, 'अहाँकें कें बुझाबे, माथापिच्ची करए, हरेकसमय अपन मोनकें चलबैत छी, गजबकें महिला छी।... अहाँ अवश्य अपन ईच्छा व्यक्त कएने हएब, बात ओतेक सरल नहि अछि जतेक बता रहल छी, मेनुपुलेट कऽ कऽ कहैत छी अहाँ बात, आखिर किए ?' ओ अँठि कऽ बजलाह ।

'आखिर अहाँ कहए कि चाहैत छी, कि खराबी अछि सीखएमे ?' एहिबेर हमहुँ तएसमे चलि आएल छलहुँ ।

'प्रश्न खराब आ बढ़ियाँकें नहि अछि, ई सीख कऽ अहाँ कइए की लेब ? कमाएकें नव चीज तऽ नहि बनल, अहाँक विभागमे लोक कतेक-कतेक कमा रहल अछि, एकर अनुमान अछि अहाँकें ? किए नहि एहन स्थानपर बदली करा लैत छी उपरसँ चारि पैसा आबे हातमे', एहिबेर एक-एक शब्दपर वजन रखैत बजलाह ओ।

'हम नहि चाहैत छी एहि ढंगसँ पैसा कमाए, ई नहि हमर स्वभावमे अछि आ नहि असुलमे ।'

'बेकारकें ढकोसला पालैत छी, मालिकी झारएकें आदत परि गेल अछि अहाँकें। फालतुकें बात करैत छी...' हुनक आबाजमे तिरस्कारक भाव आबए लागल छल।

सुनल अनसुनल कऽ कऽ हम भानस घरमे चलि गेलहुँ आ हम रातिकें भोजन बनाबए लगलहुँ।

'ई की, सिमला मीर्च एतेक कारी कोना भऽ गेल। तेज आँचमे जरा

देलहुँ ने। कोनो स्वादे नहि अछि।' मुँह बिचकौने घृणासँ बजैत कहलाह, 'काममे हड़बड़ी अछि ने इहे कारणसँ अधे घण्टामे भोजन बना लैत छी ?'

सुनिते पूरे मुड चौपट्ट भऽ गेल, भोजनक इच्छे मरि गेल, मुकेशक बातक चीरा जे लागि गेल छल । भीतर जाहिसँ लहुलुहान होइत जा रहल छलहुँ, स्वयंकें टुकड़ा-टुकड़ामे उड़ैत अनुभव भऽ रहल छल। बुझि नहि पाबि रहल छलहुँ, स्वयंकें कोना समेटु ? विश्वास, नेह आ आत्मियताक सुगन्ध अनायास दुर्गन्धमे बदलैत गेल। मुकेशक दिमागमे हरेकसमय पैसा कमाएकें भुत सवार रहैत छलन्हि। रहनसहनमे आधुनिकता मुदा भीतरसँ ओतबे छोट, संकरा आ घोरसामन्ती। बाहरी कपड़ा उतारि दी तऽ सय प्रतिशत अवसरवादी पुरुष। इहे सोचि-सोचि कऽ हमर स्वभावक, हमर चञ्चलता, मस्ती अपनापनकें असमय सुखा रोग लागि गेल छल।

'सुति रहलहुँ की ?' निन्नमे डुबल आवाज सुनाइ देलक, आ मुकेशक संस्पर्श बढ़ए लागल तऽ चौंक कऽ हम आँखि खोलि देलहुँ, 'हँ ...., इम्हर आउ कनि...'

यानी एतहुँ प्रयोज्य वस्तु ? मोन विचार आ सोँचक बेकद्री मुदा शरीरक प्रयोग, दुनू कतेक अलग-अलग चीज अछि, मोन आ शरीरक जुड़ावपर मात्रे संगती बैसैत अछि मुदा एतए सभ उल्टा पुल्टा, तऽ की शरीरक प्रयोग मात्र निन्नक लेल। कुदैत रहल प्रश्ने प्रश्न, नहि संगी नहि सहचर, नहि लार नहि दुलार, मान मनोबल, किछु तऽ नहि अछि, सीधा काज पूरा कएलहुँ आ निमाहि लेलहुँ पति पत्नीक सम्बन्ध यानी दैहिक रस्म अदायगी, तऽ आपसी सम्बन्ध शरीरेधरि टिकल अछि, मोन आत्मा जेहन बात चुपचाप कोनामे राखि देल गेल अछि, तऽ कि इहे अछि दाम्पत्यक परिभाषा ? रातिभरि प्रश्ने प्रश्न झिंगुरक आकारमे बजैत रहल। ♦♦

मैडम चौधरी

फोनक घण्टी अचानक रुमक शान्तिकेँ तोड़ि देने छल। रश्मी हड़बड़ाइते उठलीह आ आँखि मिरैत फोनधरि पहुँच गेलीह। एतेक भोरे कें भऽ सकैत अछि, हुनक हाथ किछु डर आ किछु तामसकेँ सँग रिसीभरधरि पहुँचल। अँगौठी मोड़ करैत रश्मी फोनक रिसीभर उठेलीह आ 'हेल्लो...' कहलीह।

.... फोनपर बात सुनिते हुनक चेहराक रङ्ग बदलि रहल छल, हाथ पयर काँपि रहल छल आ आँखि डरसँ आओर फैलि गेल छल। मात्र हुनक मुँहसँ एकटा शब्द निकलल,'...की ?'

एखन भोरक ६ बाजि रहल अछि। रातिखन अबेरसँ सुतलाक कारण रश्मीक आँखि खुलएमे कठिनाई भऽ रहल छन्हि। मुदा फोनपर भेटल समाचार, हुनक निन्द उड़ा देबाक लेल पर्याप्त अछि। पहिने तऽ रश्मीकेँ विश्वासे नहि भेल छल, मुदा फोन करएबला कोनो आओर नहि हुनकेँ अफिसक मैनेजर छलाह। ओहे बतौलन्हि, 'मैडम चौधरी इज नो मोर।'

रश्मी एकटा कम्पनीमे वेभ डिजाइनरक रुपमे कार्यरत छथि। काल्हिए तऽ ओ मैडम चौधरीद्वारा बजाओल गेल मिटिङ्गमे सहभागि भेल छलीह। मैडम चौधरीसँगे बहुत अबेरधरि बातचित कएने छलीह। मिटिङ्ग रातिक १० बजे सम्पन्न भेल छल आ घर पहुँचिते-पहुँचिते रातिक ११ बाजि गेल रहन्हि।

मैडम चौधरी जखन ई कम्पनीकेँ किनलन्हि तऽ रंग-रंगकेँ बात, हुनका विषयमे चलल छल। किओ हुनक चरित्रकेँ लऽ कऽ बात कएलन्हि, तऽ किओ हुनक पैसाकेँ लऽ कऽ, कारण सभ हुनक अतीतसँ परिचित छल। सुनएमे एतेकधरि आएल छल, एहि कम्पनीक मालिक मिस्टर सेठ मैडम चौधरीकेँ नाम, अपन कम्पनी हुनका गिफ्टक रुपमे देने रहथि। सेठकसँग मैडम चौधरीक सम्बन्धक चर्चा बहुत जोड़केँ सँग होइत अछि। मुदा समयक सँग-सँग सभ किछु दबि गेल। ओना पैसाबलाकेँ तऽ संसारे अलग होइत अछि। सेठसँगक सम्बन्ध जोड़ि कऽ एकटा साधारण घरक लड़की स्वेता चौधरी कखन मैडम चौधरी बनि गेलीह पत्ते नहि चलल।

आब ओ मैडम चौधरी, एकटा बड़का कम्पनीक अध्यक्ष छथि।

स्वेताक जन्म एकटा निम्न मध्यम वर्गीय परिवारमे भेल रहन्हि। हुनक पिता एकटा कारखानामे काज करैत छला। कनिक आम्दानीमे अपन कनियाँ आ दूटा बच्चाक सँग रहैत छलथि। स्वेता हुनक पहिल सन्तान छलीह। ओ अपन भाय आ माँ बापक चहेती छलीह। घरमे हुनका लक्ष्मीक रुप मानल जाइत छल। कहल जाइत अछि, जखन स्वेताक जन्म भेल रहन्हि, हुनक पिताकेँ बोनसक रुपमे एक सय रुपैया भेटल छल। स्वेताक पिताक लेल ई एकटा लौट्रीसँ कम नहि रहन्हि, कारण महिनामे ओ मात्र डेढ़ सय रुपैया कमाइत छलथि। एहिद्वारे ओ अपन बेटीक नाम लक्ष्मी रखने छला, मुदा लक्ष्मीकेँ स्वेता बनावएमे पूरा हाथ हुनक माँकेँ रहन्हि।

स्वेता एकटा वुद्धिमान आ तेज लड़की छलीह। देखएमे साधारण होइतो हुनका लग एकटा अलग मस्तिष्क रहन्हि, बच्चेसँ ओ अपन स्थितिसँ सम्झौता नहि कऽ सकलीह। हुनका अपन सपनापर विश्वास रहन्हि आ ओ बुझि गेल छलीह, संसारमे स्वयंकेँ स्थापित करबाक अछि तऽ पैसा आ प्रतिष्ठा दुनू बहुत आवश्यक अछि। ओ अपनासँ निम्न स्तरक लड़कीसँ कोनो सरोकार नहि रखैत छलीह। पढ़ाइमे तेज भेलाक कारण

ओ धनीक घरमे जा कऽ बच्चाकेँ ट्यूसन पढ़ावएकेँ काज हाथमे लेलीह । ओ हुनकसभक घर जाइत छलीह आ हुनक रहन सहन, हुनक पहिरन, हुनक खानपानकेँ बहुत गम्भीरतासँ देखैत रहैत छलीह आ स्वयंसँ प्रण करैत छलीह, एकदिन हमरो एहन बनबाक अछि ।

कहिओ-कहिओ एहन कोनो परिवारसँ हुनका पुरान कपड़ा पहिरएकेँ भेटि जाइत छल, ओ स्वाभिमानकेँ मारि कऽ हुनकासँ कपड़ा अवश्य लैत छलीह मुदा मने मोन स्वयंसँ कहैत छलीह, एकदिन ई कपड़ा हुनको ककरो देबाक अछि । स्वेता ट्यूसनक सँग-सँग बिए आ फेर एमए कएलीह । हुनका एकटा प्रेसमे प्रुफ रिडिङ्गक नोकरी भेटल । एहिसँ स्वेताक पिताकेँ प्रशन्नताक ठेकान नहि रहलन्हि । ओ सभकेँ कहैत छलथि, 'हमर बेटीकेँ पूरे २ हजार रुपैयाकेँ नोकरी भेटल अछि ।'

एहि नोकरीसँ जतए पिता प्रशन्न छलथि ओतहि माँ आ स्वेता बहुत निरास । स्वेता अपना लेल एहन सपना नहि देखने रहथि, जतए ओ दू हजारसँ शुरु कऽ अपन माता पिता जकाँ घिसैत, तितैत जीवन जीबथि । मुदा स्वेता एतेक तऽ अवश्य बुझैत छलीह, ई तऽ प्रारम्भ अछि, एखन स्थान बहुत दूर । स्वेता ट्यूसन पढ़ावएकेँ काज एखनो जारी रखलथि ।

स्वेता सेठ जीकेँ बेटीकेँ पढ़ावए हुनक घरमे जाइत छलीह आ ओतहिसँ हुनक परिचय सेठजीक सँग भेल । स्वेता बराबर सेठ जीकेँ अपना दिस निहारैत देखैत छलीह । कतेकबेर तऽ सेठ जीक कनियाँ घरपर नहि भेटैत छलीह । एकबेर तऽ स्वेता जखन हुनक बेटीकेँ पढ़ा रहल छलीह तऽ नोकर हुनका लग आबि कऽ सेठ जीकेँ सन्देश देलन्हि, 'सेठजी हुनका अपना रुममे बजा रहल छथि ।'

डेराइते-डेराइते स्वेता हुनक रुममे गेलीह । हुनक रुमक साज सज्जा देखि कऽ हुनका सिनेमामे देखाएल कोनो भव्य सेटक स्मरण आबि गेल, जेकरा ओ कल्पनाक संसारमे बराबर देखैत रहैत छलीह । स्वेता किछु सोँचि कऽ आगा बढ़ि रहल छलीह । सेठ जी बहुत प्रेमसँ हुनका अपना लग

कुर्सीपर बैसएकेँ इसारा देलन्हि । स्वेता कनिक लाजकसँग कुर्सीपर बैसि रहलीह । मिस्टर सेठ हनका एकटा लिफाफ दैत कहलन्हि, 'ई अहाँक पैसा अछि.... आ बच्चा तंग तऽ नहि करैत अछि ?'

स्वेता नहिमे माथ हिला देलन्हि । ओ एखनो डरलसन सिकुरल बैसल छलीह । अचानक हुनक हाथपर सेठ जी अपन ठन्ढा हाथ रखलन्हि, स्वेता एहिकेँ लेल तैयार नहि छलीह । ओ तीब्र गतिसँ अपन हाथ खिचलीह आ उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलीह । सेठ जी आगा बढ़ि कऽ हुनक माथपर अपन हाथ रखलन्हि आ प्रेमसँ बजला, 'देखू, अहाँकेँ हमरासँ डरबाक आवश्यकता नहि । हम तऽ मात्र मदत करए चाहैत छी । यदि कोनो चीजक आवश्यकता हुए तऽ हमरा लग चैलि आबि । आब अहाँ जाउ, बच्चा अहाँक प्रतीक्षामे हएत ।'

स्वेता जखन ओतएसँ भगलीह जेना बाघक चंगुलसँ निकलि कऽ हरिण । बच्चाकेँ लग पहुँच कऽ मात्रे हुनका जानमे जान आएल । ओहिदिन ओ बच्चाकेँ कि पढ़ौलीह, किछु स्मरण नहि रहल । रहि-रहि कऽ सेठजीकेँ ओ वाक्य, 'यदि कोनो चीजक आवश्यकता हुए तऽ हमरा लग चैलि आबि' हुनक पूरे भीतर पैसि गेल छल ।

एहिना दिन बितैत गेल । स्वेता हुनक घर अबैत रहलीह । सेठजी अपन बेटीसँ स्वेताक विषयमे पुछथि रहैत छलथि, आ कतेकोबेर तऽ स्वेता पढ़वैत समय हुनका लग जा कऽ बैसि रहैत छलाह । अचानक हुनका अपना बेटीमे किछु बेसी चिन्ता देखाए लागल रहन्हि । स्वेता ई परिवर्तनकेँ देखि रहल छलीह । ओ अनुभव सेहो कऽ रहल छलीह, सेठ जीक हुनका दिस किछु बेसीए झुकाब भऽ रहल अछि आ एकदिन सेठ जी स्वेताकेँ हाथ पकड़ि लेलन्हि आ अपना बाँहिमे धऽ लेलन्हि ।

ओहिदिन ओ अपन बेटीकेँ कनियाँक सँग मामा गाम पठा देने रहथि आ स्वयं रुममे बैसि कऽ स्वेताक आवएकेँ प्रतीक्षा करैत छलथि । नोकरकेँ सेहो बजार पठा देने रहथि । सेठजी एहि अवसरकेँ हाथसँ नहि जाए देवए

चाहैत छलथि । ओना स्वेता सेहो अपन सभ किछु बर्बाद कऽ कऽ सेठजीसन धनाढ्य व्यक्ति अपन जीवनमे पाबि लेने छलीह ।

एतहिसँ स्वेताकेँ, स्वेता चौधरीसँ मैडम चौधरी बनएकेँ यात्रा प्रारम्भ भेल रहन्हि ।

अचानक कल वेल बाजि उठल । रश्मी कनिक डेरासन गेलीह । ओ तखनसँ रिसीभर हाथमे रखने ओहिना सोफापर बैसल छलीह । ओ जल्दिसँ रिसीभर राखि कऽ गेट खोलए चैलि गेलीह । ओतए मिली ठाढ़ छलीह । मिली हुनका देखिते किछु धरफरा कऽ हुनका हिला कऽ पुछलीह, 'अहाँ तऽ ठीके छी ने । कखनसँ फोन कऽ रहल छी, अहाँक फोन तऽ बीजी बता रहल अछि । एतेक भोरमे ककरासँ बात कऽ रहल छलहुँ.... रश्मी, अहाँकेँ मैडम चौधरीक विषयमे किछु पत्ता चलल, हमरा तऽ विश्वासे नहि भऽ रहल अछि ।'

रश्मी मिली दिस तकलीह आ फेर सोफापर बैस रहलीह ।

'काल्हिए राति तऽ हम दश बजेधरि मिटिङ्गमे हुनकासँग छलहुँ आ अचानक भोरे उठिते ई सुनएकेँ भेटल,' रश्मी मिली दिस देखैत बजलीह ।

'अहाँकेँ केँ कहलक ?' मिली रश्मी दिस तकैत प्रश्न कएलीह ।

'अफिससँ मैनेजर सर ।'

'ओ पूरा बात कहलन्हि की ?'

'पूरा बात... मतलब .... ?'

'इहे कि, मृत्यु कोना भेलन्हि ?'

रश्मी आब मिलीकेँ एकटक प्रश्न भड़ल आँखिसँ देखि रहल छलीह ।

'कोना भेल ?'

'रातिमे किओ हुनका हत्या कऽ देलक अछि ।'

'की...???'

रश्मी एहि बातक लेल तैयार नहि छलीह । हुनका विश्वास नहि भऽ रहल रहन्हि, मैडम चौधरीकेँ किओ ओहिना मारि देत ।

'यार, दुष्मनो तऽ ओ बहुत बना लेने छलीह ।'

मिली रश्मीकेँ हाथ पकड़ि कऽ बजलीह, 'बुझल अछि, हम हुनका घरसँ आबि रहल छी । हम तऽ भोरे ६ बजे चलि गेल छलहुँ । किशनकेँ जाएकेँ छलन्हि हुनकेँ सँग चलि गेलहुँ ।' किशन आ मिली दुनू मैडम चौधरीकेँ लग कार्यरत छलथि । किशन जतए सेल्स मैनेजर छलथि ओतहि मिली रश्मीकेँ सँग वेभ डिजाइनिङ्ग विभागमे छलीह ।

'एँ, आओर केँ केँ पहुँचल छथि ओतए ?' रश्मी पुछलीह ।

'करीब-करीब पूरे स्टाफ बुझि लिए । हम जखन अहाँकेँ नहि देखलहुँ तखन फोन कएलहुँ फोन बिजी आबि रहल छल, से अहाँकेँ लेबए आएल छी । चलु कनिक जल्दि तैयार होउ । हमरासभकेँ ओतए रहबाक चाही ।'

तैयार भऽ कऽ जखन मिली आ रश्मी ओतए पहुँचलीह तऽ बहुत लोक जम्मा भऽ चुकल छल । भीतरक रुम पुलिस सील कऽ देने छल आ लाशकेँ पोर्ष्टमार्टमक लेल अंचल अस्पतालमे पठा देने छल । मैडम चौधरीक पिता ओतए बैसि कानि रहल रहथि । हुनक भौजी आ बच्चा ओतहि छल । भाय सायद अस्पताल गेल हेताह ।

चारु दिस लोक फुसुर-फुसुर करैत बतीआ रहल छल । किओ तऽ एतेकधरि कहि रहल छल, '..जे हो न हो, मिसेज सेठे मरवेने हेतीह ।'

'...जेहन करनी ओहन भरनी ।'

'पूरे उमेर दोसरकेँ धनपर ऐस नहि कएल जा सकैत अछि ।'

'भगवानक घरमे देर अछि, अन्हेर नहि ।'

'सेठजीक कनियाँक आह बेकार नहि गेल ।'

रश्मी आ मिली एकटा कोन्हमे ठाढ़ भऽ सभबात सुनि रहल छलीह । हुनकासभकेँ विश्वासे नहि भऽ रहल रहन्हि, इहे लोकसभ जे मैडम चौधरीकेँ आगा पाछु घूमैत रहैत छल । हुनक आगा कतेक मीठ-मीठ बात करैत रहथि । आई हुनक मृत्युक बाद सभकेँ भीतर रहल सत्यता उजागर भऽ गेल ।

एतबेमे किशन ओतए चलि अएलाह। मिली आ रश्मीकेँ घर जएबाक लेल कहैत ओ बजलाह, 'अन्तिम संस्कार साँझमे हएत। तखन अहाँसभ चलि आएब।'

'केँ कएने हएत ई सभ, की पुलिसकेँ कोनो सुराग हाथ लगलैक अछि,' रश्मी किशनसँ पुछलन्हि।

'नहि, पुलिसकेँ शंका अछि काज करएबला नोकरपर। ओकर खोजी भऽ रहल अछि, ओ नहि देखा रहल अछि।' ई कहलाक बाद किशन ओतएसँ चलि गेलाह।

मिली रश्मीकेँ अपनासँग अपन घरेपर आनि लेलीह। दुनू चाह पिबैत मैडम चौधरीक विषयमे बात करैत रहलीह।

अचानक रश्मी बहुत दार्शनिक भावसँ बजलीह, 'यू लभ हर एण्ड यू हेट हर बट यू कान्ट इगनोर हर।'

मैडम चौधरीक अफिसमे राज चलैत छल। ओ आबि जाइत छलीह, सभ अपना-अपना काजमे दत्तचित भऽ कऽ काज करैत छल। काजक सँग ओ कोनो सम्झौता नहि करैत छलीह। स्वयं सेहो जुटि कऽ काज करैत छलीह। दोसरोसँ ओ एहने अपेक्षा रखैत छलीह।

साँझमे मिली आ रश्मी अन्तिम संस्कारमे सहभागि भेलीह। बहुत भीड़ छल। आगि हुनक पिता कनैत लेने छलथि। पिते माने हुनका जाएसँ दुःखीत छलथि। शेष पूरे परिवार औपचारिकता मात्र निमाहि रहल छल। अबेरराति जखन घर आबि नहा धो कऽ रश्मी अपन ओछायानपर बैसलीह तऽ मैडम चौधरीक चेहरा रहि-रहि कऽ हुनक आगा आबि जाइत रहन्हि।

सोचैत-सोचैत ओ कखन सुतलीह पते नहि चलल। भोरमे जखन निन्द खुजल तऽ टिभी सेहो चलि रहल छल आ बलो जरि रहल छल। समय देखलन्हि, सात बाजि रहल छल। रश्मी हाथमुहँ धो कऽ चाह बनाबि अखबार लऽ बैसि रहलथि। अखबार पढ़िते हुनकर होस उड़ि गेल रहन्हि।

अखबारमे मैडम चौधरीक चरित्रकेँ खूब धज्जी उड़ाओल गेल छल। मैडम चौधरीक अतीत आ सेठजीसँ नजदिकीकेँ लऽ बहुत बात लिखल गेल छल। हुनक व्यक्तित्वक ई विशेषता, जे अखबारबला बराबर छपैत रहैत छल से आई नहि छल। आई ओ एकटा कुशल व्यवस्थापक, एकटा निपुण आ कर्मठ महिला नहि बल्कि नव जवानाक ओहन महिला छलीह, जे किछु पाबएकेँ लेल कोनो तरहक सम्झौता कऽ सकैत छलीह। जकर सफलताक सिढ़ी चढ़बाक लेल हरेक प्रकारक सर्त स्वीकार छल।

रश्मी अखबारकेँ एकदिस राखि कऽ बैसि रहलीह, हुनका मोनमे एक्केटा प्रश्न रहि-रहि कऽ घूमि रहल रहन्हि, सेठजी विवाहित भेलाक बादो अपन धनीकीकेँ आड़मे जीबैत रहलथि आ मरबो कएलथि तऽ कोनो तरहक प्रश्न नहि उठल। मैडम चौधरी हुनक रखैल होएबासँ लऽ कऽ नहि जानि कि-कि विशेष नाम अपना लेल अर्जित कऽ लेलन्हि। बाह रे! हमरसभक समाज। जतए महिल आ पुरुषकेँ मापएकेँ मापदण्ड कतेक अलग-अलग अछि।

रश्मीकेँ मोन आक्रोशसँ भरि जाइत छन्हि आ ओ सोचि रहल छथि, समाजमे परिवर्तन कहाँ आएल अछि, महिला कतए स्वतन्त्र अछि, ओकरा देखए बुझएकेँ नजरि कतेक पूर्वाग्रहसँ भड़ल अछि। मैडम चौधरीसँ डेराएबला लोको आई हुनक धज्जी उड़ा रहल अछि। कतहुँ ओ सभ अपन हिनग्रन्थीकेँ तऽ सकुन नहि पहुँचा रहल छथि? रश्मीकेँ लगलन्हि, मैडम चौधरीक मृत्यु स्वेताकेँ पुनः जीबित कऽ देलक अछि। स्वेता एक निम्न मध्यवर्गीय लड़की छलीह। हुनका विषयमे किओ किछु कहि सकैत छल, किओ किछु लिख सकैत छल। मैडम चौधरीक विषयमे लिखबाक लेल हुनक शरीरक सँग-सँग हुनक नाम आ पोजिसनकेँ पहिले माड़ए पड़त। आई समाज ई सभकेँ एकसँग मारि कऽ एकसँग जरा देलक अछि आ रहिगेल अछि बस मात्र एकटा नाम-स्वेता चौधरी, मात्र स्वेता चौधरी!

◆◆

बदलैत मौसम

२५ बर्षक बाद हुनक स्मरण आई, एहितरहेँ किए आबि रहल अछि ? स्मरण तऽ ओ पहिनहो अबैत रहैत छल आ ओहो । हँ, सीमा सेहो आ परी सेहो । दुनूकेँ स्मरण कहिओ-कहिओ अपन नियन्त्रणमे लऽ लेलक हुनका, मुदा एहि क्रममे कहिओ एना नहि भेल, हुनका बेचयन होबए परए ।

कि ओहो हुनका स्मरण कऽ रहल हेतीह ? कतहुँ तऽ हेतीह दुनू ? कतए हेतीह ? ककरोसँ पुछने नहि छथि, किओ बतेबो नहि कएने अछि ।

समय मलहम होइत अछि । मलहम नहि होइत समय तऽ की घाउ भरैत ?

जीवन अछि । जीवनमे सभकिछु इच्छा अनुकूल कहाँ होइत अछि ? किछु घटना वा अवस्था जीवनकेँ झकझोरि दैत अछि । सभकिछु हिल जाइत अछि । जीबएकेँ इच्छा हारि जाइत अछि मुदा जीबए तऽ पड़वे करैत अछि ।

जीवन रुकैत नहि अछि, चलैत रहैत अछि, स्वचालित घड़ी जकाँ । चलिते तऽ आएल छथि, बितल २५ बर्षसँ जखन की एकरा रुकि जएबाक चाही, एक झटकामे ।

जखन-जखन जीवनक गतिमे एकटा गति आबए लगैत अछि, तखन नहि जानि किए ओकर पहिआ कोनो नहि कोनो व्यवधानक शिकार भऽ जाइत अछि । कखनो एक पहिआ, कखनो दू पहिया ।

सीमा हुनक जीवनमे बच्चेसँ सहभागी छलीह । खेल खेलमे एकटा अटुट सम्बन्ध जन्म लऽ लेने छल । संसार एहन सम्बन्धकेँ प्रेम कहैत अछि । मुदा ओ एकरा अलग सम्बन्ध सेहो कहैत छलथि । हुनका नहि पत्ता छल । एकमे दोसर स्वयंकेँ खोजए आ पाबए लागल छलथि.... कहाँ पत्ता छल, भीतरे-भीतरे की घटि रहल अछि ? कतेक क्षण...कतेक स्मरण ...सँग-सँग बड़का भऽ रहल अछि ।

सीमा कहैत छलीह, 'हमरा गुड़ीयाकेँ विवाह करबाक अछि....बरियाती लऽ कऽ अहाँ आएब....'

'कखन लऽ कऽ आउ बरियाती ?'

'रहए दिऔ....गुड़ीया अपन सासुर चलि जाएत तऽ हम कोना रहब...'

बात टलि जाइत छल....मौसम बदलि जाइत छल । पतझरमे फुल देखाइ पड़ैत छल...।

सीमा कहैत छलीह, 'अहाँक लेल स्वीटर बुनि रहल छी...'

'कहिआधरि पूरा हएत ?'

'सात-आठ दिनमे भऽ जाएत....'

'शीघ्र बनाउ...'

सलाईमे फन्दापर चढ़एकेँ गति तीब्र भऽ जाइत छल आ ओहिसँ उष्मा निकलए लगैत छल । ठोड़पर गीत थिरकए लगैत छल । दूर कतहुँ संगीतक सुर ताल सुनाई पड़ए लगैत छल । मुदा अर्थक पत्ता नहि...

सीमा बजलीह, 'कतए छलहुँ आई पूरे दिन ? हम परेशान भऽ प्रतीक्षा करैत रहलहुँ ...'

'क्याम्पससँ निकललहुँ तऽ पुस्तकालय चलि गेल छलहुँ.... ई किताब

लऽ कऽ अनलहुँ अछि.... अहाँकेँ नोट्स एहिसँ बनि जाएत....'

'चाह बनाउ ?'

'हँ...'

चाहक कपसँ भाप उठैत आ फेर एक नमी तरि रहल, जाहिमे एकटा सपना होइत छल, हमरासँग दैत रहब। एहिसँगक बीना अपन संसारमे रखले कि अछि ?

एकदिन सीमा बजलीह, 'हम रुमालपर नाम लिखि रहल छलहुँ आ बेर-बेर आंगुरपर सुई गड़ल....'

'अहाँक ध्यान कतहुँ आओर रहल हएत...?'

'नहि तऽ जखन ककरो खूब स्मरण करी तऽ आंगुरमे सुइ भोँकाइत अछि....'

'केँ कहलक ? लाउ दिअ, हमर रुमाल आइए कतहुँ खसि पड़ल अछि...'

'लापरवाह छी....',सीमा रुमाल देलीह आ ओ अपन जेबमे रखलथि।

एकटा खजाना बीना जम्मा कएने जम्मा भऽ जाइत छल....मुदा खजाना लुटेबो करैत अछि।

सीमा कहलीह, 'आई हमर विवाह तय भऽ गेल... जखन हम चलि जाएब सासुर तऽ अहाँक ध्यानकेँ राखत ?'

'अहाँ कतहुँ नहि जाएब....'

'अपन ध्यान राखब....बहुत लापरवाह छी अहाँ...'

'बकवास बन्द करु ....'

मुदा बकवास तऽ शुरु भऽ गेल अछि। एकटा मौसम बदलए लागल अछि। तखने भेटल छलीह परी। भेटल कहाँ ? सँग-सँग तऽ छलीह, जकर पत्ता हुनका नहि छल। कहाँ पत्ता चलए, कतेक लोक एक सँग-सँग रहैत अछि।

परी बजलीह, 'हम अहाँसँ प्रेम करैत छी...'

'मुदा हम तऽ सीमासँ प्रेम करैत छी...'

'बुझैत छी...आ इहो जनैत छी, सीमा अहाँकेँ छोड़ि कऽ चलि जाएत ....'

'एना कहिओ नहि हएत...'

'जखन भऽ जाएत तखन हमरालग आएब ने।'

'नहि...'

'हम प्रतीक्षा करब...'

किओ ककरो एहितरहेँ किए पसिन करए लगैत अछि ? बीना चाहने किए पसिन करए लगैत अछि ? कोनो उत्तर नहि भेटैत अछि। उत्तर खुट्टीपर टांगल नहि होइत अछि....

सीमा कहैत छलीह, 'अपने जीवनभरि पछताएब...'

'डेराए रहल छी हमरा ?'

'नहि, बता रहल छी...'

किओ केकरो भविष्य कोना जनैत अछि ? भविष्य होइतो अछि। सीमा सहीमे सासुर चलि गेलीह आ ओ देखैत रहि गेलाह ...प्रतीक्षाक मौसम मरि गेल...प्रतीक्षाक मौसम बदलैत नहि, मरि जाइत अछि...

ओ दूर जा रहल अछि। बहुत दूरसँ किछु देखाए नहि सकत। किछु स्मरण नहि आएत। ओ स्वयंकेँ स्वयंसँ असगरे भऽ जेताह। ओ चलैत रहलाह। चलैत रहलाह। दूर। आओर दूर। माइल्स टू गो। जाए पड़त। जाएकेँ अछि... २५ बर्ष चलि गेल तहिआसँ...

कतेक-कतेक बेर स्मरण आएल सीमा। कतेक-कतेक बेर स्मरण आएल परी। मुदा आई परी स्मरण आबि रहल अछि। सीमासँ बेसी। कतहुँ तऽ हेतीह...

◆◆

क्यामिकल रिएक्सन

हिना गेट किए नहि खोलि रहल छथि, ओहे तऽ टेलिफोन कऽ कऽ बजौने छलीह, 'माधुरी आई हम फ्री छी, शिवशंकर विजनेश टुरपर गेल छथि, हम बैसि कऽ आरामसँ बात करब । भोजन एतहि करब...', ओ टेलिफोनेपर बहुत बात करबाक लेल आतुर छलीह ।

भद्रपुरमे हमर परिचित कमे अछि, पतिकेँ मित्रसभक अतिरिक्त मात्र हिना छलीह, हमर सखी छलीह । काठमाण्डूक एक होस्टलमे हमसभ तीन सालधरि रुम पार्टनर भऽ कऽ बितौने छलहुँ । सखीओमे बहुत अन्तरंग हमसभ छलहुँ । विवाहक बादो टेलिफोन आ चिट्ठीक माध्यमसँ हमसभ जुड़ल रहलहुँ । पतिकेँ बदली भद्रपुरमे भेल तऽ हमरा बहुत प्रशन्नता भेल, कम्तीमे हिनासँ तऽ भेटि हएत ।

गेट खुजल तऽ हिना ठाढ़ छलीह, हुनक चेहरा देखि कऽ हमरा ई भाँपएमे देर नहि लागल, ओ बहुत कानल छथि ।

हुनका देखलाकबाद हम कहलहुँ, 'हिना अहाँक पति शिवशंकर सहीमे कहैत छथि, अहाँक आँखि कनलाक बाद बहुत सुन्दर भऽ जाइत अछि ।' हिनाक आँखिक कोर भीजल छल ।

बात बदलैत हिना बजलीह, 'आउ माधुरी अबेर भऽ गेल । चलु पहिने

भोजन कऽ लिअ ।'

हम हुनकर हात पकड़लहुँ, 'की बात अछि, हिना ?'

'नहि किछु सखी, आई हम एकटा भाइरसकेँ समाप्त कऽ देलहुँ अछि, हमर लाइफक विन्डोकेँ ख़ा रहल छल..., मात्र ओकरे पार्टी बुझि लिअ ।'

प्रसङ्ग बिन्दास तरिकासँ शुरु कएने छलीह, मुदा समाप्त करैत-करैत हुनक गला भरि आएल । हम धीरेसँ पुछलहुँ, 'मदनकेँ बात कऽ रहल छी अहाँ ?'

ओ दुनू बीचक सम्बन्ध केहन छल एहिसँ दुनू अबुझ रहथि, मुदा किछु एहन छल जे दुनूकेँ बर्षोधरि जोड़ि कऽ रखलक । हिनाकेँ तऽ हरेक बात आश्चर्यजनक छल । सुन्दर नहि छलीह मुदा गजबकेँ चुम्बकीय आकर्षण रहन्हि, हुनकर बड़का-बड़का आँखिमे एकबेर देखलाकबाद ओहिमे लोक डुबि जाइत छल । मजकीआ आ चञ्चल छलीह, मात्र हँसब आ हँसाएब... इहे हँस्सी मजाकक क्रममे एकदिन ओहिना फोन घुमाबए लगलीह, एकटा नम्बर लागल तऽ बजलीह, 'हेल्लो...', ...दोसर दिससँ एकटा नरम आ हृदयकेँ छुबएबला पुरुषक आबाज सुनाई देलक, हिना बादमे हमरा एहि घटनाक विषयमे बतौने रहथि ।

हिना हुनकासँग एना बात करए लगलीह, जेना ओ हुनका पहिनेसँ जनैत छलीह, किछुदेरक बाद ओ कहलीह, 'मदन अहाँसँ फेर बात करब एखन टेलिफोन रखैत छी', बादमे ओ हमरालग एलीह आ कहलीह, 'सखी आई तऽ मजा आबि गेल, पहिलबेर कोनो लड़कासँ बात कएलहुँ अछि ।'

'अहाँकेँ. कोना पत्ता जे ओ लड़केँ छल ? अहाँ ओकर चेहरा तऽ नहि देखने छलहुँ ?' हम हुनका डाँटि देलहुँ ।

हिना कहलीह, 'ओहे तऽ बतौलन्हि, ओ वकालत करैत छथि तऽ फेर लड़के भेल ने...।'

हिना पढ़ाइमे बढ़िया छलीह, पढ़ैत कम छलीह मुदा नम्बर बेसी

लबैत छलीह, मुदा हम बेसी पढ़लाक बादो कम मार्क्स लबैत छलहुँ ।

एहि घटनाक बाद तऽ मदनसँ बात करएकेँ क्रमे चलि निकलल । एकदिन मदनकेँ ओ होस्टलमे बजौलीह । चेहरापर प्रसन्नताकसँग कनीक घबराहट रहन्हि । होस्टलक महिला गार्ड आबि कऽ आबाज देलीह, 'हिना अहाँसँ किओ भेटए आएल अछि....', सुनिते ओ दौड़लीह आ पाछु-पाछु हमहुँ..., देखीह ओ भाग्यशाली केँ छथि ?

मदन सेहो किछु घबराएल आ सकुचाएल रहथि । गोर रंग कुइर आँखि आ बड़का-बड़का केस.....ओ सहीमे सुन्दर रहथि । ओ दुनू, होस्टलमे एकटा गाछक निचा आमने-सामने बैसल छलथि । पहिल भेटि छल, दुनू नर्वस रहथि । आखिर हिना चुप्पी तोड़लन्हि, मदनकेँ हातपर बनल एकटा बड़का कारी निशानक विषयमे पुछलन्हि, 'ई निशान केहन अछि ? ग्रीस लागि गेल अछि वा जरि गेल अछि ?'

मदन बिहुँसलथि, 'ई हमर बर्थ मार्क अछि ।'

पहिल भेटि औपचारिके रहल, हम संगीतक प्रेमी छी । मुदा हिनाकेँ एहिमे कोनो इन्ट्रेष्ट नहि रहन्हि ।

एकदिन बेरियामे निन्द लऽ रहल छलहुँ की महिला गार्ड फेर आबाज लगोलीह, 'हिना अहाँक फोन आएल अछि ?'

हिना हड़बड़ा कऽ उठैत भगलीह । घुमलीह तऽ जोर-जोरसँ हँसि रहल छलीह । बजलीह, 'आई तऽ मदन टेलिफोनपर गीतो सुनौलन्हि, आबाज बढ़िया छल । सँगहि सिनेमा देखए चलबाक लेल कहि रहल छलथि....'

' ...सखी असगरे हमरा डर लगैत अछि, अहुँ चलु ने सँगमे ।'

हम बढ़िया सखी होबएकेँ दायित्व निर्वाह कएलहुँ । सिनेमाक बाद हिनाकेँ हम छेरलहुँ, 'हिना सिनेमाक क्रममे मदन अहाँक हात पकड़लन्हि कि नहि...?'

हमर बातपर ओ आश्चर्यसँ कहलीह, 'हे भगवान ओ रोमान्टिक

सिनेमा छल, भुतहा सिनेमा नहि....जे डेरा कऽ हमर हात पकड़ितथि ।' हमरा हुनक मूर्खता पर हँसी आएल ।

एकदिन हिना कहलीह, 'माधुरी ई मदन कोनोदिन अवश्य बड़का गायक बनता । आई ओ हमरा फेरसँ गीत सुनौलन्हि ।'

हम हुनका धीरेसँ टटोललहुँ, 'हिना अहाँके प्रेम त्रेम तऽ नहि भऽ गेल अछि ?'

हमर बातपर ओ जोड़सँ बिहुँसली, 'सखी प्रेमक चक्कर अपना वसक बात नहि, प्रेम कि अछि ? मात्र एकटा केमिकल रिएक्सन....', फेर कनी गम्भीर होईत कहलीह, 'ठीक छै, चलु सखी भुख लागल अछि ।'

परीक्षा शुरु भेल आ धीरे-धीरे. समाप्त सेहो भऽ गेल । हिनाकेँ परीक्षा हमरासँ पहिने समाप्त भेल । ओ दोसरेदिन घर जएबाक तैयारी करए लगलीह । दोसरे दिन भोरमे हुनक बस छल । हमरासँग एकटा आओर सखी नेहा सेहो हुनका बस स्टैण्डधरि छोड़ए पहुँचल छल । ओतए मदन सेहो रहथि । जाइत समय ओ बिन्दास तरिकासँ हमरा तिनूसँ हात मिलौलन्हि आ बसमे बैसि रहलीह ।

....हिना बितल दिनमे डुबैत हमरासँ हृदयक बात शेयर कऽ रहल छलीह । 'माधुरी, एकटा बात कहुँ, हम ओहिदिन ओही बस स्टैण्डपर ठाढ़ रहि गेलहुँ, हुनकर हात पकड़ि कऽ । हम ओतएसँ जाइऐ नहि पएलहुँ....मदनसँ हात मिलबैत जखन हम हुनक चेहरा देखलहुँ, हुनक आँखिमे हमरा ई देखाएल, जेकरा शायद आईधरि हम नहि देखि पाएल छलहुँ ।'

'...एकरबाद हम हुनका अपन सिद्धान्तक खबरि देलहुँ तऽ हुनक चेहरा उतरि गेल छल । तखन हमरा लागल ई प्रेमक कोनो अनुभव अछि ।'

प्रसंगकेँ बदलैत, 'चलु चाह पिबैत छी सखी....',हिना चाह बनाबए भानस घरमे चलि गेलीह । हमहुँ हुनक पाछु-पाछु आबि गेलहुँ आ

पुछलहुँ, 'हिना एहिकेँबाद अहाँसँ कहिओ मदनकेँ भेटि भेल कि नहि ?'

'हँ फेसबुकपर', ओ बताबए लगलीह, 'होस्टलसँ घर एलाक किछुए दिनक बाद हमर विवाह शिवशंकरसँ भऽ गेल । शिवशंकरसन व्यक्तिकेँ पाबि कऽ प्रसन्न छलहुँ । हुनक सोँच अछि जीबू आ जीबए दिअ । पार्टी मौजमस्ती आ घुमए फिरएकेँ सौखीन छथि, शिवशंकर । बीना हमरा कहने कतहुँ नहि जाइत छथि... ।'

'... हम कतेको बेर विदेश यात्रा सेहो कऽ चुकल छी । बेटाकेँ होस्टलमे राखि देने छी, जे की पढ़ाइ नहि खराब भऽ जाए ।'

हमरा स्मरण अबैत अछि, हिनासँ जखन कहिओ टेलिफोनपर बात होइत छल । ओ शिवशंकरक प्रशंसाक पुल बान्हि दैत छलीह । मुदा हुनक बातक अन्तमे एकाएक एकटा अलग चुप्पी आबि जाइत छल आ ओ टेलिफोन राखि दैत छलीह ।

विवाहक १६ बर्षक बादो दुनूक हनीमून समाप्त नहि भेल अछि, मुदा कखनो-कखनो हिनाकेँ आँखिमे एक जोड़ा कुइर आँखि चैलि अबैत छल आ ओ बात करैत-करैत कतहुँ हरा जाइत छलीह ।

'सखी, एक दिन शिवशंकर कहलन्हि हमहुँ फेसबुकपर एकाउन्ट बना ली, एहिसँ पुरान मित्रसँ सम्पर्क भऽ सकए, एहितरहेँ फेसबुकपर एकाउन्ट बनि गेल । किछु दिनक बाद मोनमे आएल, मदनकेँ सर्च करी, कि पत्ता ओहो फेसबुकपर होइथ ।'

'... नाम टाइप कएलाक बाद असंख्य मदन देखाए लगल, मुदा एकाएक एकटा फोटोपर नजरि टीक गेल, ई तऽ ओहे मदन छलथि । फेर हम हुनक प्रोफाइल चेक कएलहुँ । शहर, क्याम्पस, जन्ममिती सभ ओहे....हिना जल्दीसँ मदनके म्यासेजबक्समे सन्देश छोड़ि देलन्हि, की हम अहाँकेँ स्मरण छी ?'

१५ दिनकबाद मदनकेँ सन्देश आएल, 'हँ ।'

सन्देश अबिते हिना मदनकेँ अपन मोबाइल नम्बर पठा देलीह ।

किछु देरकबाद मदन अनलाइन देखेलथि आ किछुए क्षणमे दुनू गोटे बिसरि गेलथि, हुनक सभक जीवन १५ साल आगा बढ़ि चुकल अछि । हिना एकटा बेटाक माय छथि तऽ मदन दूटा बच्चाक पिता । मदनकेँ टेलिफोन सेहो चलि एलन्हि ।

ओ पुछलीह, 'मदन अहाँ अपन घरपर हमरा विषयमे ककरो किछु कहने छियै की नहि ?' मदनकेँ मायके पत्ता छल, हुनक बेटा हिनासँ बराबर टेलिफोनपर बात करैत छथि एहिद्वारे जखन मदन अपन मायकेँ हिनाक सिद्धान्तक विषयमे बतौने छलथि तऽ ओ राहतक श्वास लेने रहथि । ई बात मदने हिनाकेँ सुनौने छलथि ।

हिनाक एहि प्रश्नपर मदन हँसलथि आ कहने रहथि, 'हम अहाँक विषयमे कनियाँकेँ नहि कहने छी आ नहि कहिओ कहब । माय तऽ आब नहि अछि आ कनियाँ एते शंकालु छथि जे कनिको पत्ता चलत तऽ बखेड़ा ठाढ़ भऽ जाएत ।'

च्याटिङ्गक क्रम चलैत रहल, मदन बराबर सिकाइत करैत रहथि, ओ बीचेमे भागि गेलथि । तखन एकदिन हिना सेहो अपन तामस जतबैत बजलीह, 'मदन अहाँ हमरा रोकबाक प्रयास कएने छलहुँ ? हम किनकर भरोसे रुकितहुँ ?'

मदन लिखलन्हि, 'हिना हमरा लग कोनो टाइम मशीन होइत तऽ हम १५ साल पाछु चलि जइतहुँ ....', हिना तुरन्त लिखलन्हि, 'हम तऽ एखनो १५ साल पाछु चलि रहल छी ।'

मदन जबाबमे कोनो गीतक लाइन लिख देलन्हि ।

'संगीतक भूत एखनो अहाँक हृदयमे अछिए ?' हिना शीघ्र च्याट कएलन्हि ।

हिना जतेक मदनक नजदिक जा रहल छलीह हुनका मोनमे अपराधबोध ओहिना बढ़ि रहल छल । हुनका लगैत छल, शायद गलती भऽ रहल अछि, ओ विवाहित छथि आ हुनका ई बात कहिओ नहि

बिसरबाक चाही ।

फेर ओ शिवशंकरकें सभ किछु बताबएकें निर्णय कएलन्हि । भोजनक बाद पतिकें आगा एक-एक कऽ पूरे बात बतौलन्हि आ सँगमे इहो कहलन्हि, 'ई हुनके अपराध अछि। ओहे पहिने फेसबुकपर मदनकें खोजने रहथि ।'

शिवशंकर सेहो गम्भिर भऽ गेलाह, फेर ओ परिपक्वता देखबैत कहलन्हि, 'कोनो बात नहि हिना, जीवन अहिना चलैत रहैत अछि । जेना चलि रहल अछि ओहिना चलए दिऔ, बहुत टेन्सन नहि लिअ ।'

दोसरेदिन हिना मदनकें सभबात बतौलन्हि तऽ हुनका आश्चर्य भेल । ओ कहलन्हि, 'बहुत भाग्यवानी छी हिना, अहाँकें एहन जीवनसंगी भेटल अछि । जेनी तऽ हमरा जेलमे जकड़ि कऽ राखि देने छथि ।'

एकदिन मदन जेनीकें बात टेलिफोनपर हिनासँ करबौलन्हि । ओ हिनासँ तऽ प्रेमसँ बात कएलन्हि मुदा बादमे मदनकें जान संकटमे पारि देने छलीह । वा तऽ ओ अपन प्राण समाप्त कऽ देतीह, नहि तऽ मदन हिनाकें अपन जीवनसँ बाहर करथि ।

दोसरेदिन मदनकें म्यासेज आएल, 'माफी चाहैत छी हिना, आब हम अहाँसँ बात नहि करब, जेनीकें एहिपर बहुत विरोध अछि ।'

हिनाकें आँखिसँ नोर बहए लगलन्हि । मदनकें टेलिफोन मिलबैत रहलीह, मुदा ओ फोन नहि उठेलन्हि, अन्तमे ओ म्यासेज कएलन्हि, 'एकबेर तऽ बात करु, मदन हमरा पत्ता चलए, भेल की अछि ?'

किछुए देरमे मदनकें फोन आएल । कहला, 'हमरा घरमे बबाल मचल अछि, अहाँसँ फोनपर जेनीकें बात की करबा देलहुँ ओ तऽ हमर पाछु पड़ि गेल छथि । अहाँसँ हात जोड़ि कऽ प्रार्थना करैत छी, हमरा माफ कऽ दीअ आ अपन जीवन अपना हिसाबसँ जीबू ।'

हिना बजलीह, 'कोनो बात नहि मदन, आब हम अहाँसँ भेटएकें १५ बर्ष आओर प्रतीक्षा कऽ लेब...', आ दोसर दिससँ टेलिफोन कटि गेल ।

....हिना मोबाइलसँ मदनक नम्बर डिलिट कऽ देलीह आ फेसबुकपर हुनका अनफ्रेन्ड कऽ देलन्हि । 'सखी, नम्बर तऽ डिलिट कऽ देलहुँ मुदा जे नम्बर १५ बर्षसँ नहि बिसरि सकलहुँ, आब ओकरा कोना बिसरि जाउ । शायद किछु बात मनुष्यक वसमे नहि होइत अछि । ....बुझैत छी, क्याम्पसक क्रममे हम हुनका मात्र फ्लर्ट कऽ रहल छलहुँ, मुदा बादमे हुनकासँ जुड़ैत चलि गेलहुँ । जखन मदनकें पत्ता रहन्हि हुनक कनियाँ एतेक शंकालु छन्हि तऽ हुनका हमरासँ सम्पर्क आगा नहि बढ़ेबाक चाही । पहिने हमरा बता दैतथि । जखनधरि हुनका सुविधा रहलन्हि, ओ हमरासँ बात कएलन्हि मुदा जखने सुविधा समाप्त भेल ओ सम्पर्क काटि लेलन्हि ।'

हिना कनैत हृदयक बोझ हमरासँ बाँटि रहल छलीह ।

हमरा स्मरण आएल, एक दिन हिना बाजल छलीह, 'सखी, हम महिलाकें हृदयमे कतेको च्याम्बर होइत अछि । एकटामे हमर गृहस्थी होइत अछि, दोसरमे नहिरा आ सखी सभ । एकटा तेसर कोना सेहो होइत अछि, जाहिमे हमरसभक किछु अतीतक स्मरण होइत अछि । जखन कहिओ फुर्सत होइत अछि, हल्कासँ एकरा झारि पोइछ दैत छी आ फेर ओतहि राखि दैत छी ।'

हम सोचए लगलहुँ, की ई ओहे लड़की छथि, प्रेमकें क्यामिकल रिएक्सन बुझैत छलीह आ हृदयकें खुनक सप्लाइएक एकटा साधन ।

....हिना कोनो १५-१६ बर्षक किशोरी नहि, परिपक्व महिला छथि आ हम हुनका मात्र बुझाए सकैत छी । ओहो ई बात बुझैत छथि, विधिकें किओ नहि बदलि सकैत अछि । जे आगामे अछि, जे भेटल अछि मात्र ओहे अपन अछि । जे नहि भेटल, सहीमे कहिओ छले नहि ।

♦♦

झिलमिला रहल नोर

लगातार बजैत डोरवेलक आबाज सुनि कऽ हम तमसाइत बरबरेलहुँ, ‘काजो करएबाली ने...... सयबेर कहि दैतछियैक, शनिदिन आठ बजेसँ पहिने नहि आउ मुदा नहि मानैत अछि।’ तमसा कऽ गेट खोललहुँ तऽ आगामे डेरा लऽ रहि रहल घरक बेटी खुशी कनैत ठाढ़ छल, ‘आन्टी.... मम्मी....अस्पताल....’ ओकर घबराएल हालत देखि कऽ नहि जानि हमरा मोनमे दया चलि आयल। ओना प्रत्यक्ष रुपसँ हम परेशान होएबाक नाटक करैत कहलहुँ, ‘बेटा अहाँ घर चलु, हम अबैत छी।’

खुशी उल्टे पयरे अपन घरदिस दौड़ गेल। ओकरासँ हम कहि देलहुँ, ‘हम आबि रहल छी।’ मुदा अरोस-परोसक मामलामे हमरा दिलचस्पी लेब उमेशकेँ पसिन नहि रहन्हि। एहिद्वारे हम सोफापर बैसि रहलहुँ, अपन कठोरतापर आश्चर्य भऽ रहल छल।

टिभी सिरियल आ फिल्मी पर्दाक भावुक दृश्यपर कानि-कानि कऽ आँचर भिजाबएबाली हम, आई सात-आठ बर्षक बच्चाकेँ नोर देखिओ कऽ नहि पिघइल रहल छी। कि करु ? की उमेशकेँ जगा कऽ एकबेर हुनका ई सूचना दऽ दी ?

सोचैत हम बेडरुममे आबि कऽ पतिकेँ जगबैत कहलहुँ, ‘हैं यौ उठू

तऽ....... सामनेबालीकेँ किछु भऽ गेल अछि, ओकर बेटी खुशी आयल छल, खुलि कऽ तऽ किछु नहि बाजि रहल छल, मात्र अस्पताल आ मम्मी बाजि रहल छल।’

उमेश चौंकति उठला आ पुछए लगला, ‘की ? कि भेलैया ?’

हम कहलहुँ, ‘शायद सामनेबाली महिलाकेँ तबियत ठीक नहि छैक, ओकर बेटी हमरा बजाबए आयल छल।’

‘अहाँ गेलहुँ किए नहि ?’ उमेश चौंकति पुछला।

हम तुरन्त कहलहुँ, ‘जएबाक चाही ?’ ओना हम बुझैत छलहुँ ई मात्र बहाना अछि, सत्य तऽ ई अछि, हमरा मोनमे सामनेबला महिलाप्रति सहानुभूतिए नहि अछि, मुदा काल्हिधरि सामनेबालीक विषयमे किछु नहि बाजएबला उमेश झट्टसँ कपड़ा पहीर कऽ दौड़ गेलाह आ हमरो जल्दी आबएकेँ सलाह देलन्हि।

उमेशक प्रतिक्रियासँ हम आश्चर्यचकित छी, ओहि महिलाप्रति एतेक चिन्ता........? पहिने तऽ हुनका विषयमे बातधरि करब पसिन नहि रहन्हि, आब की भऽ गेल ? कतहुँ हुनक कोनो जादु तऽ नहि चलि गेल। हम ओछायनपर परि रहलहुँ.....।

छ-सात महिना पहिने हम एतए आयल छलहुँ, विवाहक एक महिनाक बाद सासुरमे रहलहुँ, फेर उमेश लेबए एलाह तऽ एतए आबि गेलहुँ। बस भोरमे पहुँचएबला छल, मुदा अबेर भऽ गेल आ घर पहुँचैत-पहुँचैत बेरीया भऽ गेल। उमेशकेँ अफिस जाएब आवश्यक रहन्हि, जाइत-जाइत ओ हमरासँ कहलन्हि, ‘साँझमे काज करएबाली चमेलीसँ भोजन बनालेव आ घरो सफा करा लेब।’

हमहुँ फ्रेस होबएकेँ विषयमे सोचलहुँ आ बाथरुम दिस जाइए लागल छलहुँ की डोरवेल बाजल, गेट खोललहुँ त आगामे सलवार सुट पहिरने पिरसीयाम रंगक एकटा महिला ठाढ़ छलीह। हम किछु पुछितहुँ एहिसँ पहिनहि बिहुँसैत बजलीह, ‘हम अहाँकेँ सामनेबला घरमे रहैत छी,

चमेली अहाँ ओइठाम आएल अछि की ?'

हम सोचलहुँ, शायद चमेलीक बहानासँ ओ हमरा देखए आयल छथि। बहुतोकेँ बुझल छल उमेशकेँ नव विवाह भेल छन्हि आ ओ कनियाँ आनए गेल छलथि। ओ हमरा अबैत देखि अनुमान लगौने हेतीह, नव कनियाँ आबि गेल अछि, एहिद्वारे भेटए आयल छथि।

हमरा हुनक स्वभाव आवश्यक्तासँ बेसी फ्रेन्डली लागल।

हम कहलहुँ, 'चमेली तऽ शायद छ-सात बजेधरि एतीह, एखन तऽ तीने बाजल अछि।'

ओ महिला किछुदेर ठाढ़ रहलीह मुदा हमरा टालएबला मुद्रा देखि कऽ कनी बिहुँसली आ फेर घूरि गेलीह। हुनकासँ ई हमर पहिल आ एहिप्रकारक अन्तिम भेटि छल। कतहुँ अबैत जाइत भेटैत छलीह तऽ बिहुँसि कऽ अभिवादन करैत छलीह, हमहुँ औपचारिकता निमाहि दैत छलहुँ मुदा कहिओ हुनका आगा बढ़बाक अवसर नहि देलहुँ।

उमेश हुनका विषयमे किछु-किछु बात सुनि लेने छलथि, किछु अन्य पड़ोसीसभ सेहो बतौने रहथि, एहिसँ इहे लगैत छल, ओ ठीक नहि छथि। लोक कहने छल असगरे रहैत छथि, बच्चाक सँग। शायद तलाक लेने छथि वा फेर कोनो अन्य बात हएत, पतिसँ अलग रहैत छथि। हुनक घरमे किछु गोटे बराबर अबैत जाइत छल। एकगोटे तऽ हप्तामे दू-तीन बेर अबैत छल। एक-दूबेर एक गोटेकेँ तऽ हल्ला करैत सेहो देखने छलहुँ।

शुरु-शुरुमे हुनक विषयमे कएल गेल बातकेँ हम बिरोध करैत छलहुँ, कहैत छलहुँ ओ असगरे बच्चाकेँ पालैत छथि, कतेक जिम्मेवारी निमाहि रहल छथि, लोकक बातपर सहज विश्वास नहि होइत छल। सत्य कही, हम कतेकोबेर खिड़की वा गेटक ओँटसँ नुका-नुका कऽ देखबो कएने रही, मुदा एहन कोनो बात नजरि नहि आएल, जेकर आधारपर हुनका गलत ठहरा सकी। तैओ नहि जानि, कोना हमरा मोनमे ई बात

बैसिगेल जे सामनेबला महिला, बढ़िया नहि छथि।

दिनमे तीन-चारिबेर बाहर अबैत जाइत देखने छलहुँ। ओ स्मार्ट, सुन्दर आ आत्मविश्वाससँ भरल महिला छलीह। कखनोकाल ईर्ष्या होइत छल, मोनमे।

उमेश जल्दीसँ घरमे घुसलाह तऽ हम चौंकलहुँ, ओ घबरा रहल छलथि। उमेश एम्बुलेन्सकेँ टेलिफोन कएलन्हि। फेर हमरा दिस देखैत बजलथि, 'बुझलियै ओ महिला तऽ तेजाब पी लेने अछि।'

हम तुरन्त बजलहुँ, 'ई तऽ पुलिस केश भऽ गेल, अहाँ नहि जाउ ओतए।'

उमेशकेँ तामस भऽ गेलन्हि, 'केहन बात करैत छी अहाँ ? ककरो जीवन मरनकेँ बात अछि, हुनक छोट बच्चा अछि, किछु भऽ गेल तऽ ओकरा बचाबहे पड़त।'

'लोक अहुँकेँ विषयमे उल्टा सीधा बाजए लागत', हम हुनका फेरसँ रोकए चाहलहुँ।

उमेश किछुदेर बैसि गेलाह, फेर हमरादिस तकैत बजलाह, 'अहाँ नहि चाहब तऽ हम नहि जायब, मुदा सोचू हमर आत्मा माफ करत, ओकरा ओहिना मरैत छोड़ि दी ? रहलबात लोककेँ तऽ हम एहिसँ पहिने ओहि घरमे गेल छलहुँ ? की किओ हमरा ओकरासँ बात करैत देखलक अछि ? हमरो व्यर्थक बातमे परब पसिन नहि, मुदा आवश्यक्ता परलापर ककरो मदत करब मनुष्यक धर्म होईछ।'

उमेशक बात सुनि कऽ हमरो सन्तोष भेटल। उमेश तुरन्त चलि गेलाह। हुनक पाछु-पाछु हमहुँ निकललहुँ। हमरा हुनक घर पहुँचएधरि उमेश महिलाकेँ अस्पताल लऽ गेल छलथि। बेडरुममे हुनक बेटी खुशी जोर-जोरसँ कानि रहल छल। हम प्रेमसँ बच्चाक माथपर हात फेरलहुँ, ओ आओर जोरसँ कानए लागल।

तकिआ लग ओ महिलाक पर्सनल डायरी राखल छल, हम सोचए

लगलहुँ शायद एहिमे ओ आत्महत्याबला नोट लिखने हेतीह ।

हम हुनक बेटी खुशीकेँ सम्फेलहुँ आ हात मुँह धोआ देलहुँ । ओकर एकटा छोटका भाई कोनामे ठाढ़ छल । हम ओकरा प्रेमसँ बजेलहुँ । नहि जानि किए हमरा मोनमे ओ डायरी पढ़बाक इच्छा जागि गेल । दुनू बच्चाक सँग ओ डायरी हम अपना घर लऽ एलहुँ । पन्ना पल्टबैत छी तऽ एकाएक एकटा स्थानपर नजरि रुकि गेल । लिखल छल, तीर्थ नोकरी छोड़ि देलन्हि, मुदा हम कहिओ कोनो सिकायत नहि कएलहुँ । छोट बच्चाक बादो नोकरी करए घरसँ निकलि गेलहुँ । शुरुमे तीर्थ एहिबातक लेल सभक आगा हमरा प्रशंसा करैत छलथि । हमरासँ कहथि, सहीमे अहाँ बहुत काबिल महिला छी । फेर नहि जानि कि भेल, लम्बा बेरोजगारीसँ हुनका कुण्ठा भऽ गेल । लोक आ कर कुटुम्बक प्रश्नसँ परेशान रहए लगलथि । फेर एकदिन ओ नशा कऽ कऽ घर एलथि । हम ओहिदिन हुनका बहुत सम्फेलहुँ, सहानुभूति जतौलहुँ आ आश्वासन देलहुँ ।

ओहो बचन देलन्हि, आब कहिओ एहन नहि हएत मुदा दोसरो दिन फेर इहे भेल......... ओकर एक दिनक बाद सेहो.......। फेर तऽ जेना ई क्रम चलए लागल । पैसा नहि दैत छलहुँ तऽ मारिपीट आ फेइज्जत पर उतारु भऽ जाइत छलाह । हम बहुत प्रयास कएलहुँ, हुनका नोकरी भेटि जाए, कतेको स्थानपर बात कएलहुँ मुदा एना नहि भेल । हुनक हताशा एतेक बढ़ि गेल, हरेक चीजक लेल हमरे दोषी ठहराबए लगलथि । हमरालेल ओहि माहोलमे नोकरी करब बहुत कठीन भऽ गेल छल । प्रत्येक दिनक विवाद आ कलहक कारण बच्चापर सेहो गलत असर परि रहल छल ।

.....यातना बढ़ैत जा रहल छल, आब किछु महिना पहिने भैया एतए भाड़ाकेँ मकान दियौने छलथि । भैया बहुत चिन्तित रहैत छथि, हमरा लेल । हप्तामे २-३ दिन, हमरा देखए अबैत छथि ।

हम फेरसँ पन्ना पलटलेहुँ तऽ एकटा स्थानपर लिखल छल, शायद

ई हमर भ्रम छल, हमर कलिग्स आ परोसी हमर शुभचिन्तक छथि । आगामे तऽ हमर हितैसी बनैत छथि मुदा पीठक पाछु मजाक उड़बैत छथि । पतिसँ अलग रहएबला महिलाकेँ नहि जानि किए गलत बुफल जाईत अछि । किछु लोक एतहुँ अछि, बहुत सभ्य आ बालबच्चाबला बनैत छथि मुदा जखन-तखन कोनो नहि कोनो बहानासँ हमरा घरमे आबए आ हमरासँ मित्रता बढ़ाबएकेँ फिराकमे रहैत छथि । असगरे महिला सर्वसुलभ होइत अछि की ? हमरा घृणा होइत अछि एहन लोकसँ ? तीर्थ अपन जिम्मेवारी सम्हारितथि, ओ नशा आ मारिपीट नहि करितथि तऽ हम एहितरहे एहिठाम नहि रहितहुँ... हद तऽ तखन भऽ गेल जखन काम करएबाली कहलक, भैयाक लेल लोक बहुत बात बनबैत अछि । आखिर लोक ककरो चयनसँ किए नहि जीबए दैत अछि ?

...एक-एकटा पन्ना पल्टैत सामनेबलाक जीवनक परत खुलि रहल छल, तखने खुशी रुममे आयल आ हम डायरी एकटा कोनमे राखि देलहुँ । नहिजानि किए हम अपन छोट सोँचपर लजा रहल छलहुँ, मोनमे प्रश्न उठए लागल, एकटा असगर महिलाक गरिमाक सँग जिम्मेबारी निर्वाह करब आइयो असम्भव अछि ? हम महिला होइतो, दोसर महिलाप्रति सम्वेदनहीन कोना भऽ गेलहुँ ?

जलपान कएलाक बाद सामनेबला बच्चाकेँ गम्भिरताक सँग देखि रहल छलहुँ । हम खुशीकेँ अपनालग बजा कऽ पुछलहुँ, 'की तोहर मम्मीकेँ ककरोसँग फगड़ा भेल छलहुँ की ?'

ओ कहलक, 'काल्हि पापा आएल छलथि, मम्मीसँ बहुत फगड़ा कएलन्हि, ओ मम्मीकेँ मारबो कएलन्हि, मम्मी रातिभरि कानि रहल छल ।'

खुशी फेरसँ सिसकए लागल । हम ओकरा गलासँ लगा लेलहुँ आ कहलहुँ, 'नहि कानु बेटा अहाँक मम्मी साहसी आ नीक लोक छथि, हुनका किछु नहि हएत । ओ जल्दीसँ ठीक भऽ कऽ घर चलि एतीह...', हमरा आँखिमे नोर फिलमिला रहल छल ।

छुट्टीक परिभाषा

छुट्टीक दिन, हम आ हमर कनियाँ दुनूक लेल अलग-अलग मतलब लऽ कऽ अबैत अछि।

दुनू अपन-अपन कारणसँ छुट्टीकेँ प्रतीक्षा करैत रहैत छी।

हम एहिद्वारे जे छुट्टीकेँ दिन हमरा अपना तरिकासँ जीबएकेँ एकदिन होइत अछि। छुट्टीकेँ मतलब दिनभरि आरामे आराम अर्थात जतेक बजेधरि हुए अपना मोनसँ सुती, जेना मोन हुए पड़ल रही।

पत्रिका उन्टाबैत दिन बिता देब। कोनो उपन्यास पढ़ि लेब। किछु लिखएकेँ प्रयास करब आ फेर किछु नहि लिखएकेँ कोशिस करब वा कोनो प्रयासे नहि क़रब। अर्थात ई सभ अपना मोनक हिसाबसँ, ककरो कोनो दवाव नहि।

कनियाँक नैहरि आ सासुर दुनू गाममे अछि, से जखन कहिओ कनियाँ गाममे होइत छथि आ हमर बेटा, सत्य अछि ओ हुनकेसँग रहैत अछि। एहन समयमे छुट्टीकेँ कोनो एहन दिन पड़ैत अछि तऽ हम तरकारीसँ लऽ कऽ दुधधरि पहिनेसँ किन कऽ राखि लैत छी, कोनो सम्भावित कारणसँ हमरा रुमसँ बाहर नहि निकलए पड़ए एहन दिनमे। रुमक बाहर पयर राखब हमरा लेल आश्चर्य जकाँ होइत अछि।

कतेक दिन तऽ बेचारा पत्रिका दिन-दिनभरि घरक बाहर उठाबएकेँ प्रतीक्षा करैत रहैत अछि, पड़ल रहि जाइत अछि तऽ कतेकोबेर एहन होइत अछि, पत्रिकाकेँ अक्षर-अक्षर चाटि जाइत छी। छुट्टीक विषयमे कही तऽ अपन मुड वा मर्जीसँ चलएकेँ एक दिन, किछु करएकेँ वा नहि करएकेँ दिन। किछु सोचएकेँ वा किछु नहि सोचएकेँ दिन।

जखन कि हमर कनियाँक लेल छुट्टीक दिन आओर कारण लऽ कऽ अबैत अछि। हमरा अफिसमे रहएकेँ समय भोर ११ बजेसँ ६ बजेधरि रहैत अछि। जतए हम रहैत छी, ओतएसँ अफिस पहुँचएमे आधा घण्टा लगैत अछि।

आधा घण्टा भोर, आधा घण्टा साँझ। ओहो जखन नगर बस महाराजकेँ कृपा भऽ जाइत अछि तखन ई एक घण्टा कतेको बेर बढ़ि कऽ दू घण्टामे बदलि जाइत अछि।

भोरक समय उठिते पत्रिका पढ़ब, दुध-सुध लाबएकेँ, बेटाकेँ तैयार कऽ स्कूल पठाबएकेँ आ बादमे अफिस जाएकेँ तैयारीमे बीत जाइत अछि आ साँझ साढ़े ६ आ ७ बजेधरि घर पहुँचलाक बाद कतहुँ बाहर निकलएकेँ कोनो इच्छा दूर- दूरधरि नहि रहि जाइत अछि। रातिक भोजन कएलाक बाद, बाहर निकलएकेँ मोने नहि करैत अछि। हमर बढ़ैत पेट देखि कऽ, जेकरा लेल कतेको शुभचिन्तक खास रुपमे सलाह देलन्हि। आम मैथिल सर्वहारा युवा जकाँ हमहूँ पूरे तरहे कुपोषणकेँ शिकार भऽ रहल छी। कखनो आँखि भाड़ी लगैत अछि, कखनो माथ। कखनो तरबामे जलन होबए लगैत अछि तऽ कखनो ऐरी दुखाए लगैत अछि। कब्जियत तऽ सदा बहार अछि।

सत्य ई अछि, कनियाँसँ बेसी हमर शरीरक एहि प्रकारे बिगरएकेँ विषयमे आओर केँ बुझि सकैत अछि ? से हमर कनियाँ हप्ताकेँ ६ दिन रुमसँ बाहर निकलएकेँ सभ आकंक्षा दबौने पड़ल रहैत छथि आ क....क...क...केँ सिरियल वा बात-बात पर नोर बहाबए आ गीत

गाबएबला सिनेमामे स्वयंकेँ गुम कऽ दैत छथि। मुदा एहिबीच छुट्टी दिनक अपन योजनामे ओ चुप्पे-चुप्पे बनबैत रहैत छथि, छुट्टीक दिन ई करब, ओ करब। छुट्टी दिन ओतए जाएब, छट्टीक दिन ओतए घुमब आ एहिकेँ लेल धीरे-धीरे हमरो तैयार करैत रहैत छथि।

सपाट भाषामे कही तऽ जतए हमरा लेल छुट्टीक मतलब होइत अछि घरमे रहब, ओतहि हमरा कनियाँकेँ छुट्टीक मतलब होइत छन्हि बाहर जाएब।

गम्भीरतासँ देखल जाए तऽ दुनू बातमे कोनो अन्तर नहि अछि। हम दुनू गोटे जीवनकेँ कनिक अलग ढंगसँ जीबए चाहैत छी मुदा समस्या ई अछि जे हमर जीवन स्थितिमे एककेँमुक्ति दोसरकेँ मुक्तिमे बाधक बनल रहैत अछि।

एनामे हमरा सभकेँ बीच विवाद होएब स्वभाविक अछि। मुदा हम दुनू गोटे होसियार छी, एक दोसरकेँ बढ़िया जकाँ बुझैत छी। प्रेम करैत छी, ई विवाद हम दुनू गोटे कोनो तरहे टालि दैत छी आ बीचक बाट निकालि लैत छी।

ई बीचक बाट किछु एहन होइत अछि जे दुनूकेँ पसिनक आधा-आधा दिन। जेना, दिनक पहिल बेरियाधरि ओ हमर कोनो काज पर टिप्पणी नहि करतीह, हमरा जे इच्छा हएत, जेना मोन लागत, हम करैत रहब। मानि लेल जाए, हमरा हुनक बाँहिमे पड़ल रहबाक मोन भेल तैयो। बीचमे टोकब अपराध मानल जाएत। आ बेरियाक बाद स्वंयकेँ पूरे तरहे हुनक इच्छाक हबाला कऽ दैत छी।

कोनो सिनेमा, नाटक, मन्दिर, हुनक कोनो मित्र, कोनो दूर-दूरकेँ सम्बन्धी, ओहिना बेकारमे जतए हुनका मोन लगलन्हि ततए घुमए जाएसँ लऽ कऽ नदीमे स्नान करएधरि। मात्र शर्त ई अछि, कोनो काज हरेक हालतमे घरसँ बाहर होएबाक चाही।

हमरा लेल घर एकटा स्वर्ग अछि। जतए आबि कऽ हम संसारी

जंजालसँ एकदम मुक्त होबए पसिन करैत छी। कोनो तरहक बाहरी तकलिफ वा तनावसँ मुक्ति, अपनाकेँ सँग अपनाकेँ कोरामे मुदा कनियाँक लेल ई घर एकटा जेल अछि। ओ भोरसँ साँझधरि अनेक दृश्य आदृश काजमे लगातार जुटल रहैत छथि। हम कतेकोबेर प्रयास कएलहुँ, हुनक काजमे सहयोग करी मुदा हम किछु करए चाहैत छी तऽ ओ मना कऽ दैत छथि। मुदा एहि दिनमे ओ बेसी प्रशन्न रहथि छथि आ बात-बात पर हमरा अपन प्रेमसँ सराबोर कऽ दैत छथि।

हमहुँ दिनभरि हुनकासँग होबएकेँ आ प्रेम भड़ल अनुभवसँ भड़ल रहैत छी। मुदा कोनो नहि, कोनो कारणसँ टुटि जाइत अछि आ फेर टुटल चलि जाइत अछि वा ई कही तऽ बेसी ठीक हएत, कायदासँ ई क्रम कहिओ बनबे नहि कएल। हरेक समय बनएसँ पहिने टुटि जाइत अछि।

कनियाँक हृदयमे जे किछु हुए मुदा एहि बातक लेल ओ अपन तामस कहिओ प्रगट नहि कएलीह। हुनक तमसाएकेँ कारण हरेक समय दोसर होइत छल।

तँ एहनेसन एकटा छुट्टीक दिन छल। कनियाँ भोरेसँ बहुत प्रशन्न छलीह। हम भोरे उठलहुँ तऽ लागल हमर किताब पर बहुत गर्दा जमा भऽ गेल अछि। हम भोरेसँ किताब साफ करएमे जुटि गेलहुँ आ एहिबीच हमर बेटा आबि कऽ कतेकोबेर हमर पीठ पर कुदि चुकल छल।

कनियाँ सेहो कतेकोबेर आबि कऽ हमरासँ प्रेम कऽ चुकल छलीह। हम एहनेसन एकटा किताबकेँ पन्ना उन्टा रहल छलहुँ आ ओ पाछुसँ हमरा बन्नहे छलीह की मोबाइल बाजि उठल। मोबाइल आलमिरा पर राखल छल। हम उम्हर देखनहेँ छलहुँ की कनियाँ बाजि पड़लीह,' ककरो हुए बाजए दिऔक, नहि उठाउ।'

आ ओ हमरा आओर जोड़सँ कैसि लेलीह। एहि सभक बीच मोबाइल एकबेर बाजि कऽ शान्त भऽ गेल मुदा तुरन्ते बाजि उठल। हम कहलहुँ, 'देखी ककर फोन अछि, उठाएब नहि' आ हुनकर मना करिते-करिते हम

मोबाइलधरि पहुँच गेलहुँ । हाकिमकेँ फोन छल ।

हाकिम सहीमे हाकिम होइतथि तऽ फोन नहि उठबितहुँ मुदा हमरा सभबीच बहुत आत्मीय सम्बन्ध छल । ओ हमरा समस्यामे सहभागी होइत छलथि आ हुनक हम हृदयसँ इज्जत करैत छलहुँ, मोबाइल रिसिब नहि करएकेँ प्रश्ने नहि छल आ हम मोबाइल उठा लेलहुँ, 'हँ सर कहल जाए ?'

हाकिम कहलन्हि जे एकटा पार्टीसँ आइए अप्वाइन्टमेन्ट तय भऽ गेल अछि आ एहिद्वारे आवश्यक अछि जे हुनकासँग हमरो रहबाक अछि ।

हम किछु कहि पबितहुँ एहिसँ पहिनहेँ हाकिम मोबाइल काटि लेलन्हि । हमर मुहँक स्वाद बिगरि गेल । ओना हाकिम इहो पुछने रहथि जे कतहुँ आओर ठाम व्यस्त तऽ नहि छी आ इहो जे बेसीसँ बेसी दू घण्टामे काज भऽ जाएत, मुदा हम ओ पार्टीकेँ हाकिमसँ बढ़िया जकाँ बुझैत छलहुँ । एखनधरि ओ कहिओ तय समयपर नहि आएल छलथि एहन कोनो अबेर भेलापर जखन हम हुनका फोन करैत छलहुँ तऽ ओ नहि उठबैत छलथि आ हम अफिसमे बैसि तमसाइत रहैत छलहुँ कारण हुनका देरसँ आबएकेँ सीधा मतलब हमरा अफिसमे अबेरधरि बैसल रहए पड़ैत अछि ।

ओ पार्टी एहन छल, अबेरसँ आबएमे अपनाकेँ महत्वपूर्ण होएब बुझए लगैत छलथि । हम ओहि पार्टीसँ परेशान छलहुँ आ हाकिमसँ अपन आपत्ति कतेकोबेर मीठ स्वरमे दर्ज करा चुकल छलहुँ मुदा हरेकबेर हाकिमकेँ एक्कहिटा उतर होइत छलन्हि, कि करब एकर कोनो विकल्प नहि भेटैत अछि आ ई बात सेहो सोलह आना सत्य छल ।

हम ओहि काजक लेल जेकरा ओ पार्टी काज करैत छलथि कतेको पार्टीकेँ अजमौने छलहुँ मुदा ओतेक परफेक्षनकेँ सँग किओ दोसर नहि कऽ सकल आ मोल सेहो बेसी देबए पड़ल छल । सहीमे हम छोटका शहरकेँ होबएकेँ विकल्पहीनताक शिकार छलहुँ ।

हम काठमाण्डू, विरगञ्ज वा विराटनगरमे होएतहुँ तऽ एहन लोककेँ जिनकामे प्रोफेशनल एथिक्स नामक कोनो चीज नहि छल, हम अपन लिस्टसँ कहिआ बाहर कऽ देने रहितहुँ मुदा एतए हमरा लग कोनो विकल्प नहि छल ।

ओना तऽ हाकिम ठीके छथि । ओ हमर सुविधाकेँ सेहो कनिमनि ध्यान रखैत छथि । हमर सम्बन्ध सेहो हँस्सीमजाकसँ भड़ल अछि, बहुतबेर तऽ नहि लगैत अछि, हम हाकिमक मातहतमे छी । मुदा छुट्टीकेँ मामलामे हमर हाकिम बहुत कड़ा छथि । ओना जखन हमरा आवश्यकता होइत अछि, छुट्टी हमरा भेटिए जाइत अछि मुदा समस्या ई अछि, ई छुट्टी जाहि विशेष आवश्यकताक लेल, लेल जाइत अछि ओहिमे काज आबि जाइत आ अपने एहिबातक लेल तऽ छुट्टी मँगलासँ रहलहुँ की अपनेकेँ अपन प्रिय कनियाँकसँग नाटक वा सिनेमा देखए जएबाक अछि नहि तऽ फुन्नी परएबला अछि आ मात्र अपन प्रियकेँ सँग हातमे हात राखि भीजब आ भीतरधरि भीज जाएब चाहैत छी, काज नहि करए चाहैत छी । यदि ठण्ढाक समय अछि, अहाँ दिनभरि रौदक मज्जा लैत अल्साएल जकाँ पड़ल रहए चाहैत छी ।

यदि .....

तऽ हाकिमकेँ सँग हमर बातचित समाप्त होइक एहिसँ पहिने कनियाँ कोप भवनमे जा कऽ बैसि रहलीह ।

बातचित समाप्त होइते शीघ्र हम हुनका लग पहुँचलहुँ आ बुझाबएकेँ प्रयास करए लगलहुँ, 'देखु किछु देरक बात अछि हम जाएब आ चलि आएब... आबि जाएब मिला कऽ तीन, साढ़े तीन घण्टा मात्र लागत, हम एना जाएब आ ओना चलि आएब । अहाँ तैयार रहब, आई हमसभ बक्समे बैसि कऽ सिनेमा देखब... ।'

कनियाँ तमसाएकऽ हमरा दिस तकलीह आ फेर मुँह घुमा लेलीह । हमरा मोनमे आएल, कनियाँके मुँह अपनादिस घुमा लिअ आ सिनेह करी ।

मुदा एकर परिणाम खतरनाक भऽ सकैत छल आ हमरा लग खतरासँ खेलबाक लेल समय नहि छल ।

हम कहलहुँ, 'प्रिय हमरापर भरोसा राखू । एकदिन हमरा लग बहुत समय हएत आ संसारभरिक खुसी हमरा लग हएत । हम हरेक समय सँग रहब, खूब प्रेम करब आ खूब प्रशन्न रहब ....' आ हम हुनक पिठपर हात राखि देलहुँ । पिंठ बरफ जकाँ ठण्ढा छल मुदा हमरा लग पिठ पर ध्यान देबाक समय नहि छल ।

हम नहाएकेँ लेल धरफरा कऽ बाथ रुममे घुसलहुँ, बाथरुममे पानि बहुत गरम छल जल्दिसँ हम बाथरुमससँ बाहर निकलहुँ आ कपड़ा पहिरए लगलहुँ । कनियाँकेँ वाई केलहुँ तऽ ओ नहि जानि केहन आँखिसँ हमरा देखलीह ? ओहि आँखिमे कि छल, हम से नहि बुझि सकलहुँ, ओहिमे किछु अवश्य छल जेकरा हम सामना करबाक हिम्मत नहि देखा सकलहुँ ।

हम नजरि घुमेलहुँ ब्याग उठेलहुँ, फेर वाई-वाई कहलहुँ, बेटाकेँ गाल थपथपेलहुँ आ कोनो तरहक जवावक प्रतीक्षा कएने बाहर निकलि अएलहुँ ।

बाहर रौद शरीरकेँ भीतरधरि सुइया जकाँ गड़ि रहल छल ।

अफिसमे हरेकदिन जकाँ जखन ओ पार्टी आएल तखनधरि हम हाकिमकेँ सँग कतेकोबेर छलफल कऽ चुकल छलहुँ आ हाकिम एककेँ बाद एक दर्जनधरि सिगरेट फुकि देने छलथि । ओना हमरा इहो पत्ता छल, कतबो छलफल करी वा नहि करी ओ पार्टी कोनो कमी अवश्य निकालत, बदलामे अपना दिससँ कोनो नहि कोनो सुझाव अवश्य देत, ई ओकर चरित्र स्थायी अछि ।

पार्टी दू बजेकेँ समय देने छल । आ जखन हमसभ अपन काज कऽ कऽ बाहर निकलहुँ, तखनधरि साढ़े ६ बाजि चुकल छल ।

बाहर निकलि कऽ हम एकटा सिगरेट सुनगेलहुँ आ नगरबस दिस बढ़ि गेलहुँ, स्वंयकेँ कनियाँक छुट्टी बर्बाद करबाक दोषी मानैत रहलहुँ, हुनका सामना करबाक हिम्मत जुटाबए लगलहुँ ।

सहीमे हुनकर एहिसँ पहिलका छुट्टी सेहो एहिना ओहिनामे बर्बाद भऽ गेल छल । अहाँ जे बुझू मुदा छुट्टीक दिन हम ककरो घर बजावएसँ बचैत रहैत छी ।

एकदिन हम अपन स्कूली मित्रक भोजनपर बजा लेलहुँ । आब हम कि करु, हमरा पहिनेसँ पत्ता नहि छल । हुनक भोजनक समय बेरियाक ४ बजे होइत अछि । ओ एला तऽ हम बहुत नव पुरान बातमे डूबि गेलहुँ । हम बहुत लम्बा समयधरि सँग रहल छलहुँ । एक दोसरकेँ सँग नहि जानि कतेको सिनेमा देखने छलहुँ, नाटक देखने रही, परिवर्तनक बड़का-बड़का सपना देखने छलहुँ तऽ ओ सपनाक विषयमे, हमर दोसर मित्रसभक विषयमे, एक दोसरकेँ विषयमे बातचित करएमे बढ़िया लागि रहल छल ।

हुनकर कहएकेँ उत्साह, हमरा सुनएकेँ लेल उत्सुक बना रहल छल । हमर उत्सुकता हुनका आओर कहबाक लेल प्रोत्साहन कऽ रहल छल । हम दुनू गोटे एक दोसरमे एतेक डूबि गेलहुँ, समयक पत्ते नहि चलल । जखन कनियाँ एलीह आ चाहक विषयमे पुछलीह तऽ अचानक हमर नजरि घड़ीपर पड़ल तऽ रातिक ८ बाजि रहल छल । हम कनियाँ दिस देखलहुँ, हुनक आँखिमे बेचयनी इम्हर ओम्हर घूमि रहल छल ।

हमर मित्र अचानकसँ अस्तव्यस्त भऽ गेलथि । ओ शीघ्रहि अपन मोबाइलपर फोन लगावए लगलथि आ ओकर ५ मिनेटक बाद हुनकासँ हाथ मिलवैत हुनका बिदा कऽ रहल छलहुँ ।

एहिना ओहिसँ पहिलका छुट्टीबला दिनपर हमर गामक एकटा लड़का आएल छल । ओकरा हमर शहरमे कोनो परीक्षा छल । परीक्षा देलाक बाद ओ पूरे निश्चिन्ततासँ आबि कऽ जमि गेल छल आ हम संकोचमे

ओकरा किछु नहि पुछि सकलहुँ। कनियाँ एहि दुनू अवसरपर कोनो प्रतिक्रिया नहि देलीह। मुदा हमरा बुझल अछि, ओ एतेक जल्दि प्रतिक्रिया नहि दैत छथि। मुदा जखन दैत छथि, तखन एक आवेगमे नहि जानि बहुत किछु कहि दैत छथि। प्रतिक्रिया देबाक मुद्रा अजीव छन्हि, ओ मुँहक मुद्रासँ ई सभ करैत छथि।

आ हम .... जखन हमर कनियाँ हमरापर एहि प्रकारे तमसाइत छथि, हम एहि अनुभवसँ पस्त भऽ जाइत छी जे कनियाँकेँ एहि प्रकारक तामसकेँ पाछु पतिकेँ रुपमे हमर कतेक असफलता नुकाएल अछि।

घर पहुँचैत-पहुँचैत ७ बाजि गेल छल। हम बहुत देरधरि कलवेल बजवैत रहलहुँ। एकटा नम्हर आबाजक बाद द्वार खुजल। ई हमर बेटा छल, अपन कुर्सीपर ठाढ़ भऽ कऽ छिटकीली खोलने छल। ओ हमरा देखलक आ बिहुँसल, 'मम्मी देखू पापा आबि गेलथि ?'

हम ओकर ठोढ़पर आंगुर राखि देलहुँ आ चुप रहबाक इसारा कएलहुँ , ओ प्रश्नक दृष्टिसँ हमरा दिस देखलक। ओ कनिक उदास लागि रहल छल। ओकरा हम कोरामे उठा लेलहुँ आ प्रेमसँ ओकर माथपर हाथ फेरलहुँ आ भीतरधरि भीज गेलहुँ।

बाहर हमर जे जीवन अछि ओ एतेक निरश आ उल्टा अछि, कोनो तुकक बात मिलल नहि कि अलग अनुभव भीजा दैत अछि। ओना एहि तरहक बराबरकेँ घमाएब, हमरा बहुत लज्जीत जकाँ लगैत अछि आ बेर-बेर कानएकेँ इच्छा तऽ होइत अछि मुदा नोरक एकहुँ बुंद नहि निकलैत अछि। एहन अवसरपर हम आओर फसल-फसल अनुभव करैत छी, एहिसँ बढ़िया ई होइत जे कोनो दिन खूब कनितहुँ। एकबेर सोचने छलहुँ आ हम बेर-बेर कनबाक प्रतीक्षा करए लगलहुँ। फेर हम सोचलहुँ, कोनो छुट्टीक दिन बढ़िया जकाँ कानब। मुदा जखन छुट्टी भेटैत अछि तखन करएकेँ बहुत काज भऽ जाइत अछि।

भीतर बेडरुम अन्हार छल। हम स्वीच अन कएलहुँ, ओरपेट जड़ल

मुदा अन्हार कायमे छल। कनियाँ मुँह दोसरदिस कएने माथधरि ओढ़ना ओढ़ने पड़ल छलीह। हम हुनका डेराइते-डेराइते छुलहुँ आ हुनकर मुँह अपना दिस घुमावएकेँ प्रयास कएलहुँ। कनियाँ हमर हाथ झटैक देलीह आ बजलीह, 'हमरा छुवएकेँ प्रयास नहि करु, जाउ अपन अफिस, अपन काज करु, मित्रसँग मस्ती करु, हम अहाँकेँ छी केँ.....'

हम कहलहुँ, 'अहाँ तऽ हमर जीवन छी, अहाँ हमर श्वास छी, अहाँ हमर प्रेम छी, अहाँ हमर सपना छी, अहाँ हमर जीवनक सुगन्ध छी...अहाँ हमर स्वर्ग छी, अहाँ हमर प्रेमीका छी, अहाँ हमर कनियाँ छी।' हम हुनका प्रसन्न देखए चाहैत छलहुँ। हम हुनका चहकैत होइत देखए चाहैत छलहुँ। मुदा नहि ओ प्रसन्न भेलीह आ नहि ओ चहकलीह।

ओ बहुत ध्यानसँ हमर मुँह दिस देखैत रहलीह। हम हुनक आँखि दिस तकलहुँ आ डेरा गेलहुँ। हमरा लागल, हुनक आँखिमे एक तरहे बेचारगी देखा रहल छल। हम अपन मुहँकेँ निचा कएलहुँ आ प्रयास कएलहुँ, सहज देखि सकी। स्वयं हमरा बेचारा बनव पसीन नहि अछि आ कनियाँक आगा तऽ आओर नहि। मुदा हम नहि बुझैत छलहुँ हमरा भीतरकेँ कोन कोन्हमे ई घाउ अबैत अछि आ मुँहपर आबि कऽ ई काज कऽ दैत अछि। हम चुपचाप सहज होएबाक प्रयास करए लगलहुँ। बेटा सभ किछु बुझिए कऽ टेलिभिजनमे डुबि गेल छल। कनियाँ दोसर दिस मुहँ फेर लेलीह।

हमरा कनिक राहत भेटल आ हम कनिक सहज भेलहुँ। हम कनियाँक कोरामे माथ राखि कऽ देखए लगलहुँ, ओ कतहुँ आओर देखि रहल छलीह आ एहि तरहे चुप छलीह जेना मेघक बीचमे तारा चुपचाप देखाइत दैत अछि।

हम धीरेसँ हुनक हाथमे अपन हाथ राखलहुँ। हाथ ठन्ढा छल। हम धीर-धीरे हुनक हाथकेँ सहलेलहुँ। हाथ कापलधरि नहि। हम बहुतो कालधरि हुनक हाथकेँ चुपचाप सहला रहल छलहुँ।

फेर हम कहलहुँ, 'अहाँ हमर कनियाँ छी आ हम अहाँक पति। हमरा सभकेँ एक दोसरके समस्याकेँ बुझबाक चाही। अहाँ बुझैत छी, हम अहाँसँ कतेक प्रेम करैत छी ? अहाँक प्रसन्नता हमरा लेल, हमर जीवनमे कि अछि मुदा हमरा दुनू गोटेकेँ रहबाक लेल घर चाही। घर बनएबाक लेल काम चाही। कामक लेल अपन सर्त होइत अछि। हम ई काज नहि करब तऽ कोनो आओर काज करए पड़त। मुदा काजक बीना काज कोना चलत।'

ओ लगातार दूर देखि रहल छलीह। मुदा हुनक हाथमे किछु अनुभव भेल।

हम कहलहुँ, 'देखू कनिक पैसा जम्मा भेलाक बाद हमसभ मिल कऽ काज करब, अहाँ हमर बाँस बनब आ फेर देखब अहाँ हमरा कतेक छुट्टी दैत छी। मुदा एखनेसँ बुझि लिए अफिस टाइममे नहि लभ नहि रोमान्स, नहि तऽ सभ कारोवार ठप्प भऽ जाएत। हमसभ मिल कऽ रहब। हमसभ प्रसन्न रहब। तखनधरि हमर बेटा सेहो बड़का भऽ जाएत। सोचू एकरबाद कोनो समस्या रहत ?'

कनियाँकेँ हाथ कापल। ओ हमर माथ सहलौलीह आ फेर किछु एहि तरहे सहलावए लगलीह जेना ओ बर्षोसँ इहे कऽ रहल होइथि। ई सहलेलाक बाद पत्ता नहि कि छल हम कानए लगलहुँ। कनियाँ हमरा चुप करावएकेँ कोनो प्रयत्न नहि कएलीह। बस चुपचाप हमरासँ लेपटाएल रहलीह आ हमरा सहलवैत रहलीह। हुनकर ठन्ढा हाथ धीरे-धीरे गरम होइत जा रहल छल। ओ हमरा अपनामे एहि तरहे समेट लेलीह जेना हम हुनके शरीरक कोनो भाग होइ आ अलगसँ कोनो अस्तित्वे नहि हुए। मात्र कनबाक छोड़ि कऽ। जे रुकएके नामे नहि लऽ रहल छल।

आ एहिबीच हमर बुधियार बेटा टेलिभिजनकेँ आवाज तेज कऽ देने छल।

◆◆

अन्तिम पत्र

नमस्कार,

कोनो सम्बोधन एहि द्वारे नहि दऽ रहल छी, कारण अपनेक लेल हमरालग कोनो सम्बोधने नहि अछि। जखन अपन चारुदिस नजरि दोड़वैत छी, पबैत छी ओ सभ, हमरा लग अछि हुनका लेल हमरा लग उचित सम्बोधन अछि मुदा अपनेक लेल .... ?

अपनेक लेल हमरा लग किछु नहि अछि, नहि भावना आ नहि सम्बोधन। ओना यदि सम्बन्धक परिभाषा मानसँ देखल जाए तऽ अपनेकेँ आ हमरा बीचमे सेहो एकटा सूत्र जुड़ल अछि मुदा हम ओ सूत्रके नहि मानैत छी, एहि द्वारे ई पत्र लिख रहल छी।

एतए एहि घरसँ जखन हमर बिदा होएबाक समय आबि गेल अछि, तखन स्मृतिक अध्यायसभकेँ खोलैत पुरान पन्नाकेँ टटौलैत पत्र अपनेकेँ लिख रहल छी।

विश्वास करी हम एना कहिओ नहि करए चाहैत छलहुँ, यदि चाहितहुँ तऽ एहिसँ पहिनहुँ कहिओ लिख देने रहितहुँ। आई यदि पत्र लिख रहल छी, तऽ ओकर पाछु एकटा बड़का कारण अछि। आ ई कारण अपनेसँ जुड़ल अछि आ हमरासँ सेहो।

ई पत्र सम्भवतः अपने आ हमराबीचक पहिल सम्वाद अछि आ भगवानसँ हमर प्रार्थना अछि जे इहे अन्तिम हुए, कारण एहिद्वारे तऽ ई पत्र लिख रहल छी।

पत्र शुरु करएसँ पहिने बहुत भूमिका एहिद्वारे बान्हि रहल छी, अपनेकेँ एना नहि बुझाए, ई एकटा लड़कीद्वारा भावुकतामे लिखल गेल पत्र अछि। ई पत्र एकटा सुदृढ़ मनस्थितिमे लिख रहल छी। एकटा बात पुनः दोहरा रहल छी जे लिख एहिद्वारे रहल छी, कारण एहिकेँ अतिरिक्त कोनो उपाए नहि अछि।

हम सेहो नहि बुझैत छी, ओहिसमय यदि हम सोचि पवितहुँ तऽ कि सोचितहुँ जखन, हम मात्र किछु दिनक छलहुँ। सायद १० दिन पहिने हमर जन्म भेल छल। दाई कहैत अछि, अपने शहरसँ आएल छलहुँ आ बरण्डापर बैसल छलहुँ। जखन दाई ओहि १० दिनक हमरा अपनेक कोरामे राखि देने छल आ किछु बिहुँसैति कहने छल, 'ले बौवा देख ले अपन बेटीकेँ।'

आगाकेँ घटना बतवैत दाई किछु गम्भीर भऽ गेल मुदा बतौने अवश्य छल। सम्भवतः इहए बात अछि, हमरा एतेक मजगुत बनौलक। हम सोचैत छी, दाई सेहो सायद एहिद्वारे बेर-बेर ई घटना सुनौलक कारण ओहो हमरा एहने बनावए चाहैत छल। १० दिनक हम अपनेकेँ कोरामे सुतले छलहुँ, अपने घृणासँ उठा कऽ, ई कहैत गोबरसँ निपल माटिपर पटैकि देने रही, 'हटो ई नाटक, एक तऽ अनपढ़ गबार, देहाती हमरा बान्हि देलाएँ आ उपरसँ एहिसभ चक्करमे पड़ल रही।'

दाई बतौने छल, तखन अहाँ सायद मात्र अपन सामान लेबाक लेल ओतए आएल छलहुँ। कारण तहिआ गेलाक बाद फेरसँ नहि एलहुँ। हम कहिओ नहि बिसरि पेलहुँ एहि बातकेँ, अपने हमरा घृणासँ जमीनपर पटकि कऽ एकटा नाम देलहुँ 'नाटक'।

हम नहि बुझैत छी, अपनेकेँ आ हमराबीच मर्यादाक कोनो छाँह

अछि। एहिद्वारे पुछैत छी अपनेसँ, 'ई नाटक आएल कतएसँ ? ओहे अनपढ़ गबार देहातीक सँग अपनेक सम्बन्धेकेँ तऽ ई परिणाम अछि.... ओ महिलाकेँ भोगैत समयधरि अपनेकेँ विचार नहि आएल, ओ अनपढ़ गबार देहाती अछि।'

हमर माँ भलेही ओ तिरस्कारकेँ सहि लेलक मुदा हमरा मोनमे स्वंयकेँ देल गेल अपनेक नाम नाटकरुपी अपमानकेँ कहिओ सहजतासँ नहि लेलहुँ।

अपने एकटा बड़का लेखक बनए चाहैत छलहुँ आ बनिओ गेलहुँ। आई अपनेके नाम अछि, मान अछि, सम्मान अछि, सभकिछु अछि आ एहिसभ बीचमे हम आ हमर ओ कृषकाय माँ कतहुँ नहि अबैत अछि कारण ओतए तऽ किओ आओर अछि, ओ जेकरा अपने सीढ़ीकेँ जकाँ प्रयोग कएने छी। सीढ़ी एहिद्वारे कारण ओ अपनेक प्रकाशककेँ बेटी छल। जेकर प्रकाशनसँ एकटा नुकाएल लेखककेँ अन्हारसँ निकालि कऽ सफलताक प्रकाशमे लाबि सकैत छल।

हमर माँ चाहैत तऽ ओकरा रहैत दोसर विवाह कएलापर अपनेकेँ अदालतमे सेहो तानि सकैत छल, मुदा ओ अपने जकाँ नहि अछि, ...हँ यदि ओकर स्थानपर हम होइतहुँ तऽ एना अवश्य करितहुँ।

हमरा स्मरण अबैत अछि, जखन हम छोट छलहुँ। बहुतबेर ओहि एक पुरुषकेँ कमी अनुभव भेल, जेकरा हम दोसरकेँ घरमे पिताक रुपमे देखैत छलहुँ। ओ पुरुष जखन कोनो छोट बच्चाकेँ रुइसँ भड़ल गुड़िया लऽ कऽ दैत छल, हम कानि उठैत छलहुँ। जखन कोनो बच्चाकेँ पिताकेँ आँगुर पकरने जाइत देखैत छलहुँ तऽ माँसँ, दाईसँ पुछैत छलहुँ, 'ई पुरुष बाँकीकेँ सभ घरमे अछि मुदा हमरा घरमे किए नहि ?'

ओ दुनू महिलाकेँ आँखि भरि जाइत छल आ आँखिसँ आगि निकलए लगैत छल, हमर एहि प्रश्नसँ। ओना ई बातसभ तखनकेँ अछि जखन हम छोट छलहुँ, अबुझ छलहुँ। ओहिसमय हमरा बुझले नहि छल, जाहि

पुरुषकेँ लऽ हम एतेक परेशान छी, ओहे पुरुष हमरा नाटक नाम दऽ कऽ चलि गेल छथि ।

जखन ठीकसँ बुझए लायक भेलहुँ तखन पहिलबेर दाई बैसा कऽ सभकिछु कहलक आ सभकिछु साफ-साफ बता देलक । हमरा स्मरण अबैत अछि, ओहिदिन हम स्कुल नहि गेलहुँ आ दिनधरि घरमे बैसिकऽ कनैत रहलहुँ । मुदा दोसरे दिन जखन भोर भेल तऽ हम सभकिछु बिसरि गेल छलहुँ, ओ विगतकेँ जे हमर छल । हमरा मात्र ई शब्द 'नाटक' स्मरण अछि ।

ओहिदिनक बाद हमरा फेर ओ पुरुषकेँ अभाव कहिओ नहि अपन जीवनमे भेल । जे दोसरकेँ घरमे पिता बनि कऽ नजरि अबैत छलाह, ओहिदिनक बाद हमर एकटा नव जन्म भेल आ एकटा मजगुत दृढ़ निश्चयी, लड़कीक जन्म ।

दाई आ माँ दुनू चाहैत छल, हम खूब पढ़ी आ हमहुँ इहे कएलहुँ । नेपालीमे मास्टर डिग्री लेवएकेँ पाछु हमर आकांक्षा इहे छल, हम ओ नाटक नाम देवएबलाकेँ ई बता सकी, 'आब हमहुँ ओहे छी जे अहाँ छलहुँ ।'

क्याम्पसक क्रममे कतेकोबेर एना भेल, अपनेक नाम कहुना नहि कहुना अबैत रहल । फेर जखन अपने, अपन आत्मकथात्मक उपन्यास लिखलहुँ तखन अपनेकेँ आ हमराबीचक एकटा सत्य सभकेँ पत्ता चलि गेल छल । जखन हम नेपालीमे एमए कऽ रहल छलहुँ तखने ओ उपन्यासपर एकटा संगोष्ठीक आयोजना कएल गेल छल । हमरो ओहिमे अपन विचार रखबाक अवसर भेटल । हम अपन बातक आरम्भ एहितरहे कएने छलहुँ, 'ई हमर दूर्भाग्य अछि, हमहुँ एहि उपन्यासमे छी । एना एहिद्वारे कारण ई लेखक हमर माँ केँ पति रहल छथि । मुदा एकटा बात हम स्पष्ट कऽ देबए चाहैत छी, हमर माँकेँ पति होवएकेँ अर्थ ई कथमपि नहि अछि, ओ हमरो पिता छथि । पिता एकटा पदवी होइत अछि, हम

कोनो कायर वा भगौराकेँ नहि दऽ सकैत छी .... ।'

एतेक कहि कऽ जखन हम श्वास लेबाक लेल रुकलहुँ तऽ पूरा हल तालीसँ गुञ्जि गेल । सत्य कही तऽ बड़का पुरस्कार हमरा जीवनमे दोसर नहि भेटल । ओ ताली हमरा आओर मजगुत कऽ देलक आ ओहि व्यक्तिसँ हमर पहिल जवाव छल जे हमरा नाटक नाम देने रहथि ।

एमए कएलाक बाद पीएचडी कएलहुँ आ तेकरबाद हमर नाम भऽ गेल डाक्टर चित्रा मिना मिश्र । मिनाकेँ स्वयं हम अपन नामक बीचमे स्थान देलहुँ । कारण ओ हमर माँके नाम अछि, हमर नामक बीचमे कोनो भगौराक नामे नहि आबि सकैत अछि, ई हमर दोसर जवाव छल ।

ई पत्र जाहि प्रयोजनसँ लिख रहल छी, आब ओहिपर अबैत छी, अपनेकेँ तऽ पत्ता भऽ गेल हएत, हमर विवाह भऽ रहल अछि । पत्ता एहिद्वारे चलि गेल हएत कारण हम बुझैत छी, माँ आ दाई हमरासँ नुका कऽ खबरि कएने अछि । हम इहो बुझैत छी, ओ दुनू महिलाकेँ नहि चाहितो मात्र सामाजिक मान मर्यादाक कारण एना कएने अछि । हमहुँ सभ किछु बुझैत ओकरासभकेँ किछु नहि कहलहुँ, हम ओ दुनू महिलाकेँ छोड़ि कऽ आब जा रहल छी, तखन किछु कऽ कऽ दूनुक हृदय नहि दुखावए चाहैत छी ।

परम्परा ई अछि जे कन्यादानक समय महिलाकेँ पति सेहो सँग रहैत अछि । दुनू मिल कऽ अपन बेटीकेँ कन्यादान करैत छथि, सायद इहे आ मात्र इहे परम्पराक कारण ओ दुनू महिला अपनेकेँ सूचना देलक अछि ।

हम ई पत्र एहिद्वारे लिख रहल छी कारण अपनेकेँ ई बता दी, 'कोनो व्यक्ति दान ओही चीजकेँ कऽ सकैत अछि, जे ओकर हुए । आ जखन अपनेकेँ हमरापर कोनो अधिकार नहि अछि, तऽ दान कोना कऽ सकैत छी ?'

जाहि उमेरमे एकटा गुड़ियाक लेल तरसति छलहुँ, तखन अपने हमरा नहि दऽ सकलहुँ । आब जखन ओ दुनू महिला मिल कऽ एकटा गुड्डा हमरा लेल खोजलक अछि तखन हम नहि चाहैत छी, संसारक आगु आबि कऽ ई सावित करबाक प्रयास करी, अहीँ हमरा लेल गुड्डा लाबि कऽ देलहुँ अछि ।

समाज पुरुषप्रधान अछि आ निश्चित रुपसँ जखन अपने, रहब तऽ अपनेहीकेँ पूरे श्रेय भेटत आ दुनू महिलाक पूरा तपस्या व्यर्थ भऽ जाएत। हम नहि चाहैत छी, अहाँ ओहि गुड्डाकेँ हाथमे हमर हाथ सोपी, पिताक सम्बोधन नहि काल्हि अपनेकेँ दऽ सकैत छलहुँ आ नहि आई दऽ सकब, हमर जीवन एहि सम्बोधनसँ विहिन अछि। रहल अपनेक बात तऽ अपनेकेँ सँग भगवान न्याय कएलक अछि। अपने हमरा नाटक कहि कऽ जमीनपर फेकि कऽ चलि गेलहुँ। शायद इहे कारण अपने फेर निःसन्तान रहलहुँ। निःसन्तान एहिद्वारे कारण हम स्वयंकेँ अपनेक सन्तान नहि मानैत छी। आ ओ दोसर महिलासँ अपनेकेँ किछु नहि भेटल। नहि बेटा आ नहि बेटी।

हम स्वयंकेँ पिता सम्बोधनसँ स्वयंविहिन कएलहुँ। मुदा अपनेकेँ बच्चाक सम्बोधनसँ तऽ स्वयं भगवानविहिन कऽ देलक अछि। हम बुझैत छी, ई सम्बोधनविहिन होएबाक कारण अपने अवश्य चाहब विवाहमे आवएकेँ।

एहिद्वारे अपनेसँ कहि रहल छी, 'अपने हमर विवाहमे नहि आबी। हम अपन विवाहमे कोनो नाटक ठाढ़कऽ, ओ दुनू महान महिलाकेँ दुःख नहि पहुँचावए चाहैत छी... जे हमरा एतएधरि लाबि कऽ ठाढ़ कएलक आ आई क्याम्पसमे अपने आ अपने जेहन लेखककेँ अपन विद्यार्थीक रुपमे पढ़वैत छी।'

पुनः अपनेसँ कहए चाहैत छी, 'अपने विवाहमे नहि आबी। हम बुझैत छी अपने एतेक बेशर्म नहि छी, एतेक किछु लिखलाक बादो चलि आएब। पत्रमे लिखल कोनो बातक लेल क्षमा मागएकेँ औपचारिकता एहिद्वारे नहि करब कारण हम किछु गलत नहि लिखने छी। यदि अपनेकेँ कोनो बात खराब लागल, एकरा लेल अपने स्वयं जिम्मेवार छी...आशा अछि अपने नहिए आएब।'

♦♦

नव अध्याय

सावित्रीकेँ मोनमे आई अजिवसन शान्ति रहन्हि, ओना बिचारक ओझराहट रुकि नहि रहल छल। जाहि बच्चाक लेल ओ पूरा जीवन समर्पित कएलन्हि, ओहे सभ एहन ठेस पहुँचौलक जे आई हुनका एहन कठोर निर्णय लेबए पड़ि रहल अछि। अपन ममताक बिरुद्ध जा कऽ निर्णय लेब, मायकेँ जीवनक सभसँ कठिन समय होइत अछि। ओ बरन्डापर रहल कुर्सीपर सीधे पसरि गेलीह। अस्त भऽ रहल सूर्यक किरण मस्त हावाक सँग बातचीत कऽ रहल छल। प्रकृति हुनका हरेक समय शान्तिसँ भरि दैत अछि.....।

.... मोन चञ्चल होइत अछि। कखनो अतीतमे घुमैत अछि, तऽ कखनो भविष्यक सुन्दरसन सपना बुनबाक लेल प्रेरणा दैत अछि। सावित्री सेहो अतीतक सुन्दर, खराब क्षणक हिसाब-किताब करए लगैत छथि....।

माय बापक एकलौती सन्तान छलीह ओ। मध्यमवर्गीय परिवारक सभ सुख भेटल रहन्हि। अपन घर छल, किताब आ खेलौनासँ भरल रहैत छल। माँकेँ तऽ ओ बहुत चहेती छलीह। जे किछु मँगैत छलीह, शीघ्र भेटि जाइत छल। सभ किछु बढ़ियाँ जकाँ चलि रहल छल....मुदा

कालकँ हुनक सुख पसिन नहि आयल। कोनो विवाहसँ आबि रहल समय एकटा दुर्घटनाक मातापिता शिकार भऽ गेल। छोटसन उमेरमे हुनक जीवन दोसरपर निर्भर भऽ गेल।

ई दुर्घटना हुनक जीवनकँ दिसा बदलवाक लेल बहुत छल। हुनका देखरेखक लेल काका किरायाकँ घर छोड़िकऽ सपरिवार ओतए आबि कऽ रहए लगलथि। शुरुमे सभ किछु ठीक रहल। सावित्री हुनका अपन माता पिता जकाँ सम्मान दैत छलीह। काका काकी सेहो अपन बच्चा जकाँ प्रेम करैत छला, हुनकासँ। हुनकरसभक मोनमे सम्वेदना छल। मुदा धीरे-धीरे समय बदलल, प्रेम आ स्नेहपर स्वार्थ हाबी होबए लागल। देखिते-देखिते सावित्रीक सभ चीज आ खेलौना छिनाए लागल आ फेर हुनक सुन्दरसन रुमपर पितियौत भाई-बहिनक कब्जा भऽ गेल। ओ घरक पूरे काज करैत छलीह, रातिमे. थाकि कऽ बरन्डापर ओछायन ओछा कऽ सुतैत छलीह।

.....सुतैत समय हुनका बराबर माँकँ गीत, किताब खेलौनाक सपना अबैत रहैत छल, निन्दमे किछु नोर सेहो निकलि जाइत रहन्हि। जगैत छलीह तऽ आशाक कोनो किरण हुनका आस्वस्त करैत रहैत छल, एहि आशा निराशाक बीच बड़का भऽ रहल रहथि आ फेर युवा सेहो भऽ गेलीह। काका-काकी जल्दीसँ जल्दी हुनक विवाह कराबए चाहैत रहथि, घर पर पूरे तरहे अधिकार भऽ सकए हुनक सभक ईच्छा छल। नहि जानि किए सावित्रीकँ लगैत रहन्हि, पतिक घरमे हुनक अपन अभिलाषा पूरा करबाक अवसर भेटत।

....आ फेर एकटा साधारण परिवारमे हुनक विवाह तय भऽ गेल। सासुर पहुँचलीह तऽ एकटा दोसर सत्य पत्ता चलल। छोटसन भाड़ाक घर आ सँगमे दूटा ननैदि आ दियौर। पति राजेश्वर घरमे सभसँ बड़का छलथि आ माता पिता नहि रहन्हि। एकरो अपन नियति मानि कऽ सावित्री पूरे परिवारक जिम्मेवारी उठा लेलीह। एतबे बेसी छल, राजेश्वर

हरेक जिम्मेवारी निमाहएमे हुनका सहयोग देलन्हि।

....युवाअवस्थामे एतेक बड़का जिम्मेवारी हुनका समयसँ पहिने समझदार बना देने छल। ओ करीब-करीब अपने उमेरक ननैदि आ दियौरकँ, अपन बच्चा जकाँ पाललन्हि-पोसलन्हि। हुनक सभक सुखकँ, अपन सम्झलन्हि आ अपन परिवारक लेल जीवन समर्पित कऽ देलन्हि।

हरेक महिलाकँ इच्छा होइत अछि, हुनका अपन एकटा घर हुए, जेकरा अपन मोनसँ सजा आ सम्हारि सकथि मुदा जिम्मेवारीमे ई सपना कतहुँ दबि गेल छल। एहिबीच हुनका अपन परिवार सेहो बढ़ल। दूटा बेटा भेलन्हि, जिम्मेवारी बढ़व स्वभाविक छल। जखनधरि दियौर आ ननैदिकँ कैरियर आ विवाहक तैयारी करैत छलीह, हुनकर अपन दूनु बच्चा बड़का भऽ गेल। फेर ओकर पढ़ाइ, लिखाइ आ विवाह करैत-करैत सावित्री पूरे तरह खाली भऽ गेलीह। मनसँ आ धनसँ सेहो।

पतिक आम्दानी एतेक नहि छल, जे अपन घरक सपना देखि पबितथि। मुदा तखने हुनका एकटा फोन सपनाक आशा बढ़ा देलक। पतिक गामसँ फोन आयल, ओतए हुनक पूर्वजक जमीन बटबारा भऽ रहल अछि। राजेश्वर आबि कऽ अपन भाग लऽ जाथि आ जमीनक बदला पैसा सेहो। राजेश्वर पैसा लेलन्हि आ फेर कनी लोन लऽ कऽ घर बना लेलन्हि।

छोट सही, मुदा सावित्रीक लेल अपन घरक सपना पूरा हएब कोनो सुखद अनुभवसँ कम नहि छल। मोनसँ ओकरा सजौलन्हि। पतिपत्नी सुखद अनुभूति आ सन्तुष्टिकसँग गृह प्रवेश कएलन्हि। अपन खर्चमे कटौती कऽ सावित्री लोन चुकाबए सेहो शुरु कऽ देलन्हि। अबेर रातिधरि सिलाइकटाई करैत रहैत छलीह। तखनधरि दुनू बेटाक कैरियर बनि गेल छल आ विवाह सेहो भऽ गेल। पतिपत्नीक जीवनमे कनिक आराम आयल। जीवन शान्तिसँ बीत रहल छल, एहिक्रममे बड़का बेटाक फोन आयल, ओकर बदली एहि शहर मे भऽ रहल अछि। ओहो एहि शहरमे

आबि रहल अछि। एकटा बेडरुमपर बेटाक अधिकार भऽ गेल छल।

बेटा पुतहुकेँ अबिते खर्च दुगुन्ना भऽ गेल छल। पुतहुँ गर्भवती छलीह, सावित्रीकेँ हुनक देखभाल करए पड़ैत रहन्हि। सोचने रहथि, बेटा खर्चमे हात बटाओत। एक-दूबेर सावित्री अप्रत्यक्ष रुपसँ बातो कएलथि, मुदा बेटाक दिससँ कोनो एहन संकेत नहि भेटल, जाहिसँ हुनका कोनो राहत भेटि सकए। सावित्रीक उमेर बढ़ि रहल रहन्हि, ओहिपर लोनक किस्ता चुकाएब सेहो भारी पड़ि रहल छल। पुतहुकेँ देखभाल सेहो हुनकेँ करए पड़ैत रहन्हि। भाग्य हुनकासँ फेर रुसए लागल छल। राजेश्वर ओना तऽ चुप्पे रहैत छलथि, मुदा बढ़ैत खर्च आ बच्चाक गैरजिम्मेवार व्यवहारक कारण ओ तनावमे रहए लागल छलथि। एकदिन अचानक हुनका हृदयघात भेल। शीघ्रे अस्पताल पहुँचाओल गेल, मुदा ओ ओतएसँ नहि घुरलथि, दबाई आ आशिर्वादक बादो जीवन हारि गेल। सावित्रीक जीवनमे फेरसँ खालीपन चलि एलन्हि।

पतिक वियोग सावित्रीक लेल असहनीय बहुत भऽ रहल छलन्हि। ओ पूरापुर टुटि चुकल छलीह। हरेक समय राजेश्वरसँग बिताएल निक खराब क्षण आँखिक आगा नाँचए लगैत रहन्हि। पिताक अन्तिम संस्कारमे छोटका बेटा एलन्हि। जाइत समय अपन परिवारकेँ छोड़ि गेल छल। ६ महिनाक बाद ओहो अपन बदली ओही शहरमे करा लेलक। जेना दू परिवारक रहब शुरु भेल, पुतहुक बीच तनाव आ तुतु मेमे शुरु भऽ गेल। ओ झगड़ा सुल्झाबएकेँ प्रयास करथि मुदा बराबर एहि मध्यस्थतामे दुनू पुतहुँ एक भऽ जाइत छलीह आ हुनकेँ पर दोषारोपण शुरु भऽ जाईत छल।

धीरे-धीरे बेटा सेहो हुनकासँ कटए लागल आ बातबात पर माएकेँ उल्हन देबएकेँ दैनिक जीवनमे समावेश भऽ गेल।

बहुत अभिलाषाक बाद बनल एहि छोटसन घरमे सावित्री धीरे-धीरे अपना सभक बीच पराई भऽ गेल छलीह। ओ चुप्पी ओढ़ि लेलीह।

मुकदर्शक बनि कऽ हरेक चीज देखैत रहैत छलीह, तटस्थ रहथि। जीवाक इहे तरिका हुनका बुझ्रएमे आबि रहल छल।

.... मुदा कहिओ-कहिओ राजेश्वरक स्मरण हुनका बहुत कनबैत रहन्हि। सोचैत हरेक कठिनाइएक सँग निमाहएबला जीवनसाथीक उमेरक एहि पड़ावपर साथ होइत तऽ शायद ई समस्यासँ भरल यात्रा सहज होइत। असगरपन आब तनावग्रस्त होबए लागल छल। एकदिन ओछायनपर पड़ल रहथि तऽ आहट भेल।

'केँ छी ?' सावित्री पुछलीह।

'हम, पंकज ......', बेटा जबाव देलन्हि। बहुत दिनक बाद बेटाक चेहरा देखि रहल छलीह, चलु माँकेँ त स्मरण आयल, सोचैत ओ पुछलीह, 'कह बेटा कोना एलए ?'

'माँ गलत नहि बुझ्रए तऽ तोरासँ किछु कहए चाहैत छीयौ। देखि अपन घर छोट अछि, दूइयेटा बेडरुम अछि, एकमे बड़का भैयाक परिवार रहैत अछि दोसर तोरा लग छौ.... हमरा प्रत्येक दिन ड्राइंग रुममे ओछायन लगाबए पड़ैत अछि, ठीकसँ निन्द नहि होइत अछि आ समय सेहो बरबाद होइत अछि.... यदि तो अपनहि रुम दऽ देबही त तोहर पुतहुकेँ सुविधा हेतहुँ। तौँ त असगरे रहैत छैं, बरन्डोपर सुति सकैत छैं.....।'

'की ??' सावित्रीकेँ आवाज कापए लागल, 'ई तौँ की कहि रहल छैं ?'

'माँ हम तऽ मात्र तोरा अपन पुतहुँकेँ इज्जत देबाक लेल कहि रहल छीयौ .....' पंकज बाजल।

'ई रुम हमर अछि बेटा। ओहिमे तोहर बाबूजीक बहुत स्मरणसभ अछि। ई त कमसँ कम हमरा लग रहए दे ......', सावित्री तामसमे बजलीह।

एहिकेँ बाद तऽ घरमे हुनक स्थिति आओर खराब भऽ गेल। सावित्री

ओहिना पाहुन जकाँ रहैत छलीह, जिनकासँ सभ पाछु छोड़ाबए चाहैत छल। राजेश्वरकेँ गेला एको साल नहि बितल छल की बड़का बेटा बाजल, माँ जीबिते घरकेँ बटबारा कऽ दही। कहीं एना नहि हुए तोरा गेला बाद हमरासभमे झगड़ा होबए लागए।

'बटबारा ? हम की बटबारा करिऔ ? कथी लेल बटबारा ?' सावित्री आक्रोशित भऽ बजलीह।

'बाबूजीक सम्पतिमे हमरोसभकेँ अधिकार अछि माँ....', बड़का बेटा बाजल।

'हक मात्र लेबाक लेल ? जखन कर्जा लऽ कऽ घर बनौने छलहुँ, तखन तोँ कतए छलए ? ...देखि बेटा ई घर हम बहुत मेहनतसँ बनौने छलहुँ, एकरा हम बटबारा नहि होबए देब।'

पीड़ा आ तामससँ सावित्री हकमए लगलीह, ई ओहे बच्चा अछि, जेकरा लेल अपन अभिलाषाक गला घोइँट देने छलीह। चाहितथि तऽ राजेश्वरक सीमित आम्दानीमे आरामसँ रहि सकैत छलीह, मुदा बच्चाक बढ़िया शिक्षा आ कैरियरक लेल अपन ईच्छाकेँ दबा देने छलीह। आ आई इहे बच्चा चाहैत अछि, अपन अधिकार समाप्त कऽ दी। एहि घटनाक बाद तऽ मात्र बेटा पुतहुँ नहि, पोतापोती सेहो हुनकासँ दूर भऽ गेल।

ओ पूरे दिन असगरे अपना रुममे बैसल रहैत छलीह वा सिलाई कटाई करैत रहथि छलीह। कखनो सोचैत छलीह, घर आ कोनो आश्रममे चलि जाइ मुदा दोसरे क्षण सोचए लगैत छलीह, एतेक मोनसँ बनौने छलहुँ एहि घरकेँ आ एहि उमेरमे कोना छोड़ि दी।

फेर सोचलीह, जीवनभरि अपनाक लेल कएलहुँ, आब किछु एहन करी जाहिमे, आत्म सन्तुष्टि हुए। अन्ततः बहुत माथापिच्ची कएलाबाद ओ, एकटा गम्भिर निर्णय लेलन्हि। ओ दूनु बेटाकेँ बजौलन्हि आ कहलीह, 'बहुत सोचि आ बिचारक बाद हम निर्णय लेलहुँ अछि, एहि

घरके बृद्धाश्रम बनाएब। एहिके लेल हम एकटा स्वयंसेवी संगठनसँ बातो कएलहुँ अछि। एहिद्वारे आब तोँ दूनु गोटे अपन परिवारसँग दोसर व्यवस्था कऽ लए।'

हुनक निर्णयसँ ओसभ आश्चर्यचकित भऽ गेल। ओकरा सभकेँ अपन सीधासाधी मायसँ एहन निर्णयकेँ अपेक्षा नहि छल। ओकरासभकेँ लागल, माँ सठिया गेल अछि। ओसभ सम्झाबएकेँ बहुत प्रयास कएलक मुदा निर्णयपर ओ अडिग रहलीह।

सावित्रीकेँ मोनमे स्मरणक फ्ल्यास ब्याक चलि रहल छल। एकटा आहटक बाद ओ चौँक कऽ देखलीह। किछु लोक गेटपर बोर्ड लगा रहल छल, दोसरे दिन आश्रमकेँ उदघाटन होबएबला छल। सावित्री बोर्डपर लिखल अक्षर पढ़लीह, राजेश्वर बृद्धाश्रम। ओ लम्बा श्वास लेलीह आ अपन आँखि मुनि लेलीह। साँझ गहराए लागल छल, आकाशपर चन्द्रमा अपन यात्रा शुरु कऽ देने छल। सावित्रीक जीवनक सेहो एकटा नव अध्याय शुरु भऽ रहल रहन्हि। हुनक आ राजेश्वरक सपनाक घर आब किछु बेसहारा आ बेघरक घर बनए जा रहल छल।

♦♦

मीठ-मीठ बात

बन्दनाक संगी चम्पाकेँ भोरे फोन आएल छल। हुनकर हालचाल पुछलाक बाद चम्पा कहलीह, 'अहाँसँ किओ बात करए चाहैत अछि।'

'केँ छथि ?' बन्दना उत्सुकता देखओलैन्हि।

'अहाँ स्वयं चिन्ह लेबै हुनका', चम्पा कहलीह।

लाइनपर किछु देर शान्ति रहलाक बाद फेर बन्दनाक कानधरि कोनो पुरुषके स्वर आएल, 'केना छी, बन्दना ?'

बन्दनाकेँ केदारक स्वर चिन्हएमे अबेर नहि भेलैन्हि, करीब ६ महिनाक बाद अचानक ई आवाज सूनि कऽ स्तब्ध रहि गेलीह।

'हम ठीक छी', किछु क्षणक मौनताक बाद ई शब्द बहुत कठिनाइसँ निकालि पेलीह।

'हम नारायणघाटसँ जलेश्वर चलि एलहुँ, बन्दना', केदार कहलैन्हि।

'हमरा किए कहि रहल छी ई सभ ?' बन्दना भावहीन स्वरमे पुछलीह।

'अहाँक तामस जायज अछि, बन्दना अहाँसँ भेटि कऽ अपन विवशता बताएव। हम किए अहाँसँ बिनु भेटने नारायणघाट चलि गेल छलहुँ, ओकर कारण बताएब... अहाँ प्लीज हमरासँ भेटए चलि आउ', केदारके

आवाज भावुक भऽ गेल छल।

'हम आब अहाँसँ भेटबाक कोनो आवश्यक्ता नहि बुझैत छी, केदार। हम अहाँकेँ बिसरि गेलहुँ, आब कोनो सम्बन्ध राखए नहि चाहैत छी', बन्दना केदारसँ कहलैन्हि।

'अपन पहिल प्रेमकेँ एतेक आसानीसँ लोक नहि बिसरि सकैत अछि, बन्दना', केदार हुनका प्रेमक बात स्मरण करओलैन्हि।

'पहिल प्रेमकेँ बिसरबाक अधिकार की लड़केकेँ होइत अछि ?' बन्दना आवेशसँ भरि उठलीह, 'अहाँक बदमाशी चिन्ह लेलहुँ, हमर विवाह कतहुँ दोसर ठाम भऽ रहल अछि। तएँ अहाँ हमर जीवनमे फेरसँ प्रवेश करबाक प्रयास नहि करु', बन्दना कड़ा शब्दमे कहलीह।

'चम्पा हमरा कहलक अछि, एखन जतऽ अहाँक बात चलि रहल अछि ओतऽ पक्का नहि भेल अछि', केदार कहलैन्हि।

'नहि भेल अछि, तऽ भऽ जाएत, अहाँ हमरा सम्बन्धमे इन्ट्रेस्ट नहि लिअ केदार', बन्दना कहलीह।

'हम इन्ट्रेस्ट किए नहि लिअ, बन्दना ? देखू, हम अहाँसँ ६ महिना दूर रहलहुँ आ एहि क्रममे हमरा एकटा बात बुझएमे बढ़ियाँ जकाँ चलि अएल', केदार कहलैन्हि।

'कोन बात ?' नहि चाहितो बन्दना पूछि देलीह।

'इएह जे हम अहाँसँ दूर रहि कऽ सुखी नहि रहि सकैत छी। अहीं ओ लड़की छी जिनकासंग अपन जीवन बिताबऽ चाहब... बन्दना अहाँकेँ हमरे बनि कऽ रहऽ पड़त। आओर कतहुँ अहाँके सम्बन्ध एकदम नहि होबऽ देब.....हमरासँ भेटऽ आउ बन्दना, आ हमरा आँखिमे ताकि कऽ देखू, अहाँसँ एखनो पहिनहि जकाँ प्रेम करैत छी', केदारक आवाजमे उत्तेजना बेसी भेलाक कारण ओ काँपि रहल छलाह।

'हम नहि आएब', अपन मनोभावकेँ नियन्त्रणमे रखैत बन्दना जबाब देलीह।

'अहाँकेँ एकबेर तऽ हमरासँ भेटए आबही पड़त', केदार जिद्द कएलैन्हि ।

'नहि', बन्दना दृढ स्वरमे अस्वीकार कएलैन्हि ।

'हम अहाँकेँ अएबाक लेल विवस सेहो कऽ सकैत छी, हम अहाँसँ बहुत प्रेम करैत छी, बन्दना हमरा धम्की देबाक लेल विवश नहि करु', केदारक स्वरमे तामस झलकि रहल छलैन्हि ।

'केना विवश करब अहाँ हमरा भेटबाक लेल ?' बन्दना तनावग्रस्त अवस्थामे पुछलीह ।

'अहाँ हमरासँ भेटए आउ आ हम अहाँकेँ प्रेमपत्रसभ घूरा देब', केदार कहलैन्हि ।

'यदि हम एखनो आबएसँ अस्वीकार करब तऽ ?' बन्दना बजलीह ।

'तऽ हम अहाँकेँ विवाह कतहुँ नहि होबए देब....अहाँ हमर अतिरिक्त ककरो भऽ कऽ नहि रहि सकैत छी ... प्लीज बन्दना मात्र एकबेर हमरासँ भेटए चलि आउ, हम अहाँक आगा सभ पत्र फाड़ि देब । हमरा विश्वास अछि, हमरसभक एक भेटि बहुत किछु विश्वास दिआ सकैत अछि, अहाँ अपन सभ तामस समाप्त कऽ लेब, एकटा अवसर दिअ, अहाँक आगूमे हम अपन बात राखि सकी', केदार नेहोरा कऽ बजलाह ।

'ठीक छै केदार, हम बेरियामे तीन बजे अबैत छी, अहाँसँ भेटए चम्पाक घरपर', बन्दना कहलीह ।

केदारक कारण बदलल परस्थितिपर सोचविचार करबाक लेल बन्दना एखन अपना रुममे पहुँचलो नहि छलीह की टेलिफोनक घन्टी फेरसँ बाजि उठल ।

टेलिफोन बन्दनाक माय उठोलैन्हि, बन्दनाक मौसी ई कहबाक लेल फोन कएने छलीह, लड़काबला हुनक सम्बन्ध स्वीकार कऽ लेलक । विवाहक गते तय करबाक जिम्मेबारी लड़कीबलापर छोड़ि देलैन्हि अछि ।

बन्दनाक माय जखन ई खुशखबरी हुनका सुनोलैन्हि, हुनक चेहरा

प्रशन्नताक कारण चम्कए लागल । दिमागपर रहल चिन्ता किछु देरक लेल हटि गेल ।

जे लड़का एक हप्ता पहिने हुनका अपन माय आ दू बहिनसँग देखबाक लेल आएल छल, हुनक नाम नवीन छल, एकटा बहुराष्ट्रीय कम्पनीमे बढ़ियाँ पदपर कार्यरत अछि । ओ असगरेमे बन्दनासँ आधा घन्टाधरि बात कएने छल । बन्दना हुनक प्रशन्नचित व्यवहार आ समझदार व्यक्तित्वसँ प्रभावित छलीह ।

'हम कनियाँकेँ पतिक बराबरक स्थान दैत छी, बन्दना । देखाबाक जीवन जीअमे हमरा कोनो इन्ट्रेस्ट नहि अछि । अपन छोट परिवारक सँग सुख-शान्ति भरल जीवन बिताबए चाहैत छी । हमर माता पिता हरेक समय हमरासँग रहत । बहिनके विवाह करबाक कर्तव्य बढ़ियाँ जकाँ करए चाहैत छी....अहूँ अपन भावी विवाहित जीवनकेँ लऽ कऽ किछु सपना वा इच्छा हृदयमे रखने हएब । यदि ओसभ हमरा जेहन साधारणसन व्यक्तिक सँग जीवन बितएबाक आदेश अहाँकेँ दैत अछि तऽ अहाँक,'हँ' सूनि कऽ हम स्वयंकेँ बहुत सौभाग्यशाली बुझब ।'

बन्दनाकेँ ई वाक्य सूनि कऽ नवीनक प्रति बहुत आदर बढ़ि गेलैन्हि । केदारक व्यवहारसँ ओ बहुत दुःखी छलीह । प्रेममे धोखा खएलाक बाद हुनक हृदयमे जीवाक उत्साह बहुत कम भऽ गेल छल । तखने ओ बहुत बेसी सोचविचार नहि कऽ नवीनसँ विवाह करबाक लेल 'हँ' कऽ देने रहथि ।

आब लड़काबलाक पक्का 'हँ' आबि चूकल छल, एहि सम्बन्धक लेल मुदा केदार दोबारा हुनक प्रेमी बनि कऽ जीवनमे आबए चाहैत छलाह । ई नव घटना मनमस्तिष्कमे अत्याधिक हलचल मचा कऽ हुनका तनावक शिकार बना देलक अछि ।

केदार बन्दनाक संगी चम्पाक बड़का काकाक बेटा रहथि । चम्पाक माध्यमसँ दुनूक परिचय भेल छल । हुनक बीच प्रेमक जऽग मजगुत

करएमे चम्पाक महत्वपूर्ण योगदान रहैन्हि । चम्पाक माता-पिता दुनू नोकरी करैत छलथि । चम्पा अपन घरक एक मात्र सन्तान छलीह तएँ क्याम्पससँ घुरलाक बाद साँझधरि घरमे असगरे रहैत छलीह ।

केदारकेँ बेसी समय बन्दनासँ भेटबाक स्थान चम्पेके घर होइत छल । दुनू प्रेमीकेँ एकान्तमे भेटबाक लेल चम्पा हुनका एकटा रुममे असगरे छोड़ि कऽ दोसर रुममे चलि जाइत छलीह ।

लम्बा शरीरबला केदार देखएमे कामदेवसन सुन्दर रहथि । हुनक आकर्षक व्यक्तित्वसँ प्रभावित भऽ कऽ बन्दना हुनकासँ प्रेम करए लागल छलीह । दुनूक जोड़ी एतेक जमैत छल जे बन्दनाक कतेको संगी हुनकासँ ईर्ष्या करैत छलीह ।

एकदिन केदारक बाहिँमे बन्दना मदहोश होइत चलि गेलीह, अपन प्रेमीक शरीरक स्पर्श हुनका उत्तेजनाक अग्नीसँ भरि कऽ बताह बना देने रहैन्हि । सभ सीमाकेँ तोड़ि कऽ ओ एहि अग्नीकेँ शान्त करबाक लेल केदारक आगा पूर्ण समर्पित कऽ देलीह ।

केदार हुनकासँ अपन प्रेमके विश्वास दियाबैत घबराए वा चिन्तित नहि होएबाक विश्वास दियौलैन्हि । अपन सर्वस्व एकबेर सौँपलाक बाद, बन्दना हुनका अपन हृदयसँ पति मानए लगलथि । एकरबाद कहिओ केदारक ईच्छाक विरोध नहि कएलैन्हि । सत्य तऽ ई छल, केदारसँ भेटएबला आनन्दक लेल ओ अपने व्याकुल रहैत छलीह ।

केदारक पिताके ट्रान्सपोर्टक बिजनेश रहैन्हि, ओ नारायणघाटमे नव शाखा खोलबाक जिम्मेवारी केदारक कन्हापर देलैन्हि ।

'अहाँ हमरासँ बहुत दूर जा रहल छी आ हम अहाँसँ दूर रहए नहि चाहैत छी, जाएसँ पहिने अपन माता पितासँ हमर प्रेमक विषयमे जानकारी करा दिऔ । एहिसँ बहुत समस्या दूर हएत', बन्दना केदारकेँ अपन चिन्तासँ अवगत करोने छलीह ।

'हम बात करब अपन माय बाबूसँ । हम नारायणघाट जाएसँ पहिने

अहाँक हृदयकेँ शान्त आ प्रशन्न रखबाक प्रयास करब', केदारसँ एहन आश्वासन पाबि कऽ बन्दना बहुत राहत अनुभव कएने छलीह ।

मुदा केदार अपन वचनकेँ पूरा नहि कएलैन्हि, ओ ई अन्तिम भेटि कऽ एक हप्ताक बाद बीना हुनका जानकारी करओने नारायणघाट चलि गेलाह । बन्दना चम्पाक माध्यमसँ हुनकासँ भेटि करबाक लेल कतेको बेर खबरि पठौलैन्हि, मुदा केदार भेटए नहि एलाह ।

'ई अहाँ आ केदार बीचक बात अछि हम हुनकाधरि अहाँक सन्देश पठा देलहुँ, हुनका खीच कऽ अहाँधरि लाएब हमरा वशक बात नहि अछि', बहुत कड़ा स्वरमे चम्पा हुनकासँ कन्नी काटि लेलैन्हि ।

बन्दनाक घरक लोक केदारक प्रेम सम्बन्धसँ अनभिज्ञ रहथि । हुनकासभक आगा अपन दुःख दर्द नहि कहि सकैत छलीह, ओ अपन रुम बन्द कऽ कऽ कनैत रहैत छलीह । पहिल प्रेममे धोखा खएलाक असर हुनका हृदयपर बहुत कठोरताक सँग बैसि गेल छल ।

स्वयंकेँ सम्हारबाक बहुत प्रयास कएलाक बाद ओ सफल भेल छलथि । केदारक बीना जीवन जीबएके विचार स्वीकार करब हुनक हृदय आरम्भ कऽ देने रहैन्हि । घरमे हुनक विवाहक बात चलै तऽ हुनका जहर जकाँ प्रतीत होइत छल ।

आब एकदिश नवीनके घरक लोक हुनका अपन पुतहुँ बनएबाक लेल स्वीकारोक्ति पठा देने अछि तऽ दोसर दिस केदार हुनका जीवनमे प्रेमीक रुपमे घूरएके इच्छा फोनपर कएलैन्हि अछि । बन्दना अतीतमे केदारके ४ टा प्रेम-पत्र लिखने छलीह, ओ बन्दनाकेँ इएह कहथि जे पत्रकेँ पढ़ि कऽ नष्ट कऽ दैत छथि मुदा फोनपर ओ उएह पत्रसभकेँ लऽ कऽ धम्की देलैन्हि अछि । ओ पत्रकेँ लेबाक लेल सेहो केदारसँ भेटब बन्दनाक विवशता छल ।

आईधरि ओ केदारकेँ बिसरबाक कोशिशमे लागल रहैत छलीह । हुनक इएह प्रयास केदारक स्मृति हुनक हृदयमे बनौने रहैत छल । आब

ओ बन्दनाकेँ अपन जीवन संगिनी बनाबए चाहैत छथि। हुनक ई इच्छा सूनि कऽ बन्दनाक हृदयमे हलचल तऽ मचल मुदा अतीतक अनुभवक आधारपर हुनका कहलापर विश्वास करबाक बन्दनाक हृदय स्वीकार नहि कएलक।

ठीक ३ बजे बन्दना चम्पाकेँ घरक मुख्य द्वारपर लागल घन्टी दबौलैन्हि। द्वार स्वयं केदार खोललैन्हि, हुनकापर नजरि परिते बन्दनाक हृदयक गति बढ़ि गेल। हुनक आकर्षक व्यक्तित्वक बन्दनाक हृदयपर हरेक समय एहिना प्रभाव पड़ैत छल।

केदारक मुँह दिश बिनु तकने बन्दना हुनकासँ गम्भीर स्वरमे पुछलीह, 'चम्पा कतए छथि ?'

'ओ घरमे नहि अछि। आउ भीतर आउ', केदार एक दिससँ हटि गेलाह।

बन्दना स्वयंकेँ संयमित रखबाक प्रयास करैत ड्राइंग रुममे बैसि रहलीह।

'एतेक दुबरा कोना गेल छी बन्दना ?' हुनक आगामे ठाढ़ भऽ कऽ केदार बहुत अपनत्वसँ पुछलैन्हि।

'हमर पत्र कतए अछि ?' बन्दना हुनकासँग अनावश्यक बातमे नहि ओझरएबाक निर्णय कऽ कऽ घरसँ निकलल छलीह।

'अहाँक घूरएसँ पहिने हम ओ दऽ देब', केदार कहलैन्हि।

'नहि, हमरा अहाँक सँग कोनो बात करएसँ पहिने अपन पत्र चाही', बन्दना कहलीह।

'हमरापर विश्वास नहि अछि अहाँकेँ ?' केदार पुछलैन्हि।

'एकर उत्तर अहाँ स्वयंसँ पूछि सकैत छी। हम ओहि पत्रक कारण दबाबमे आबि कऽ अहाँसँ कहासुनी नहि चाहैत छी, अहाँ हमर पत्र दिअ, नहि तऽ हम जा रहल छी', तामसमे नजरि आबि रहल बन्दना उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलीह।

'हम पत्र दऽ देब, आब तऽ रुकब ने ?' केदारक आत्मविश्वास बन्दनाक एहन आक्रामक रुप देख कऽ गड़बड़ा गेल रहैन्हि।

'अहाँक बात सुनबाक लेल हम नहि आएल छी। मुदा पहिने हमरा हमर पत्र दऽ दिअ', हुनका ओझराहटिमे देखि कऽ बन्दनाक मनोवल बढ़ि गेलैन्हि।

किछु क्षण सोचविचार कएलाक बाद केदार अपन पेन्टक जेबसँ पत्र निकालि कऽ बन्दनाक हाथमे दैति कहलैन्हि, 'ई पत्रकेँ नहि, अहाँकेँ आजीवन अपना सँग राखए चाहैत छी हम... बन्दना आब अहाँ शान्त मोनसँ हमर बात सुनू।'

बन्दनाकेँ अपन लिखल चारु पत्र केदार घूरा देने रहथि, ओ बीना समय वितौने ओ पत्रसभकेँ छोट-छोट टुकड़ी बना फाड़ि देलैन्हि आ ओ टुकड़ीसभकेँ अपन पर्समे रखलाक बाद ओ केदारसँ अपेक्षाकृत शान्त स्वरमे पुछलैन्हि, 'की बात अछि ? अहाँ कहए की चाहैत छी ?'

'अहाँसँ किछु कहने बीना नारायणघाट जाएके कारण बुझाबए चाहैत छी', केदार हुनक बगलमे बैसि रहलाह।

'अहाँ बताबए चाहैत छी तऽ हम सूनि लेब मुदा आब ओकर कोनो फाइदा नहि। हम अहाँ लग नहि घूरि सकैत छी' , बन्दना कहलीह।

'एना किए कहि रहल छी बन्दना ? आइ पूरे बात अहाँसँ कहबाक पाछू हमर उद्देश्य इएह अछि जे अहाँसँग पूरे जीवन बितएबाक इच्छा रखैत छी', केदार कहलैन्हि।

'आई भोरमे अहाँक फोन एलाक बाद हमरा खबरि भेटल, हमरा जाहि लड़कासँ बात चलि रहल छल ओ तय भऽ गेल, आब ओहि सम्बन्धकेँ तोड़ब सम्भव नहि अछि आ ने तऽ उचिते', बन्दना केदारकेँ सम्झौलैन्हि।

'बन्दना अहाँ हमरासँ दूर हएबाक बातके कल्पना नहि करु', केदार हुनक हाथ अपना हाथमे रखैत परेशान मुद्रामे कहलैन्हि, 'हम अहाँसँ

अपन हृदयक बात सत्य-सत्य कहैत छी । ई सत्य अछि जखन हम अहाँसँ किछु कहने बिना नारायणघाट चलि गेलहुँ तखन हम अहाँसँ दूर रहबाक निर्णय कएने छलहुँ मुदा अहाँसँ दूर रहि कऽ हम सुखी आ शान्त नहि रहि सकैत छी ....चम्पासँ टेलिफोनपर जखन पता लागल जे अहाँक सम्बन्धक बात कतहुँ चलि रहल अछि तऽ हमर हृदय छटपटाए लागल ।'

'केदार, प्रेमक धागा एक बेर टूटि गेलाक बाद फेरसँ ओकरा खोजि कऽ जोड़ब सम्भव नहि होइत अछि । हमर घरक लोक नव सम्बन्धसँ बहुत प्रशन्न अछि, ओहि सम्बन्धके तोड़बाक बात उठा कऽ हुनक सभक मोन नहि दुखाबए चाहैत छी', बन्दना हुनका सम्झएबाक प्रयास कएलीह ।

'अपन घरक लोककेँ बात नहि कहि अहाँ अपन हृदयक बात कहू, की हमरासँ बेसी दोसरके सँग सुखी रहि सकब ? की हमरासँग भेटएबला आनन्दकेँ अहाँ बिसरि सकब ? की ग्यारेन्टी अछि, जेकरासँग अहाँक विवाह भऽ रहल अछि ओ लड़का अहाँकेँ सन्तुष्ट कऽ पएताह', केदार बन्दनाक शरीरपर हाथ रखैत कहलैन्हि ।

'आब जे हएत हमर भाग्यसँ, हमरा बिसरि जाउ आ...'

बन्दना अपन बात पूरा कएनहो नहि रहथि कि केदार हुनका पकड़ि कऽ अपना बाँहिमे उठा लेलैन्हि, ओ हुनकर पकड़सँ छुटबाक लेल प्रयत्न करए लगलीह, मुदा केदार हुनकासँ बहुत बेसी शक्तिशाली रहथि ।

केदार हुनकर कानलग मुँह लऽ जा भावुक स्वरमे कहलैन्हि, 'बन्दना हमरा आ अहाँक जोड़ी अनुपम अछि । अपनासभ बनले छी एक दोसरके लेल, हम जतेक आनन्द अहाँकेँ दऽ सकैत छी दोसर पुरुष कहिओ नहि दऽ सकत । आई फेर अपन दाबीकेँ साबित कऽ देखबैत छी.....हमर विरोध नहि करु आई फेरसँ मदहोश भऽ जाउ हमर प्रेममे ।'

बन्दना आरम्भमे जोड़सँ प्रयास कएने रहथि केदारक नियन्त्रणसँ

बाहर हएबाक लेल, फेर हुनक गरम श्वास आ शरीरक गन्ध हुनका ठीके होश उड़ा देलक आ हुनका सोचविचार करबाक शक्तिकेँ क्षिण कऽ देलक ।

अतीतमे केदारक बाँहिमे रहि बन्दना बहुतरास शरीरसुख पौने छलीह, हुनक शरीरमे ओ सुखद अनुभव एखनो छल । प्रेमरस पीब कऽ अपन प्यास मेटएबाक लेल हुनक शरीर स्वयं सक्रिय भऽ गेल ।

हुनक नग्न भऽ गेल शरीरकेँ तारके झनझना कऽ मधुर संगीत जन्म देबाक कलामे केदार पहिनेसँ निपुण छलथि, उत्तेजनाक लहरि हुनक रोम-रोमकेँ आन्दोलित करए लागल, श्वास अस्तव्यस्त भऽ गेल, हुनक अंग-अंग सुखद वेचयनीक लेल बढ़ैत चलि गेल ।

उत्तेजनाक बिहारि क्षण-क्षणमे गति पकड़ि रहल छल । चरम आनन्दक शिखरपर पहुँच कऽ फेर विस्फोट भेल । बन्दनाक कण्ठसँ आश्चर्यजनक स्वर आबए लागल, ओ सूधि-बूधि हेरा कऽ केदारक शरीरमे लेपटा गेलीह ।

बिहारिकेँ शान्त भेलाक बाद केदारक आवाजसँ हुनक सूधि घूरल, 'हम कहए चाहैत छलहुँ बन्दना हम दुनू एक दोसरेकेँ लेल बनल छी, एतेक प्रेम, एतेक आनन्द, एतेक मस्ती दोसर कोनो पुरुष अहाँकेँ दऽ सकताह ?'

हुनक प्रश्नक जबाब नहि दऽ बन्दना अपन नग्नताकेँ झँपबाक लेल जल्दी-जल्दी कपड़ा पहिरए लगलीह ।

केदार किछु चिन्तित स्वरमे कहलाह, 'हमरासँ अलग भऽ कऽ जीवन बितएबाक बिचार आब तऽ अहाँकेँ त्यागिए देबाक चाही । हम आई फेरसँ सिद्ध कऽ देलहुँ जे जते सुखी हम राखि सकैत छी, ओतेक किओ नहि ।'

बन्दना कपड़ा पहिरलाक बाद अपन केश ठीक कएलैन्हि आ फेर केदारसँ गम्भीर स्वरमे कहलीह, 'हमरा एतए रुकब बढ़ियाँ नहि लागि

रहल अछि। हमरा बाहरधरि छोड़ि आउ। हम अहाँक प्रश्नक जबाब बाहरे देब।'

केदार घरमे ताला लगोलैन्हि आ फेर ओ दुनू रिक्सा स्टेण्डधरि बढ़ि गेलाह।

'केदार, पहिने अहाँकें अपन प्रेमी आ भावी जीवन साथी मानैत छलहुँ तखन प्रशन्न भऽ अहाँक आगा समर्पण करैत छलहुँ...ई बात सत्य अछि तहियो हमरासभकें एना नहि करबाक चाही, मुदा आई हम अपन प्रेम फेरसँ स्वीकार नहि कएलहुँ तइयो अहाँ हमर शरीरकें भोगबाक लेल किए आगा अएलहुँ ? प्रश्न पुछलाक बाद बन्दना केदारक जबाब सुनबाक लेल ठाढ़ भऽ गेलीह।

'किए की हम अहाँकें देखए चाहैत छलहुँ, हमरासँ कतेक प्रशन्न रहैत छी, ओतेक दोसरकें सँग नहि', केदार उत्तेजित भऽ कऽ जबाब देलैन्हि।

'हमरा शारीरिक सुख पहुँचाबएमे अहाँ कुशल छी, मुदा हमर मोनक सुख-शान्तिक चिन्ता अहाँ किए नहि चाहैत छी। हमर हृदय जाहि प्रेमके चाहैत अछि, ओकरा अहाँ महत्वपूर्ण किए नहि बुझैत छी ?'

'एना नहि कहू बन्दना, हम अहाँसँ बहुत प्रेम करैत छी', केदार फेरसँ हुनका फुसलाबए शुरु कएलैन्हि।

'झूठ, एकदम झूठ। अहाँ हमर सुन्दरता, हमर सुन्दर शरीरक स्वार्थी दिवाना छी मात्र', बन्दनाक स्वर भावावेशक कारण काँपए लागल, 'मुदा केदार शरीरके प्रति आकर्षण बेसी दिन नहि चलैत अछि, हमर शरीरकें खूब भोगलाक बाद अहाँ नारायणघाट चलि गेलहुँ, फेर किछु महिनाक बाद आवश्यकता पड़ल आ फेरसँ सम्बन्ध जोड़बाक प्रयास आरम्भ कऽ देलहुँ....।'

'हमर दुर्भाग्य अछि, हम शारीरिक उत्तेजनाक शिकार भऽ कऽ अपन विवेक कायम नहि राखि पबैत छी। अहाँक इशारापर पहिनहुँ कठपुतली

जकाँ नचैत छलहुँ आ आइयो हमर शरीर अहाँक स्पर्शक सुख पाबि कऽ, हमर इच्छाक विरुद्ध अहाँक आगा समर्पण कऽ देलक.....।'

'मुदा हम अहाँक हाथक कठपुतली बनि कऽ पूरे जीवन जीबए नहि चाहैत छी। प्रेमके बीना शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करब हमरा जानवर साबित करैत अछि, विवेकशील मानव नहि। अपन वासनाकें प्रेम कहब हमरा दुनू गोटेक गल्ती अछि। हम फेरसँ पछतएबाक लेल अहाँक मीठ-मीठ बातमे नहि आएब। ई कठपुतली आब कखनो अहाँक निकट नहि आएत आ अपन डोरी अहाँक हाथमे पकड़ाबए नहि आएब। हमर अहाँक सम्बन्ध एतहि समाप्त भेल...।'

बन्दनाक घोषणामे एतेक बेसी शक्ति आ दृढता छल, केदार हुनका रोकबाक साहस नहि कऽ सकलाह।

बन्दनाक मनमस्तिष्क एकदम हल्लुक लागि रहल छलैन्हि, केदारसँ दूर जाइत। हुनका अपन निर्णय एकदम ठीक होबएपर लेस मात्रो सन्देह नहि भेल।

♦♦

संसार मुट्ठीमे

प्रत्येक दिन जकाँ बितल राति भोर ४ बजे सुतलहुँ आ करीब-करीब ११ बजे सुति कऽ उठल हएब। एखन जलपान कइए रहल छलहुँ की दिकपाल भाईकेँ टेलिफोन आएल, 'युगल, की कऽ रहल छी एखन ?'

'जी, भाईजी।'

'साँझमे खाली छी की ? इहे करीब ३ बजेसँ।'

'हँ, मुदा की बात छैक भाईजी', हम कहलहुँ।

'कोनो खास बात नहि, साँझमे मिर्चैया जा रहल छी। दोसर प्रदर्शनीक लेल किछु पेन्टिंग्स तैयार करबाक अछि...सोचलहुँ, अहुँकेँ सँग लऽ चली आ अहुँ तऽ कहने छलहुँ....।'

'हँ..हँ भाईजी, हम आबि रहल छी। कहल जाउ कतए एबाक छैक ?'

'ग्यालरी आबि जाउ, एतहिसँ चलब।'

'ठीक छैक, भाईजी।'

पेन्टिंग्समे हमर रुचि एखन नव-नव जन्म लेलक अछि आ दिकपाल भाई एकटा चित्रकार छथि। अपन पेन्टिंग्सक लेल दृश्य कोना चुनैत छथि आ ओकर पेन्टिंग्सधरि पहुँचैत-पहुँचैत ओ दृश्य कोन तरहेँ सार्वभौमिक दृश्यमे रुपान्तरित भऽ जाति अछि। ई सभ जानए बुझबकेँ लेल हमरा लग

दिकपाल भाईसँ बढ़ियाँ कोनो दोसर नाम नहि अछि। दिकपाल भाई अपन पेन्टिंग्समे अपन परस्पर बिरोधी रंगसँ मूर्त आ अमूर्तक एहन द्वन्द कोरैत छथि, हुनक ब्रसकेँ चुमएकेँ मन करए लगैत अछि। किछु एहितरहेँ रंगक, किछु छिटका चेहरापर सेहो परि जाए।

अपने सोचि रहल हएब, हम केँ छी ? आ रंगमे अचानक एतेक उत्सुक किए भऽ रहल अछि...। तऽ श्रीमान अपनेक सेवक रंगकर्मी अछि आ रंगसँ खेलब हमर पेशाक एकटा आवश्यक भाग अछि। जी हँ, पेशासँ रंगकर्मी छी। हम देखए चाहैत छी, मञ्चपर किछु गतिशील रंगारंगक पेन्टिंग्स तैयार भऽ सकैत अछि कि नहि ?

मानि लिअ, मञ्च एकटा फ्रेम अछि तऽ एहि फ्रेमक भीतर लगातार बदलैत जादुबला दृश्यक एक श्रृंखला... मुदा एखन तऽ हम अपनेसभसँ कोनो दोसर बात करए जा रहल छी। हमरासँग समस्या अछि, हम बराबर बहकि जाइत छी। हमर कहब अछि, सोचबाक लेल तऽ कोनो ट्याक्स नहि लगैत अछि तऽ सोचएमे की जाइत अछि ? हम अपन कल्पनाकेँ अन्तिमधरि फैलए दैत छी। ओना एकरे कारण कतेकोबेर कोनो चीजकेँ समेटएमे दिक्कत भऽ जाइत अछि आ दृश्य बिखरि कऽ रहि जाइत अछि। मुदा एखन तऽ अपनेसँ दिकपाल भाईकेँ बात करए जा रहल छी।

केँ छथि दिकपाल भाई ? अपने सभ हुनका नहि जनैत छियैन्हि ? पत्रिका नहि देखैत छी अपने ? एक्के हप्ता पहिने संचारमन्त्रीसँ पुरस्कार लैत हुनक फोटो पत्रिकासभमे छपल छल। आ हमर दाबी अछि, अपने हुनका एकबेर देखि ली फेर कहिओ नहि बिसरब। लम्बा चौड़ा शरीर, आकर्षक गोर रंग, उन्नत ललाट , बड़का-बड़का केश आ खीचड़ी दाढ़ी। जीन्स आ कुर्ता हुनक बारहो मासक पहिरन अछि। कहिओकाल हुनका धोती कुर्तामे सेहो देखि सकैत छी, कन्हापर एकटा गम्छा सदिखन रहैत अछि, आ आबाज...आबाजकेँ तऽ की कहीँ गहीँर इनारसँ छानि कऽ धीर गम्भिर मुदा टनकदार आबाज। एहि टनकदार आबाजमे हुनका बहुतरास

सामाजिक सांस्कृतिक मुद्दा पर बजैत बतियाइत एकबेर सुनि ली, एकहिबेरमे अपने हुनक फ्यान भऽ जाएब।

दिकपाल भाईकें पसिन करएबला संसारभरि पसरल अछि, नहि जानि कतए-कतएसँ चिट्ठीसभ अबैत रहैत अछि। एहि चिट्ठीसभकें ओ अपन आर्ट ग्यालरीक एकटा कलात्मक स्थान बना कऽ रखने छथि। नहि जानि कतेक पुरस्कार, तगमा, स्मृति चिन्ह, सरकारी कमिटीक सदस्य, कतेको संस्थाक अध्यक्ष आ कतेकोकें संरक्षक। आई काल्हि हम दिकपाल भाईकें जमि कऽ मखखन लगबैत रहैत छी आ शीघ्रे एकर पुरस्कार सेहो भेटल अछि। हमरा जेहन जुम्मा-जुम्मा आठ दिनक निर्देशककें ओ अपनासँगे घुमाबएकें लेल अवसर देलन्हि अछि।

तऽ हम ३ बजे दिकपाल भाईकें आर्ट ग्यालरीमे पहुँच गेलहुं। दिकपाल भाई हमर प्रतीक्षा कऽ रहल रहथि आ बैसल-बैसल प्रतीक्षाक स्केचेज बना रहल छलथि।

'एखने चलैत छी', दिकपाल भाई कहलन्हि, 'तखनिधरि अहाँ चाही तऽ सिगरेट पी सकैत छी।'

'हँ, हँ किए नहि', सिगरेट पिबैत रहलहुं आ दिकपाल भाई अपन काजमे लागल रहलथि। सिगरेट एखन समाप्तो नहि भेल छल, दिकपाल भाई अचानक उठलाह आ बजलाह, 'चलु चलैत छी... ।'

हम चौंक गेलहुं। दिकपाल भाईकें टेबुलपर सभ किछु ओहिना पसरल छल। रंग पेन्सिल, कागत, रब्बर, स्केचेज, आदि-आदि।

दिकपाल भाई बिहुँसलाह, 'तऽ की भेलैक ? हमर अनुपस्थितिमे हमर कोनो चीजकें छुबएकें कें हिम्मत कऽ सकैत अछि।'

तए भेल, हम एक्केटा मोटरसाइकिलपर चलब। हम अपन मोटरसाइकिल ओतहि लगा लेलहुं आ मिर्चैयाक लेल निकलि पड़लहुं। बाटमे दिकपाल भाई कहलन्हि, 'युगल पहिने नवरंग होटलमे बगेरी चुरा खा लैत छी, फेर चलैत छी। हमसभ बगेरी चुरा खा कऽ निकलले छलहुं

की हम पेलहुं, दिकपाल भाई अस्त व्यस्तसँ किछु खोजि रहल छथि कखनो एहि जेबमे, कखनो ओहि जेबमे।

'की भेल भाईजी', हम पुछलहुं।

'हमर मोबाइल नहि भेटि रहल अछि', कहैत दिकपाल भाई फेरसँ नवरंग होटलमे पसि गेलथि। बाहर निकललाह तऽ हम देखलहुं, हुनक माथपर पसिनाक बुन्द सभ चलि आएल छल आ हुनक आबाज काँपि रहल छल।

'भाईजी कनीक ध्यानसँ देखिऔ ने', कहबाक लेल हम कहिदेलहुं मुदा एखनधरि दिकपाल भाईकें कोनो जेब नहि छल, ओहो जगहकें कतेकोबेर ताकि चुकल छलाह।

'की पत्ता आर्ट ग्यालरीमे छुटि गेल हएत', हम कहलहुं आ अपन मोबाइल निकालि लेलहुं, 'हम रिंग कऽ कऽ देखैत छी...', कल लागएसँ पहिने समाप्त भऽ जाइत छल। अर्थात मोबाइलक सुईच अफ छल वा मोबाइल नेटवर्कमे नहि छल।

'आब की हएत...', दिकपाल भाई निराश भऽ कँपैत आबाजमे कहलाह, '३० हजारक सेट एकहुं महिना नहि भेल छल।'

'भऽ सकैत अछि स्वयं अपने मोबाइल अफ कऽ कऽ रखने हएब', हम उम्मिदक एकटा किरण फेकलहुं आ दिकपाल भाई लपकि लेलन्हि।

'हँ स्केचेज बना रहल छलहुं, भऽ सकैत अछि हम एकरे कारणसँ अफ कऽ कऽ रखने होइ, अवश्य हम एना कएने हएब।'

हम किछु देरमे फेरसँ दिकपाल भाईकें आर्ट ग्यालरीमे छलहुं। क्षणभरिमे दिकपाल भाईकें टेबुलपर पसरल सामान आओर पसरि गेल छल आ दिकपाल भाई एतए ओतए आ उपर निचा ताकि रहल छलथि, हमहुं एना किछु करैतसँग दऽ रहल छलहुं मुदा किछुए देरमे हम बुझि गेल छलहुं, हमर सभक प्रयासक कोनो अर्थ नहि अछि। मोबाइल सहीमे कतहुं खसि चुकल अछि।

'चलु प्रहरी चौकी चलैत छी', दिकपाल भाई कहलन्हि । एहिबीच हम बराबर दिकपाल भाईकेँ हेराएल मोबाइलपर रिंग कऽ रहल छलहुँ । ओना त ई बात तए छल, ओ मोबाइल अफे रहएबला छल । मुदा उम्मिदक किरण एतेक जल्दी थोरे छोड़ल जाइत अछि । हमसभ प्रहरी चौकी पहुँचलहुँ ।

'हँ कहुँ भाई', चौकीक थानेदार कानपर चढ़ल जनउ उतारैत पुछलाह ।

'सई साहब, हमर मोबाइल चोरी भऽ गेल अछि', दिकपाल भाई कहलन्हि ।

'तऽ हम की करु ?'

'हम सभ जाहेरी देबए आएल छी ।'

'एहिसँ कि हएत.....एँ.....अपने, अपन समान सम्हारि कऽ नहि राखि सकैत छी, एम्हर ओम्हर भऽ गेल, आबि गेलहुँ डण्डा करए । कोनो जादुक छड़ी छैक पुलिस लग, अपराधीकेँ पाछुमे जा कऽ रुकि जाएत ।'

'सर, अपने हमर बात सुनब', दिकपाल भाई आबाजपर जोड़ दैत बजलाह ।

'हँ भाईजी, किए नहि ? अपनेक बात सुनबाक अतिरिक्त हमरालग काजे की अछि ? एँ ?....चलि अबैत छी नहि लेबएकेँ अछि नहि देबएकेँ.... हबल्दार साहब देखू भाईजी की कहैत छथि ? बुद्धिजीवी लगैत छथि कनी बढ़िया जकाँ देखबन्हि', बगलबला रुमदिस इशारा कएलन्हि ।

हम सभ हबल्दार साहबकेँ रुममे पहुँचलहुँ । हबल्दार साहब हमरा सभकेँ बैसबाक लेल सेहो नहि कहलन्हि । ओ निचा देखैत किछु लिखैत रहलाह आ लिखएकेँ अभिनय करैत रहलाह । हबल्दार साहबक पाछु लक्ष्मी, गणेश आ सरस्वतीक मूर्ति टांगल छल । गेटे लग एकटा २५-२६ बर्षक लड़का ठाढ़ छल । ओ डेराएल छल आ ओकर आँखि फाटि कऽ बाहर निकलएपर छल । ओ ओहेँ फाटल-फाटल आँखिसँ एम्हर ओम्हर देखि रहल छल । हमसभ किछु कहितहुँ, ओहिसँ पहिने ओ लड़काकेँ घेघियाइत

आबाज आएल, 'साहब आब तऽ छोड़ि दिअ, आब तऽ उतरिओ गेल अछि ।'

'चुप्प हरामजादा, भेजा चाटि कऽ राखि देलक । उम्हर दूर बैसि ।...हँ अपनेसभ कोना ?' पुछैत हुनक आँखिमे एकटा चमक आएल आ तुरन्ते समाप्त भऽ गेल ।

'हँ कहुँ ?'

'सर, हमर ३० हजारक मोबाइल चोरी भऽ गेल अछि', दिकपाल भाई विनम्र स्वरमे कहलाह ।

'एतेक महँग सेट अपनेसभ रखबे किए करैत छी ... बाइ द वे कतए खसि पड़ल मोबाइल ?'

'हम शिवचौक भऽ कऽ मिर्चैया जा रहल छलहुँ बाटमे दोकानपर रुकि कऽ पान खेलहुँ अवश्य किओ...।'

'अपने दुनू गोटे सँगे छलीयै ?'

'हँ ।'

'मोबाइल कतए रखने छलहुँ ?'

'कुर्ताक जेबमे ।'

'जेब देखाउ ।'

दिकपाल भाई तिर्छा भऽ कऽ जेब हबल्दार साहबकेँ आगा कएलन्हि ।

'कटल तऽ नहि अछि, आब हम एकरा बारेमे की कहुँ ।'

'तऽ केँ कहत ?'

'कतहुँ खसि पड़ल हएत । हेराएल चीजकेँ चोरी भेल किए कहि रहल छी ? मोबाइलोकेँ बीमा तीमा होबए लागल अछि की ?'

'हम हरेक समय मोबाइल अपना कुर्ताक जेबमे रखैत आएल छी, आईधरि तऽ नहि खसल अछि, हात लगा कऽ किओ निकालि लेने हएत ।'

'आ... अहाँकेँ पत्तो नहि चलल ?

'नहि । पत्ता चलल रहैत तऽ....'

एहिबीचमे हम दिकपाल भाईकेँ एकटक देखि रहल छलहुँ । दिकपाल

भाई पूरापुर झूट बाजि रहल छलथि, हमसभ बाटमे पान खएबाक लेल कतहुँ नहि रुकल छलहुँ। दिकपाल भाई निचाक जेबमे मोबाइल कहिओ नहि रखैत छलथि। दिकपाल भाई मोबाइल जनउ जकाँ पहिर कऽ रखैत छलाह। हँ, कहिओकाल मोन भेल तऽ उपरका जेबमे राखि लैत छलथि। एकदम हृदयक नजदिक। हम तऽ हुनकासँ कतेकोबेर कहने छलहुँ, 'भाईजी एतए मोबाइल राखब हृदयक लेल खतरनाक होइत अछि ?'

दिकपाल भाई हरेकबेर बिहुँसि कऽ एकहिटा उत्तर दैत छलाह, 'हृदय कोन बेवकुफ लग अछि।'

एतएसँ निकलि कऽ दिकपाल भाईसँ झूटक विषयमे पुछब, हम सोचलहुँ।

'ओहि सड़कपर की करए गेल छलहुँ ?' हबल्दार साहब पुछलन्हि।

'ओतए हमर आर्ट ग्यालरी अछि।'

'आर्ट ग्यालरी ? ई कि होइत अछि ?'

दिकपाल भाई असहजतासँ हमरा दिस देखलाह। हमरा स्वयं एहन प्रश्नकेँ अपेक्षा नहि छल।

'हमर पेन्टिंग्स आ मूर्ति, हमर मतलब लकड़ीक मूर्तिक दोकान अछि', दिकपाल भाई रुकि-रुकि कऽ सम्झौलन्हि।

'लकडीओकेँ मूर्ति होइत अछि ? केँ किनत ओकरा, जल चढ़बैत-चढ़बैत तऽ सड़ि जाइत हएत ?' ई हबल्दार साहब छलाह।

हमरा हँस्सी आबि गेल मुदा कोनो तरहेँ हम अपन हँस्सी रोकलहुँ। दिकपाल भाईकेँ चेहरापर तनाव देखा रहल छल। मुदा ओ नम्र भावमे चलि आएल छलाह।

'भाईजी लकड़ीकेँ शिल्प आ मूर्ति लोक अपन कलात्मक अभिरुची आ घर सजाबएकेँ लेल किनैत अछि, ओहिपर जल नहि चढ़ाएल जाइत अछि।'

'भगवानक मूर्ति सजाबएकेँ लेल ? भाई वाह-वाह, आब आएल असली

कलयुग', हबल्दार साहब अजिबसन मुँह बना कऽ हँसलाह।

'भाईजी ओ भगवान तगवानक मूर्ति नहि होइत अछि, ओ तऽ कलाकृति...',फेर दिकपाल भाई शायद ई सोचि कऽ चुप भऽ गेलाह, हबल्दार साहबकेँ सम्झाएब अपना बुताक बात नहि अछि।

'देखू अहाँसभ पढ़ल लिखल लोक बुझाइत छी, बुद्धिजीवी होबएकेँ मतलब ई नहि अछि लोक भगवानकेँ सम्माने करब बिसरि जाए।'

'जी ऽऽ', दिकपाल भाई आबाजपर जोड़ दैति कहलन्हि।

'ठीक छैक', हबल्दार साहब कहलन्हि, 'लोकेन्द्रकेँ जनैत छीयैक ?'

'कोन लोकेन्द्र ?'

आब ई लोकेन्द्र कतएसँ चलि आएल ? दिकपाल भाई किछु तनावपूर्ण अवस्थामे हमरादिस तकलाह, आब एहि प्रसंगमे हमरा मज्जा आबए लागल छल। जतेक हम दिकपाल भाईकेँ जनैत छी, हम चकित छी जे एखनिधरि ओ फाइट किए नहि रहल छथि ? हुनक सम्पर्क उपरधरि अछि। हबल्दार साहब चाहिओ कऽ हुनका किछु नहि बिगारि सकैत अछि। मुदा एतए तऽ बेसीसँ बेसी हुनक चेहरापर तनाव देखा रहल अछि, ओहो देखएसँ पहिने गाएब भऽ जाइत अछि आ शीघ्र हुनक चेहरापर नम्रता टप्कए लगैत अछि। तऽ सीन किछु एहितरहेँ बनैत अछि...दिकपालभाईकेँ चेहराक तनाव, हुनक दाढ़ीसँ टप्कैत नम्रता...बगलकेँ रुमक लड़का....आ ओकर फाटल आँखि....तिलक लगौने, पान चबौने, टांग फैलौने हबल्दार....हबल्दारक पाछु भगवानक मूर्ति....जल चढ़ाबएसँ सड़ैत अछि लकड़ीक मूर्ति आ आब लोकेन्द्र। वाह पूरापुर एकटा एब्सट्रेक्ट नाटक। तऽ चलु देखैत छी ई लोकेन्द्र छथि केँ ?

'लोकेन्द्रकेँ जनैत छीयैक', हबल्दार पुछलन्हि।

'केँ छथि लोकेन्द्र ? अपने कहीँ ओहि लोकेन्द्रकेँ बात तऽ नहि करैत छी, हमर आर्ट ग्यालरीमे काज करैत छल।'

'ओहेँ लोकेन्द्र हमरे गामक छल। हम ओकरासँ भेटए एक दूबेर

....अहाँक दोकान...।'

'ओ.....तऽ लोकेन्द्रक गामकेँ अपने छीयै ? बहुत ईमान्दार आ सज्जन लोक छल, लोकेन्द्र । कतए अछि आई काल्हि ?'

'हँ, हँ हम चिन्हैत छी', हबल्दार साहब कहलन्हि, 'अहाँ एना करु एकटा कागत पर पूरे घटनाक विवरण लिख कऽ दिअ ।'

दिकपाल भाई अपना झोरासँ कागत निकाललाह आ ओहिपर लिखए लगलाह । हबल्दार साहब अप्रिय नजरिसँ हमरा देखए लगलाह । दिकपाल भाई झूट पर झूट बाजि रहल छलाह । हुनक ई रुप हमरा लेल अप्रत्याशित रुपसँ चौंकाबएबला छल । आब स्मरण अबैत अछि, दिकपाल भाई एकबेर स्वयं कहने रहथि, सज्जन आ ईमान्दार लोकेन्द्रकेँ ओ चोरीक आरोपमे निकालि देने छलथि । शायद हबल्दार साहब सेहो ई बातकेँ जनैत होइथ । शायद की पक्का ओ जनैत हेताह । तखन ने ओ हमरासभसँ एहि तरहेँ प्रस्तुत भऽ रहल छथि ।

दिकपाल भाई पूरा विवरण लिख पबितथि एहिसँ पहिने एकटा अदृश्य गन्ध पूरे वातावरणमे पसरि गेल । केँ कएने हएत ई, हम सोचलहुँ फेर ई सोचलहुँ, नाक दबा ली मुदा शीघ्र ध्यान आएल, कतहुँ हबल्दारे साहब एना कएने हएताह आ हम नाक दबाबी आ एकरा ओ अपमान बुझि लैथि । हम देखलहुँ, दिकपाल भाई पर कोनो चीजकेँ कोनो असर नहि पड़ल । ओ लिखएमे डुबल छलाह । रहल हबल्दार साहबकेँ तऽ कखनो दिकपाल भाई दिस देखि रहल छलथि तऽ कखनो लड़का दिस । अन्तमे हबल्दार साहबकेँ नजरि लड़का दिस जा कऽ टिक गेल ।

'हम नहि पदलहुँ साहब', लड़का कनैत आबाजमे बाजल ।

'उम्हर जो साला, पूरे चौकी गन्हा देलक ।'

'हम किछु नहि कएलहुँ ।'

'...साहब', लड़का फेर नेहोरा कएलक, 'आब तऽ उतरिओ गेल अछि, अपनेसभ हमरा छोड़ि किए नहि दैत छी ?'

हबल्दार साहब उठलाह आ ओ लड़काकेँ कसि कऽ एक लात मारलन्हि । लड़का पीड़ासँ कुहरि रहल छल ।

'चुप्प बैसि, माधर....। साला तोहर बापकेँ घर छौक की ? जखन मोन भेल चलि एलहुँ, जखन मोन भेल चलि गेलहुँ ।'

लड़का आओर सिकुड़ि कऽ बैसि गेल आ नहि सुनाई देबएबला आवाजमे कुहरए लागल । ओकर फटल आँखि कनीक आओर फाटि गेल छल ।

दिकपाल भाई पूरा विवरण लिखि कऽ हबल्दार साहबकेँ दऽ देलन्हि । हबल्दार साहब पढ़लन्हि आ हमरा दुनू गोटेकेँ एक-दू स्थानपर हस्ताक्षर करौलन्हि । एकरबाद हमसभ हबल्दार साहबसँ हात जोड़ैत, 'ठीक छैक सर...', कहलहुँ आ बाहर आबि गेलहुँ । हबल्दार साहबक नजरि एखनो हमरासभक पीठपर चुभि रहल छल । जरुर ओ हमरासभकेँ गाढ़ि पढ़ैत हएताह ।

'आब ?' दिकपाल भाई पुछलन्हि ।

आब ? हमहुँ प्रश्नक नजरिसँ तकलहुँ ।

'आब एक्सचेन्ज चलैत छी आ सीम ब्लक करबा दैत छी ।'

अचानक हमरा किछु स्मरण आएल । 'दिकपाल भाई एकटा बात पुछु ?'

'हँ ।'

'अपने एखनि झूटपर झूट बजैत जा रहल छलहुँ ?'

'हम झूट बाजि रहल छलहुँ ? हम की झूट बजलहुँ ?'

'ई की अपनेक मोबाइल पानक दोकानपर चोरी भेल ?'

'अहाँ तऽ भकोल छी ?' दिकपाल भाई भौं चढ़ौलन्हि, 'की बतबितहुँ, हम सभ बगेरी खाए गेल छलहुँ । ओ साला हबल्दारकेँ ठोप नहि देखने रहीयै ?'

'तऽ अपने ओकर ठोपसँ डेराए गेल छलियै ?' हम मजाकमे कहलहुँ ।

'सेट अप ।'

'भऽ जाएब सेट अप। मुदा एखनि हमर बात कहाँ भेलकि पूरा। अपने लोकेन्द्रक विषयमे सेहो झूट बाजल छी। स्वयं अपनही बतौने रही, ओ चोरी कएने छल। स्वयं अपने ओकर झोरासँ हनुमानक मूर्ति पकड़ने रही। एहिद्वारे अपने ओकरा निकालने छलहुँ।'

'तऽ ?'

'तऽ आई ओहेँ लोकेन्द्र ईमान्दार आ सज्जन लोक कोना भऽ गेल ?'

तऽ दिकपाल भाई आब निश्चित रुपसँ तमसारहल छलथि।

'तऽ कि अपने कहुँ ?'

'आब ईहो अहाँकेँ बताबए पड़त। देखलहुँ नहि, ओ साला कोना जिद्द कऽ रहल छल। उपरसँ ओ कमिना, लोकेन्द्रक सहोदर निकलल आओर हम कि करितहुँ ? हमरा तऽ लागि रहल छल ओ चोट्टा अहुँकेँ कोनो सम्बन्धिक हएत।'

दिकपाल भाई आब हमरोपर तमसा रहल छलथि। हम हुनक बातक जबाब दैतहुँ, मुदा देलहुँ नहि। ओहिना दिकपाल भाईकेँ नम्बर मिलाबए लगलहुँ।

अत्यधिक आश्चर्य। तुरन्त, सभसँ सुन्दर मिथिलाधाम... सुनाई पड़ल आ हम शीघ्र काटि देलहुँ फेर दिकपाल भाई दिस तकलहुँ।

'भाई जी घण्टी जा रहल अछि, हम कि करु ?'

'कि करु, गजबकेँ लोक छी अहाँ। ओकरा फेरसँ मिलाउ आ बात करु ओकरासँ।'

हम फेर मिलेलहुँ आ दोसर दिससँ मोबाइल उठल, जेना पहिनेसँ किओ तैयार बैसल हुए।

'हेल्लो', नसामे डुबल आवाज आएल।

'कृपा निधान अपने कतए छी ?' हम पुछलहुँ।

'हम कृपा निधान नहि छी', उम्हरसँ लड़खड़ाइत आवाज आएल।

'तऽ केँ छी अपने, इहे बता दीअ।'

'मोहम्मद नुरेन।'

'नुरेन भाई अपने कतए छी ?'

'एहि संसारमे छी भाईजी, अपने कहुँ।'

'स्थान तऽ बताउ, अपने कतए छी ?'

'स्थानकेँ की छैक...भट्ठीमे दारु पीब रहल छी।'

लागल जेना ओकरालग आओर बहुत लोक बैसल हुए आ ओकर बातपर आओरो व्यक्तिकेँ आवाज गुञ्जि रहल हुए। अर्थात ओ सहीमे भट्ठीमे बैसल हुए। साले पियक्कड़। हम मोनेमोन गाढ़ि पढ़लहुँ। दिकपाल भाई अपन कान मोबाइलसँ सटा कऽ रखने रहथि। तामस हुनक चेहरापर साफ देखा रहल छल। चौकीबला विनम्रता पत्ता नहि कतए गाएब भऽ गेल छल। हम किछु कहितहुँ एहिसँ पहिने दिकपाल भाई मोबाइल हमरा हातसँ छिन लेलन्हि आ मोलाएम स्वरमे कहलन्हि, 'भाईजी अपने जे किओ होइक मोबाइल हमरा फिर्ता दऽ दिअ। हम एतए परेशान भऽ रहल छी आ अपने बैसि कऽ दारु पीब रहल छी ?'

'मोबाइल ? केकर मोबाइल ?' लड़खड़ाइत आवाजसँ पुछलक।

'हमर मोबाइल, जाहिसँ तोँ बात कऽ रहल छैं।' दिकपाल भाई अपनेसँ तोँपर चलि आएल छलाह।

'कथिलाए मजाक कऽ रहल छी भाईजी ? अपनेक मोबाइल तऽ अपनेलग होएबाक चाही, ई तऽ हमर अछि।'

'ई तोहर कोना भऽ गेलहुँ ?' दिकपाल भाई आवाजपर जोड़ देलन्हि।

'हमरा सड़कपर भेटल तऽ हमरे भेल ने ?'

'सड़कपर भेटल कोनो चीज तोहर कोना भऽ गेलहुँ ?' दिकपाल भाई आब पटरीपरसँ पूरे उतरि चुकल छलथि।

'एना भऽ गेल भाईजी, ओ दोसरकेँ नहि भेटल। अल्लाह हमरा झोरीमे खसा देलन्हि।'

आब दिकपाल भाई दाँत पिस रहल छलथि, 'किए परेशान कऽ रहल

छअ तोँ हमरा ? तोँ काज की करैत छअ ?'

'हड्डी गलबैत छी अर्थात रिक्सा चलबैत छी। अपने कमाइत छी, खाइत छी ....पिबैत छी।'

'मेहनतकेँ कमाइ खाई छअ तऽ हमर मोबाइल फिर्ता कऽ दऽ। तोरालग एकर बील भरएकेँ पैसा कतएसँ एतह ?'

'नहि देबै बील-तील।'

'तऽ फेर तोहर ई कोन काजक ?'

'काजकेँ कोना नहि ? हमर सुल्तान खेलत एहिसँ।'

'देखबैं , सही ढंगसँ मोबाइल फिर्ता दे नहि तऽ पुलिसमे सिकाएत कऽ देबहुँ।'

'कऽ दीऔ, जाहेरी-ताहेरी , आब थानेदार बाबू एताह तखने मोबाइल भेटत।'

एहिसँ पहिने दिकपाल भाई गाढ़ि पढ़ए लगताह हम हुनकासँ मोबाइल हातमे लेलहुँ आ काटि देलहुँ। दिकपाल भाई उत्तेजनाक कारण काँपि रहल छलथि। हुनक मुँहसँ फेन आबि रहल छल। ओ विभत्स भावसँ थुकलन्हि, जेना केकरो उपर थुकि रहल होइथ। कनीक थुक हुनक कुर्तापर सेहो पड़ि गेल जेकरा ओ, अपन गमछासँ पोछि लेलन्हि। फेर अचानक गाढ़ि पढ़ए लगलाह, 'साला हरामी हमरासँ खेलि रहल अछि।'

फेर दिकपाल भाई जोरसँ चिचियाइत कहलन्हि, 'चलु चौकी।'

'चौकी चलि कऽ की करब ? जे बात ओ रिक्साबलाकेँ पत्ता अछि ओ अपनेकेँ नहि। पुलिस कोना बुझत, ओ कतए अछि आ जानहो किए चाहत ?'

'मोबाइल लाउ हम एखने एसपीकेँ फोन करैत छी, देखैत छी साला कतएसँ बचि कऽ निकलैत अछि।'

'आब सभकिछु छोड़ि दिअ, आब अन्दाज लगाउ, अपनेक मोबाइल कतए खसल अछि ?'

'खसल अछि ? अहाँकेँ एखनो लगैत अछि, खसल अछि ? ओ कमिना कतहुँ अवसर पाबि कऽ हात साफ कऽ देलक अछि।'

'इहे सही भाईजी तऽ अपनेकेँ मोबाइल कतए निकालने हएत ?'

दिकपाल भाईकेँ जे रुप हमरा आगा आबि रहल छल, हम हुनका विषयमे सोचए नहि चाहि रहल छलहुँ, मुदा हमरा भीतर ओहेँ टुटैत, दरकैत छबी उमड़ि-घुमड़ि रहल छल। इहे व्यक्तिकेँ हम एतेक इज्जत करैत छी ? हम तुरन्त हुनकसँग छोड़ि देबए चाहैत छलहुँ मुदा एना कऽ पबितहुँ एहिसँ पहिने हमर पेशेवर दिमाग हमरा धिक्कारए लगैत छल।

'केहन रंगकर्मी छी युगल ? तोरा एकटा चरित्रक विषयमे, ओकर तहक विषयमे एतेक किछु जानएकेँ अवसर भेटि रहल छौक आ एकटा तोँ छैं जे...आ एखनि तऽ तोरा मोहम्मद नुरेनसँ सेहो भेटबाक छौक.... तऽ....।'

'भाईजी अपनेकेँ मोबाइल कतए खसल हएत ?'

'शिवे चौककेँ आसपासमे कतहुँ एहिबीचमे कोनो भट्ठी छैक ? हमरा हिसाबसँ एक-दूटा माछ बजारलग आ एक दूटा कदम चौक लग सेहो छैक, कारण ओहिसभ बाटे शिवचौक गेल छलहुँ।'

'चलु भट्ठी चलैत छी', हम कहलहुँ।

'ओतए जा कऽ करब की ?'

'शायद ओ ओतहि हएत।'

किछुए देरमे हमसभ माछबजार लगक भट्ठीमे पहुँच गेलहुँ, बगलमे गन्हाइत नाली छल, ओतहि तरैत माछ आ भुज्जा भेटि रहल छल। जाहिपर गन्दाक एकटा परत जमल छल, माछी सेहो भिनभिना रहल छल, भीतर घुसिते कच्चा दारुक तिख्ख गन्ध हमरा नाकसँ टकराएल। भीतर बीमार पियर उज्जर आ धुँधला जेहन माहौल छल। देबालपर कैटरिना कैफसँ लऽ कऽ करिना कपुरक पोस्टर दारु पियबलासभकेँ नशाकेँ दूगुन्ना करएमे जुटल छल। तऽ एहन माहौल आ एहिमे हम दू गोटे सम्मानित बुद्धिजीवी। भीतर पहुँचिते भट्ठीकेँ पूरे माहौल एना अस्त-व्यस्त भऽ गेल

जेना मधमाछीक बीच भेम घुसि गेल हुए । भट्ठीबला कुदि कऽ हमरासभ दिस आएल ।

'कि चाही श्रीमान ?'

'किछु नहि, तों सभ अपने स्थानपर बैसऽ', दिकपालभाईकेँ आवाजमे किछु एहन छल, भट्ठीबला तुरन्त हटि गेल ।

हमसभ हरेक व्यक्तिकेँ संदिग्ध नजरिसँ देखि रहल छलहुँ । किछु बुझएमे नहि आएल तऽ हम मोबाइलपर फेर दिकपाल भाईकेँ नम्बर मिलेलहुँ । तुरन्त एहन सुन्दर मिथिलाधाम... सुनाई देबए लागल । मुदा भट्ठीमे ककरो घण्टी नहि बाजल । सत्य छल, मोबाइल एतए नहि छल । हमसभ पुछताछ कएने बीना फिर्ता भऽ गेलहुँ । आब हमरा हमरसभक बेवकुफी बुझएमे चलि आएल । हमसभ बीना एहि बातपर बिचार कएने ओ कोन भट्ठीमे भऽ सकैत अछि आ ओहिना भट्ठीमे घुसि गेलहुँ ।

हमरासभकेँ मोबाइल हेराएकेँ पत्ता शिवचौकलग चलल छल, एहि हिसाबसँ मोहम्मद नुरेनकेँ कदम चौक लग होबएकेँ सम्भावना अछि ।

हम सभ कदम चौकबला भट्ठीमे पहुँचलहुँ दुःखक बात, ओ किछुए देर पहिने ओतएसँ निकलल छल । एतबे नहि एतए मोबाइलकेँ लऽ कऽ हल्ला सेहो भेल छल कारण दारु पिबएबलामेसँ एक-दूगोटे एहन छल, मोबाइल हड़पए चाहैत छल मुदा अन्ततः नुरेन रिक्साबला अपन मोबाइल बचाबएमे सफल भऽ गेल । नुरेनक पत्ता, नहि भट्ठीबलाकेँ छल आ नहि दोसर दारु पिबए बलाकेँ । हमसभ चुकि गेलहुँ ।

'यदि अहाँ ओहि भट्ठीमे नहि रुकल रहितहुँ तऽ हमसभ एकरा पकड़ि सकैत छलहुँ', दिकपाल भाई तमसाइत बजलाह ।

'हमरा उपर नहि तमसाउ । अपनहुँ तऽ ओहिसमय किछु नहि कहलहुँ । आब अपनहिँ बताउ हम की करु ?'

'ओकरासँ बात करु, सही ढंगसँ दऽ दैत अछि तऽ ठीक नहि तऽ हम एसपीसँ बात करैत छी ।'

हम नम्बर मिलेलहुँ ।

'हेल्लो...कँ...? उम्हरसँ आवाज आएल ।

'हम छी नुरेन जेकर मोबाइल अहाँक हातमे अछि', हम व्यंग्यमे कहलहुँ ।

'अहाँसभ तऽ पुलिसमे जाएबला छलियै ?'

ओहीठाम छलहुँ । मुदा हम अनुभव कएलहुँ एहिबीच ओकर आवाजमे थरथराहट किछु कम भेल आ ओकर स्थानपर मस्ती लऽ लेने छल ।

'गल्ती भऽ गेल नुरेन भाई हमरा अहाँक बीचमे पुलिस कतएसँ आएत ? अपने हमर मोबाइल फिर्ता कऽ दिअ ।'

'किए मालिक ? हमरा तऽ बाटमे भेटल अल्लाहकेँ कृपासँ ।'

'चाटि किए रहल छी भाई ? अपने कतए रहैत छी बता दिअ ?'

'किए बताउ ?'

'हम अपनेसँ भेटए अबैत छी, एहीद्वारे ।'

'तऽ बता दैत छी ?'

'कृपा करु भाई एहि बातकेँ बुझबाक लेल दू तीन घण्टासँ हमसभ कतेक परेशान छी ।'

'थानेदार साहबकेँ तऽ नहि लाएब ने ?'

'नहि नुरेन भाई, अपने बेकारमे शंका करैत छी । हमरा तऽ समान भेटि जाए मात्र हम पुलिसकेँ चक्करमे किए पड़ब ?'

'पुलचौक देखने छियैक ?'

'हँ ।'

'ओतएसँ कठपुल्ला जाएबला बाटमे एकटा बड़का गाछ छैक ओहिठामसँ दहिना मुड़ि जाएब आ ककरोसँ पुछि लेब नुरेन भाईकेँ घर ?'

'ठीक छै नुरेन भाई, हमसभ अबैत छी ।'

'एखन नहि, एक-दू घण्टाक बाद आउ, एखन तऽ हम सवारी लऽ कऽ जा रहल छी ।'

हम दिकपाल भाई दिस देखलहुँ। ओ एखन शान्त लागि रहल छलथि, मुदा हुनक आँखि लाल छल। यदि नुरेन अपन पत्ता सही बतौने अछि तऽ कथा समाप्त होबएमे आधासँ एक घण्टा लागि सकैत अछि। तखन कहाँ पत्ता छल, सही कथाक प्रारम्भ घण्टाक बाद होबएबला अछि।

हम नुरेन रिक्साबलाक विषयमे सोचलहुँ। केहन हएत ओ ? ओकर केस ओहिना उजरल हएत, शायद खिचड़ी, कनी कारी, कनी उज्जर। चेहरापर मंगोलीयन दाढ़ी हएत। आँखि छोट वा बड़का, आँखिमे थाल वा निचा कारी झुर्री। पूरा शरीरपर समयक अनगिन्ती निशान, शरीरपर कोनो मैल टि-सर्ट वा गन्जी, निचा लुंगी वा पइजामा। पयरमे पुरान हवाई वा टायरक चप्पल। तऽ शायद किछु एहने हएत हमर नुरेन भाईयक चेहरा।

मुदा एखन नुरेन भाई दारु पिने छथि। हुनक एहि अवस्थामे अपने एकटा दृश्यक कल्पना करु जे नुरेन भाई अपन रिक्सा पर बैसि कऽ जा रहल छथि, मोबाइलक घण्टी बजैत अछि। रिक्सापर बैसल व्यक्ति हड़बड़ा कऽ अपन मोबाइल खोजैत अछि, नहि भेटैत अछि। हमर नुरेन भाई आसानसँ रिक्सा रोकैत छथि आ मोबाइल निकालैत छथि आ बजैत छथि, 'कहुँ श्रीमान ?'

अगल-बगलसँ जाइत अबैत लोक हुनका आश्चर्यजनक रुपसँ देखि रहल अछि। मानि लिअ अपने हुनक रिक्सापर बैसल होइ आ नुरेन भाईकेँ विषयमे की सोचबै ? शायद अपनेकेँ अपन आँखिपर विश्वास नहि हएत। वा शायद अपने हुनका चोर उचक्का बुझि लेब वा रिक्सा बदलि लेब वा यदि अपने हमरा जकाँ खूब सिनेमा देखैत होइ वा जासुसी उपन्यास पढ़ैत होइ तऽ कोनो जासुस वा बड़का घरक सिद्धान्तवादी नायक बुझि सकैत छी।

चक्कर छोड़ू, मानि लिअ हमरासभ लग मोटरसाइकिल नहि होइत आ हमसभ रिक्सापर बैसि कऽ टेलिफोन मिलबैत रहितहुँ तखन ? ओ शायद

हमरा दिस मुड़ि कऽ देखितथि आ जखन हुनका पत्ता चलैत जे ई हमही सभछी जिनका ओ घण्टोसँ नाँच नचा रहल छथि तऽ नुरेन भाई कि करितथि ? कि हुनका हमरा सभपर हँस्सी अबैत वा फेर .... आ फेर हमर एंग्री मैन आर्टिस्ट दिकपाल भाई कि करितथि ?

हम पुछिये लेलहुँ।

'गर्दन मरोरि दैतहुँ ओकर', दिकपाल भाई फुँफकारति जबाब देलन्हि।

आगा हम चुप्पे रहब बुधियारी बुझलहुँ।

घण्टाभरिक बाद हमसभ पुलचौकपर कठपुल्ला जाएबला बाटमे छलहुँ आ एकटा मौलबीसन देखाएबला व्यक्तिसँ नुरेन भाई रिक्साबलाक घर पत्ता पुछि रहल छलहुँ। मौलबी हमरासभकेँ घृणासँ देखलन्हि आ गल्लीकेँ अन्तिममे बनल फुसक घरदिस इशारा कएलन्हि। मौलबीकेँ घृणा जाएज छल। रमजानक महिना चलि रहल छल आ हमसभ एकटा एहन मुसलमानक घर पत्ता पुछि रहल छलहुँ ओ दारु पीबैत अछि।

किछुए क्षणमे दिकपाल भाई ओकर गेट खटखटा रहल छलथि। बहुत देरकबाद एक असमय बुढ़ देखाएबला व्यक्ति गेट खोललन्हि आ अधखुल्ले केबारक बीचसँ माथ निकालि कऽ पुछलन्हि, 'कहुँ मालिक ?'

'नुरेन तोही छीही ?' दिकपाल भाई पूरा केबार खोलैत आदेश स्वरमे बजलथि।

'हँ, कहल जाउ।'

हम ओ शरीरकेँ मिलान फोनपर हुनकासँ भेल बातचितसँ कएलहुँ मुदा गड़बड़ा गेल। हुनक नशा पूरे तरह उतरि गेल छल आ अप्रत्याशित रुपसँ दयनिय लागि रहल रहथि, घरक नामपर एकटा रुम छल, जेकर आधा हिस्सा पाछुक दिस खुल्ले देखा रहल छल। जाहिमे सँ एकटा धुवाँ-धुवाँसन इजोत आबि रहल छल। रुममे एकटा कोणापर पटिया राखल छल। दू-तिनटा मैल गदला राखल छल। एकदिस देबालपर कारी चुट्टीकेँ लम्बा कतार देखा रहल छल आ बाँसक टाटपर ठाम-ठाम मकरा अपन

जाल फैलौने छल। कीरा मकड़ा तऽ गरीबक घरमे ठेकाने बनौने रहति अछि, हम सोचलहुँ।

फुसक घरपर बेकार भेल टायर फेकाएल छल। हम फेरसँ नुरेन दिस देखलहुँ। कपड़ाक नाम पर ओकरा शरीरपर लुंगी छल, पत्ता नहि कहिआकें धोवाएल छल। लम्बा शरीर मुदा हुनक पूरे शरीरपर हड्डी निकलल छल। गलामे एकटा कारी रंगक बद्धी छल। नुरेनक आगा दिकपाल भाई एकदम दिनक आगा, दिनानाथ लागि रहल छलथि।

'जी मालिक', कहैत ओ कनी कतियाएल।

'मोबाइल कतए छौ ?' दिकपाल भाई दाँत पिसैत फुफकार छोड़लन्हि।

'मालिक हमरा तऽ बाटमे भेटल, हम तऽ हल्लो कएलहुँ अपनेकें मुदा अपने पाछु नहि तकलहुँ।'

'कहाँ छौक मोबाइल ? एखने दऽ रहल छी मालिक अपने भीतर तऽ आउ।'

शायद ओ हमरासभकें बैसि कऽ तामस कम करए चाहि रहल होइथ वा शायद अपन पक्ष राखए चाहि रहल होइथ।

'ए हरामी हम तोरा ओहिठाम भोज खाए नहि आएल छियौ, सीधे मोबाइल दऽ दें....', दिकपाल भाई चिचिएला।

'दऽ दैत छी मालिक। गाढ़ि किए पढ़ि रहल छी हम तऽ स्वयं...'

तखने भीतरसँ एकटा बच्चा कुदैत आएल, मोबाइल ओकर हातमे छल। ओ नुरेनसँ पुछलक 'ई की है अब्बु ?'

नुरेन बच्चाकें कोनो जबाब दैत ओहिसँ पहिने दिकपाल भाई मोबाइलपर झपट्टा मारलन्हि। बच्चा अकचका कऽ आ पटियापर टकरा कऽ ओंघरा गेल। मोबाइल दूर कोनो पेटीसँ टकरा गेल। दिकपाल भाई फूर्तिसँ मोबाइल उठौलन्हि आ मोटरसाइकिल दिस बढ़लाह। लगपासक लोक हमरासभकें सन्देहक दृष्टिसँ देखि रहल छल आ नहि जानि कि-कि बात कऽ रहल छल। बच्चा जोड़-जोड़सँ कानि रहल छल। मोटरसाइकिल

स्टार्ट होइतए ओहिसँ पहिने नुरेन रिक्साबलाक आवाज आएल, 'जाउ-जाउ मालिक देखि लेलहुँ अपनेकें। एतबो नहि, हमरा बच्चाक लेल एकटा खेलौनो लेने एबितहुँ। आब तऽ मोबाइल भेटि गेल अछि ने ...आब तऽ कऽ लिअ संसार मुट्ठीमे। हम एहि संसारमे थोरहे छी मालिक। क्रम टुटल.... 'हें बौवा सुल्तान, हें बौवा सुल्तान शायद नुरेनक बच्चाकें कतहुँ चोट लागि गेल छलन्हि जेकरा दिस हुनक ध्यान गेल। 'अहाँसभ शैतान छी....राक्षस जकाँ छी', नुरेन फेरसँ चिचिएलाह मुदा एखनभरि मोटरसाइकिल स्टार्ट भऽ गेल छल। मोटरसाइकिल आगा बढ़ए ओहिसँ पहिने एकटा पत्थर हमरा पयरसँ टकराएल। हम पाछु पलटि कऽ देखलहुँ, एकटा उत्तेजित भीड़ देखाइ पड़ल। नुरेन एखनो चिचिया रहल छल। किछुए क्षणमे हुनक आवाज सुनाइ देब बन्द भऽ गेल। रेलवे स्टेशन लग पहुँच कऽ दिकपाल भाई मोटरसाइकिल रोकलन्हि आ मोबाइल जाँचए लगलथि, मोबाइलक उपरका भाग थुराएल छल आ ओ काज नहि कऽ रहल छल। दिकपाल भाईकें आँखिमे एकटा हिंसक चमक आएल, ओ जेबमेसँ सिगरेटक प्याकेट निकाललन्हि आ एकटा सिगरेट जरा कऽ तीन-चारि कस लेलाक बाद सिगरेटकें जुत्तासँ पिच देलन्हि।

'चलु प्रहरी चौकी चलैत छी', दिकपाल भाई कहलन्हि।

'आब चौकी जा कऽ की करब ? हबल्दार साहबकें व्यवहार बिसरि गेल छी अपने ?

नहि, स्मरण अछि एहिद्वारे कहि रहल छी।'

'एहि हरामजादा नुरेनकें तऽ हम....हम एकरा नामपर किटानी जाहिरी देब।'

'अपने कोन घमण्डमे छी भाईजी, चौकीमे अपनेकें दालि नहि गलएबला अछि। अपनेकें मोबाइल हेरा गेल तऽ ओ इमान्दारीसँ घूरा देलक। ई खराब भऽ गेल तऽ ई ओकर नादानी मात्र छल। फेर चौकीमे सई आ हबल्दारक व्यवहार देखने नहि छियै की ? सभ ओहने हएत।'

'दुनूकेँ एहन नहि तेहन, हम तऽ सालाकेँ देखलहुँ मुदा अहाँ किछु नहि देखलहुँ ।'

'कि नहि देखलहुँ ?'

'सई साहबकेँ जनउ, हबल्दार ठोप कएने छल आ ओकरा कक्षमे भगवानक फोटोसभ छल ।

हम पसिना-पसिना भऽ गेलहुँ, फेर किछु नहि हम पुछलहुँ ।

'शहरकेँ एसपी हमरासँग बैसि कऽ दारु पीबैत अछि, हम सभकेँ परेशान करबै आ ओ मुसलमान नुरेनकेँ तऽ हम....।'

आगाकेँ घटनामे हमर भूमिका कि हएत एहिकेँ लऽ कऽ हम परेशान भऽ गेल छी । कोनो निकास फुरा नहि रहल अछि । ईम्हर मोटरसाईकिल पर बैसबाक दिकपाल भाईकेँ आदेश अनुसार बैसि रहलहुँ ।

◆◆



मैथिली कथा जगतमे कथाकार सुजीत कुमार झा एकटा सशक्त हस्ताक्षर छथि। हिनक पाँच गोट कथा संग्रह पूर्वहि प्रकाशित भऽ चुकल अछि। सुजीत जीक विशेषता रहल ई जाहि काजक संकल्प लैत छथि, ओकरा शिखरधरि पहुँचेलाक वादे चयन लैत छथि। हिनक 'चिड़ै', 'जिद्दी', 'कोइली घूरि आउ', 'खजुरीवाली' अपन विशेष स्थान स्थापित कऽ चुकल अछि। हिनक पोथि 'कोइली घूरि आउ' केर लोकप्रियता प्रमाणित अछि जे कतेको विद्यालय एकरा अपना पाठ्यक्रममे रखने अछि। सुजीतक 'रिपोर्टर डायरी' मिडियाकर्मीक लेल अएना अछि।

त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ मैथिली, समाजशास्त्र आ राजनीति शास्त्रमे स्नातकोत्तर रहल सुजीत रेडियो मिथिला सम्मान, एभिन्यूज इमान्दारिता सम्मान, जनकपुर टुडे दैनिक प्रतिभा पुरस्कार, मिथिला नाट्यकला परिषदक मिथिला सम्मान, सारा बचत सम्मान, सरस्वती राजनारायण मैथिली सम्मान, सिद्धार्थ शिशु सदनक साहित्य सम्मान, वृहतर जनकपुर क्षेत्र विकास परिषदक सम्मान सहित दर्जनो पुरस्कारसँ सम्मानित भेल छथि।

एभिन्यूज टेलिभिजनसँ आवद्ध रहल सुजीत राजधानी दैनिकमे सेहो काज कऽ रहल छथि। जनकपुरसँ मैथिली आ नेपाली भाषामे प्रकाशित दूधमती साप्ताहिक पत्रिकाक प्रकाशक सम्पादक रहल सुजीत दू दशकसँ पत्रकारितासँ जुडल छथि।

प्रस्तुत कथा संग्रह वुलवुलमे १३ गोट कथा संग्रहित अछि। हिनक कथा लिखवाक शैली पाठकके अन्तधरि जिज्ञासा बनौने रहव विशेषता थिक। हिनक कथा वेरोजगारी, प्रेम, गरिवी आ रोजगारउन्मुख विषय पर आधारित अछि। हिनक कथाकेँ पाठक लोकनि लोकप्रियता दऽ चुकल छथि आ भविष्योमे दैत रहता।

तखन-

माता महिमा जगतमे, पसरल वायु समान
हिनक चरण जे जन गहल, जीवन कएल महान ॥

प्रा.चन्द्रमोहन झा "पड़वा"
महराज महेश ठाकुर कलेज, दरभंगा


9 789937 012997